दशकर्म-पद्धति

हिन्दीटीकासहित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई - ४.

श्रीमहामत्तकसामन्ताधिपति-रामदत्त-विरचिता

दशकर्मपद्धतिः

श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीय-
सुखानन्दसूरिसूनुपण्डित–कन्हैयालालमिश्रकृत–

हिन्दीटीकासहिता

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई–४

संस्करण : मई २०१०, सम्वत् २०६७

मूल्य : ६० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

प्रस्तावना

प्रिय पाठकवृन्द !

हमारा यह प्यारा भारतवर्ष आज तक सम्पूर्ण देशों की अपेक्षा सब ही बातों में चढ़ा बढ़ा हुआ रहा था। यहां के दानवीर कर्ण, महाराज प्रातःस्मरणीय हरिश्चन्द्र, युद्धवीर अर्जुन, धर्मवीर महाराज युधिष्ठिर, महर्षि जैमिनि, मुनिवर भगवान् कृष्णद्वैपायन, श्रीवेदव्यासजी, कपिल तथा कणाद इत्यादि इसी भारत माता के लाल थे कि, जिनके चरित्र तथा ग्रन्थोंको अवलोकन करने से मनुष्य संसारसागर से तर जाते हैं। इसका कारण एकमात्र संस्कार है। 'संस्कार' शब्द का अर्थ सुधार है। जिस प्रकार हीरा पाषाण की आकर (खानि) से निकलकर शान के संस्कार ही से मूल्यवान् होता है, इसी प्रकार मनुष्य संस्कार से ही द्विजाति होता है। जैसा कि–मनुजी महाराज ने कहा है–'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते' अर्थात् जन्म से मनुष्य शूद्र होता है किन्तु संस्कार से द्विज कहलाता है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कार होते हैं।

यथा–गर्भाधान १, पुंसवन २, सीमन्तोन्नयन ३, जातकर्म ४, नामकर्म ५, निष्क्रमण ६, अन्नप्राशन ७, चूडाकर्म ८, कर्णवेध ९, उपनयन १०, वेदारंभ ११, समावर्त्तन १२, विवाह १३, चतुर्थीकर्म १४, मृतक १५, षोडश (दशाह) १६।

अब सम द्विजातिमात्र को चाहिये कि,इन संस्कारों को करके ऐहिक और पारमार्थिक फल प्राप्त करें। कारण कि, इन्हीं वैदिक संस्कारों के करने पर द्विज ब्राह्मण और विप्र पदवियों को प्राप्त किया जाता है।

अनाचाररहित व वैदिक कर्म करने से और ब्राह्मणी व क्षत्रियाणी तथा वैश्या की योनि में जन्मा हुआ ही ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य होता है। अतएव सब किसी को अत्यंत भक्तिसहित वेदोक्त संस्कार अवश्य करना चाहिये और इसीलिये सब ऋषि मुनि ब्राह्मण व विद्वान् पुरुष तथा स्त्री आज तक इन संस्कारों को परम श्रद्धा से मानते और करते चले आये हैं।

मेरी बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि, कोई संस्कार विषयकी उत्तम पुस्तक रची जाय, जिससे मनुष्य अपने वेदोक्त संस्कार करके, उत्तम फल के भागी बनें–इसी बीच में विद्याप्रचारनिरत अखण्डप्रतापशाली श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्ष मुंबईनिवासी श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदय की आज्ञा मिली कि, आप 'दशकर्मपद्धति' भाषानुवाद कर दीजिये, हम छापेंगे। उक्त महोदय की आज्ञा पाते ही मैंने शीघ्रता से इसका भाषान्तर करके सर्वसत्व सहित श्रीमान् सेठजी को समर्पण कर दिया है।

आशा है कि यदि इस पुस्तक के द्वारा आपको कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा।

–पं. कन्हैयालाल मिश्र

समर्पणपत्रम्

श्रीमान् !

अखण्ड प्रतापशाली दयादाक्षिण्यादि अनेक विशेषणविशिष्ट गौ ब्राह्मण प्रतिपालक परमोदारप्रकृति क्षत्रियवंशावतंस १०८ श्रीमन्महाराजा उदयराजसिंहजू देवबहादुर काशीपुर स्टेट जिला नैनीताल करकमलेषु।

मान्य महोदय! हिन्दूधर्म ग्रन्थों में जैसी रुचि और श्रद्धा आपकी है, वैसी अन्य किसी में दिखाई नहीं देती, आपने अपने स्टेट में शतशः लोकोपकारी कार्य करके अपनी प्रजा और ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से विशेष सन्मान प्राप्त किया है। गौ और ब्राह्मणों की रक्षा करने में आप निरन्तर यत्नवान् रहते हैं। आपके उपरोक्त गुणों से मोहित होकर मैं भी अपनी इस लघुकाय पुस्तक 'दशकर्मपद्धति' को श्रीमान् के कोमल करपल्लव में अत्यन्त भक्ति तथा आदर के सहित समर्पण करता हूं। आशा है श्रीमान् इस भेंट को सुदामा के तन्दुल के समान उदारतापूर्वक स्वीकार करके मुझे अनुगृहीत करेंगे। इति।

विनीत निवेदक–

पण्डित कन्हैयालाल मिश्र,

मोहल्ला दीनदारपुरा,

मुरादाबाद (यू.पी.)

श्रीगणेशाय नमः

अथ

दशकर्मपद्धतिः

हिन्दीटीकासहिता

तत्रादौ गर्भाधानम्

तत्र ऋतुस्नाता वधूः चतुर्थदिने प्राणस्तूष्णीमादित्यमुपतिष्टेत। ततस्तद्दिने मातृपूजाभ्युदयिके कृत्वा षोडशरात्रादर्वाक् शुभरात्रौ दक्षिणकरेण पतिर्बध्वा उपस्थ-

---

मङ्गलाचरण

अखण्डमैश्वर्ययुतं परेशं विघ्नाटवीध्वंसनमेकमग्निम्।
गजाननं तं मनसा प्रणम्य करोमि भाषां दशकर्मपद्धतेः॥

यतोऽभूज्जन्मादिः सततमपरोक्षस्य जगतः।
परोक्षत्वं तस्मिन् गतवति च कस्तत्र विलयः।
कृतातः सा भूम्नो बुधजनविकासाय विदुषा
कन्हैयालालेन श्रियमियमपारं दिशतु वः॥

दोहा

विघ्न विनाशन, गजवदन, नाशनहार कलेश।
कृपा कीजिये दास पहँ, दाता सिद्धि गणेश॥
कर्मदेव पद वन्दि पुनि, गुरुको शीश नवाय।
लिखत पद्धती कर्मकी, कीजिये आय सहाय॥

अब गर्भाधानसंस्कार लिखा जाता है। तहां चौथे दिन ऋतुस्नान करके स्त्री प्रातःकाल मौनव्रतधारण पूर्वक सूर्य के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ी हो जाय। फिर उसी दिन षोडश मातृकाओंकी पूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके उस स्त्रीका पति सोलह दिनसे पहले किसी शुभ रात्रिमें दाहिने हाथसे अपनी

मभिस्पृश्य जपति-ॐ पूषा भग ँ सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्। विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पि ँ शतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥ इति मन्त्रेण। अथ प्राङ्मुख उपविष्ट उदङ्मुखो वा एताम-भिमन्त्रयेदनेन—ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥ इति मन्त्रेण। ततः ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणाऽऽवृत उल्बं जहाति जन्मना ॥ इति मन्त्रेण रेतःस्रावणम्। अथ तस्या हृदय-मालभेत-ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः

स्त्री के योनिप्रदेश को स्पर्श करे और (उस काल) इस आगे लिखे मन्त्र को जपे। मन्त्र यथा-ॐ पूषा भग ँ सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्। विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पि ँ शतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ इसके उपरांत पूर्व अथवा उत्तर को मुख किये हुए पति इस अपनी पत्नी को निम्न लिखित मंत्र से अभिमंत्रित करे। मंत्र यथा-ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा॥ फिर आगे लिखे मंत्र से वीर्य दान करना चाहिये। ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिंद्रियम्। गर्भोजरायुणा-ऽऽवृत्त उल्बं जहाति जन्मना ॥ अनंतर उसके हृदय में हाथ रखकर यह आगे लिखा हुआ मंत्र उच्चारण करना चाहिये। मंत्र यथा-ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम

शतँ शृणुयाम शरदः शतम् ।। इति मन्त्रेण । ततः स्वस्थो हृष्टमनाः हृद्देश प्रसन्नामनातुरां कामयमानामभग्न-शय्यायां प्रदोषादूर्ध्वं स्त्रियमभिगच्छेत् । सा यदि गर्भं न दधाति तदा पतिः कृतोपवासः पुष्यनक्षत्रे श्वेतकण्टका-रिकामूलमुत्पाटयोदकेन पिष्ट्वा वधूदक्षिणनासापुटे तद्रसं दद्यात् अनेनैव मन्त्रेण-ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती । अस्या अहंबृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभम् ।। इति ।। गर्भाधानम् ।।१।।

शरदः शतम्।। अनंतर स्वस्थ अथ च प्रसन्न मन होता हुआ पति प्रसन्न हृदयवाली, उद्वेगरहित, पति की इच्छा करती हुई स्त्री को उत्तम शय्या पर दो घड़ी रात जाने के पीछे वीर्यदान करे। यदि कदाचित् वह स्त्री गर्भ धारण नहीं करे तो उसका पति उपवासी होकर पुष्यनक्षत्र के दिन सफेद रंगवाली कटेरी की जड़ को उखाड़ लावे और उसको जल के साथ पीसकर रस स्त्री की नासिका के दाहिने स्वर से सुँघावे और सुँघाने के समय इस नीचे लिखे मंत्र का पाठ करे। ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती। अस्या अहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभम्।। इति।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखा-

नन्दसूनु-पण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दीटीकाया

गर्भाधानसंस्कारः समाप्तः।।१।।

०

२

अथ पुंसवनम् २

तच्च गर्भमासापेक्षया द्वितीयतृतीययोरन्यतरस्मिन्क-
रणीयम् । पुष्यपुनर्वसुमृगशिरोहस्तमूलश्रवणान्यतमपु-
न्नामनक्षत्रयुतोभयचन्द्रतारानुकूलदिवसमवगत्य ततःपूर्व-
दिने वधूमुपवासं कारयित्वा अग्रिमदिने तस्याः स्नाताया
अहतवासोयुगपरिधानानन्तरं शुचिः स्नातः कृताचमनो
मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा वटप्ररोहंवटशुङ्गांश्च आचा
रात्कुशकंटकमपि शिशिरेण जलेनपिष्ट्वा वधूदक्षिणनासा
पुटे तद्रसं दद्यात् । ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य
जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां

अब पुंसवनसंस्कार कहा जाता है। गर्भ के महीने से दूसरे या तीसरे महीने में पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त मूल और श्रवण इन नक्षत्रों में से कोई पुँल्लिंग नक्षत्र जिस दिन हो तथा चंद्र और तारा भी जिस दिन अनुकूल हो ऐसे दिन के मिल जाने पर (पति) उससे एक दिन पहले स्त्री को उपवास (व्रत)करावे।दूसरे दिन स्त्री स्नान करके दो नवीनवस्त्र धारण करे।फिर उसका पति पवित्रतापूर्वक स्नान करके आसन पर बैठ आचमन करे। तत्पश्चात् षोडशमातृकाओं का पूजन और नान्दी मुख श्राद्ध करके बड़का एक नूतन (कोमल) पत्ता कि, जिसकी डंडी में दोनों तरफ फल लग रहे हों तोड़कर लावे तथा कुशकी जड़ लावे और फिर इनदोनों पदार्थोंको शीतलजल द्वारा पीस और उनका रस निकालकर स्त्रीकी नासिकाके दाहिने स्वर से सुँघावे और उसकाल आगे लिखे दोनों मंत्रोंको उच्चारण करना चाहिये। मंत्र यथा-ॐ हिरण्यगर्भःसमवर्तताग्रे भूतस्य जात

कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।१।। ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे । तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वामजानमग्रे ।इति मन्त्राभ्याम् ।। इति पुंसवनम् ।।२।।

अथ सीमन्तोन्नयनम् ३

तत्र गर्भमासापेक्षया षष्ठेऽष्टमे वा पुन्नामनक्षत्रयुते चन्द्रतारानुकूलविहितदिने मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा बहिः शालायां कुशकण्डिकां कुर्यात् । तत्र क्रमः-कुशत्रयेण हस्तपरिमितचतुरस्रभूमिं परिसमूह्य कुशानैशान्यां निक्षिप्य गोमयोदकेननोपलिप्य स्रुवमूलेन स्फ्येन वोत्तरत

पतिरेक आसीत्।स दाधारपृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषा विधेम ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्ताग्रे ।तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि–स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु-पडितकन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दीटीकायां पुसवनसंस्कारः समाप्तः।।२।।

अब सीमन्तोन्नयनसंस्कार कहा जाता है। गर्भ के महीने से छठे या आठवें महीने में (पुरुष) पूर्वलिखित पुंनक्षत्रयुक्त और चन्द्र तथा तारा के अनुकूलवाले दिन में पहले षोडशमातृकाओं की पूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके बाहर शाला (मण्डप) में आकर कुशकण्डिका करे। उसका क्रम यथा-एक हाथ की बराबर लम्बी चौड़ी (चौकोन) वेदी बनाकर उसको तीन

स्त्रिरुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्
वारिणा तं देशमभिषिच्य कांस्यपात्रेणाग्निमादाय तत्प्र
त्यङ्गमुखं निदध्यात् ।ततो ब्राह्मणवरणम्-ॐ अद्यकर्त्तव्य
सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म
कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनता
म्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । ॐ वृतोऽस्मीति
प्रतिवचनम् । ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति होत्राऽभिहिते
ॐ करवाणीति प्रतिवचनानन्तरमग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासन

कुशाओंसे बुहारे फिर उन तीनों कुशाओंको ईशानकोन में फेंक
देवे और गोबर तथा जल मिलाकर वेदीको छिड़के फिर स्रुवेके
पिछले भागद्वारा स्फ्य यज्ञपात्रसे प्रादेशमात्र तीन लम्बी रेखा
खैंचे और उन रेखाओं में से अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो
अँगुलियोंसे रेखा खैचनेके क्रमसे मट्टी लेकर ईशानकोनमें फेंक
देवे फिर वेदीके ऊपर जल छिड़काना चाहिये। अनंतर काँसीके
पात्रमें अग्निको लेकर उसको पश्चिमाभिमुख वा उत्तराभिमुख
स्थापन करे फिर ब्रह्मा (ब्राह्मण) का वरण करे और पुष्प
चंदन, पानादि वरणकी सामग्री हाथमें लेकर नीचे लिखे
संस्कृत वाक्यका पाठ करके उस ब्रह्माको प्रदान करे"ॐ अद्य
कर्त्तव्यसीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्तु
ममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभि
र्ब्रह्मत्वेन 'त्वामहं वृणे' तब ब्रह्मा उस सामग्री को अपने हाथ में
लेकर 'वृतोऽस्मि' उच्चारण करे फिर यजमान 'यथाविहि
कर्म कुरु' ऐसा कहे और इसके उत्तरमें ब्रह्मा 'ॐ करवाणि कहे
इसके पश्चात् वेदीसे दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछावे औ

दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्यास्मिन्सीमन्तोन्नयन-होमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते अग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा जलेनापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ॥ ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशा-नान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छे-दनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भकुशपत्रद्वयं

उसके ऊपर पूर्वकी और अग्रभागवाले तीन कुशा रखकर यजमानको आगे लिखी संस्कृतका पाठ करना चाहिये। यथा 'अस्मिन् सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' अर्थात् इस सीमन्तोन्नयनहोमकर्ममें आप मेरे ब्रह्मा होवें। इस प्रकार कहे। तब ब्रह्मा के 'ॐ भवानि' ऐसा कहनेपर अग्निकी परिक्रमा कराय यजमान उस पूर्वरचित आसनपर ब्रह्माको बैठा देवे। फिर यजमान प्रणीतापात्र को आगे रखकर जलसे भरदेवे और उसको कुशाओं से ढककर तथा ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि के उत्तर की तरफ कुशाओं के ऊपर रख देवे। इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये। उसका क्रम यह है-मुट्ठीभर अथवा एक सौ कुश ग्रहण करके उसके चार भाग करे। पहला भाग अग्निकोन से ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके स्थान से वेदी तक, तीसरा भाग नैर्ऋत्य से वायुकोनतक और चौथा भाग वेदीसे प्रणीतापात्रतक बिछा देना चाहिये! तदनंतर अग्निके उत्तरभागमें पश्चिम दिशाकी तरफ पवित्रछेदन करनेके निमित्त

प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशा उपयमनकुशाः प्रादेशमितपालाशसमिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं तिलमुद्गमिश्रास्तंडुलाः पूर्णपात्रम् एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयानि, तदुत्तरतः वीणागाथिनौ, प्रादेशमात्रसाग्राश्वत्थशङ्कुः त्रिश्वेतशल्लकीकण्टकं पीतसूत्रं पूर्णस्तर्कुः दर्भपिंजूलिकात्रयमुदुंबरयुग्मफलसुवर्णघटितदेवकर्करादियुक्तसूत्रदोरकपुष्पबिल्वादिफलयुतवाराष्टतयादि अन्यद्यथाचार-

---

तीन कुशा रखे और पवित्र बनानेके लिये अनंतर्गर्भ अर्थात् बीचका पत्र निकालकर दो कुश पत्र रखे फिर प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पांच संमार्जनकुशा और तीनसे तेरह तक उपयमनकुशा तथा प्रादेशमात्र तीन समिधा, स्रुवा, घृत, यजमान की दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल और तिल मूंगसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब वस्तुओंको पवित्र छेदन कुशाओं के आगे २ क्रम से रख देवे। उनके आगे वीणाके बजानेवाले दो गायकों को बैठा देवे। वहां प्रादेशमात्र अग्रभागसहित पीपलकाष्ठकी कील तथा सेई (जंगलका सूअर) का कांटा और पीला सूत लपेटकर (एक) तकुआ तथा कुशाओं की तीन पिञ्जूलिका[1] बनाकर स्थापन करे। फिर गूलर के नवीन पत्ते की डाली कि जिसके दोनों तरफ फल लगे हों और सुवर्ण के तारयुक्त सूत्र अर्थात् डोरा पुष्प तथा बिल्वफल सहित अन्यान्य

---

१ तेरह कुशाओं को कलावे से लपेटने पर एक पिंजूलिका होती है। ऐसी तीन पिंजूलिका का स्थापन करनी चाहिये।

परिप्राप्तद्रव्यमासादनीयम् । ततः पवित्रच्छेदनार्थकुशैः प्रादेशमितपवित्रे छित्त्वा सपवित्रपाणिना प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे कृत्वा अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिङ्गनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितद्रव्यसेचनं ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानं ततःआज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । चरौ तु तिलतंडुलमुद्गानां प्रणीतोदकेन त्रिः प्रक्षालनं तत्र किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्रक्षेपः । ततः स्वयं

मांगलिक पदार्थ जो कि, मङ्गलकार्यों में होते हैं स्थापन करे। फिर पवित्रच्छेदनार्थ जो पहले तीन कुशा रखी गई हैं उनसे पवित्र बनाने के निमित्त जो अनंतर्गर्भ कुशपत्र रखे गये हैं तिनके अग्रभाग को प्रादेशप्रमाण छेदन करे और फिर उन पवित्रों को हाथ में लेकर प्रणीतापात्र के जल को प्रोक्षणी पात्र में तीन वार सेचन करे। फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्र के अग्रभाग को आगे करके पकड़े और उन पवित्रों से तीन बार प्रणीता पात्र के जल को चलावे पीछे प्रणीतापात्र के जल में उन्हीं पवित्रों को डुबोकर प्रोक्षणी पात्र में सेचन करे, तत्पश्चात् प्रोक्षणी के जल से उन्हीं पवित्रों द्वारा पूर्व में स्थापन करी हुई सब वस्तुओं को प्रोक्षण (सेचन) करे। फिर अग्नि और प्रणीतापात्रके बीचमें प्रोक्षणी पात्रको रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डाले और चरु (साकल्य)बनानेके निमित्त तिल चावल तथा मूंग मिलावे और फिर उनको प्रणीतापात्रके जलसे तीन बार धोवे, पीछे किसी एक पात्रमें जल भरकर उसमें वह तिल, चावल तथा

चरुं गृहीत्वा ब्रह्मणा चाज्यं ग्राहयित्वा वह्नेरुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं युगपन्निदध्यात् । ततः सिद्धे चरौ ज्वलत्तृणं प्रदक्षिणंभ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। ततःस्रुवप्रतपनं त्रिः । ततः संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात् । ततः आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् ।तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं।अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्।

मूंग डाल देवे। तिस पीछे यजमान उस चरुपात्रको हाथमें लेकर और ब्रह्मा से घृत को ग्रहण कराकर वेदीस्थित अग्निके उत्तरकी ओर चरुको रखे और ब्रह्मा के हस्तस्थित घृतको दक्षिणकी ओर स्थापन करा देवे। फिर जिस समय चरु सिद्ध हो जाय अर्थात् पक जाय तब एक जलते तिनके को ले चरुपात्रके चारों तरफ घूमाकर उसको अग्निमें डाल देवे। तदनन्तर स्रुवेको अग्नि में तीन बार तपाना चाहिये। फिर जो पहले संमार्जननामक पांच कुशा स्थापन करी गई हैं उनके अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और पिछले भागद्वारा स्रुवेके बाहर साफ करे। फिर प्रणीतापात्रके जलसे स्रुवेको प्रोक्षण करे। अर्थात् उसपर जल छिड़के और फिर तीन बार अग्निमें तपाकर उसको (वेदीके) दक्षिणकी ओर रख देवे। अनंतर घृतको अग्निमें से उठावे और चरुके पूर्वकी ओर लाकर फिर उसको अपने आगे रख देवे। फिर घृतके पश्चिमकी ओरको चरु लाकर घृतको उत्तर दिशामें स्थापन कर देवे। पश्चात् घृतको पूर्व निर्मित पवित्रों से कुछेक ऊँचा उछाले और देखे। यदि उसमें कुछ अपद्रव्य अर्थात् मक्खी

ततः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम् ।तत उत्थायोपयमनकुशाना-
दाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ क्षिपेत् समिधो
घृताक्ता:अथोपविश्य सपवित्रप्रोक्षणीजलेनाग्निं प्रदक्षिण-
क्रमेण पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रेधृत्वा ब्रह्मणाऽन्वारब्धः
पातितदक्षिणजानुर्जुहुयात् । तत आहुतिचतुष्टये प्रत्या-
हुत्यनन्तरं हुतशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ततः
समिद्धतमेऽग्नौ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०।इति
मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ ॥
ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं

इत्यादि पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे। फिर पूर्ववत् प्रोक्षणीपात्रके जलको उछाले। पश्चात् यजमान खड़ा होकर बाँये हाथमें उपयमन नामवाली तीनसे तेरहतक जो कुशा पहिले कही गई हैं उनको ग्रहणपूर्वक मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ पूर्वस्थापित तीन समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा उच्चारण पूर्वक चुपचाप अग्निमें डाल देवे। इसके पीछे यजमान आसनमें बैठकर पवित्रों सहित प्रोक्षणीके जलको हाथ में लेकर अग्निके चारों ओर छिड़के और फिर उन पवित्रों को प्रणीतापात्र में रख देवे पश्चात् यजमान ब्रह्मा से मिलकर और दाहिने घुटुए को नवायकर प्रज्वलित अग्नि में हवन करे। यहाँ घृत की चार आहुति दी जाती हैं। उनमें एक एक आहुति देनेके अनंतर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणी पात्रमें डालते जाना चाहिये। यथा-ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०।

सोमाय० । इत्याज्यभागौ ॥ ततोऽन्वारब्धः स्थालीपाकेन होमः-ॐ प्रजापतये स्वहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ततोऽन्वारब्धो जुहुयात्-तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितशेषस्य प्रोक्षण्यां प्रक्षेपः । तत्रैवाज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय । एता महाव्याहृतयः ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण ँ

इत्याज्यभागौ। फिर घृत मिलाकर स्थाली पाक का अर्थात् पहले जो चरु बनाया गया है उसका होम करे। यहाँ दो आहुति तो ब्रह्मा से युक्त होकर दी जाती हैं और शेष ब्रह्मा से पृथक् होकर दी जाती हैं। इन आहुतियों में भी शेष रहा हुआ घृतादि पूर्ववत् प्रोक्षणीपात्र में डालते जाना चाहिये। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव

ररराणोब्वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नी-वरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमि-त्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाश वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु-र्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् । ततः आचम्य ॐ अद्य सीमन्तो-

---

यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्व-मित्त्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ये शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुविश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति प्राजापत्यम् । फिर होमकी समाप्ति होने पर यजमान संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रसे जल लेकर यत्किंचित् पान

न्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । ततः ॐ सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य । ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा व्वातेधाः स्वाहा इति मन्त्रेण बर्हिर्होमः ।

करे। फिर आचमनपूर्वक पूर्णपात्रका संकल्प करके ब्रह्माको (दक्षिणा) प्रदान कर देवे। संकल्प यथा 'ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्माणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' तब ब्रह्मा 'स्वस्ति' इस प्रकार कहकर उस पूर्ण पात्र को ग्रहण कर लेवे। फिर पवित्र की ब्रह्म ग्रंथि को खोल देना चाहिये। इसके पीछे आगे लिखे मंत्र द्वारा प्रणीता पात्र के जल से यजमान अपने शिर में मार्जन करे। मंत्र यथा-'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इसके उपरान्त 'ॐ द्रुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' इस मंत्र से प्रणीता पात्र को ईशानकोन में उलटाकर देवे। तदनंतर पहले बिछाये हुए कुशाओं को क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रम से बिछाये थे उसी क्रम से उठाकर घृतमें भिगोवे और 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत

ततः पश्चादग्नेर्वधूमहतवाससी परिधाप्य मृद्वासने उपवेशयेत्। ततस्त्रिश्वेतशल्लकीकंटकाश्वत्थशंकुपीततन्तुतर्कुदर्भपिञ्जूलीत्रितयोदुम्बरफलयुग्मा न्वितप्रादेशमित शाखाभिर्वर्तुलीकृत्य सीमन्तमूर्द्धनि विनयति ॐ भूर्भुवः स्वः विनयामि इति मन्त्रेण सकृत् । ॐ भूर्विनयामि । ॐ भुवर्विनयामि । ॐ स्वर्विनयामि इति मन्त्रेण वारत्रयम्। ततः उदुम्बरफलयुगलान्वितशल्लकीकण्टकादिपञ्चकंवधूसीमन्तदक्षिणतो वेणीकृत्वा पतिर्बध्नाति-ॐ अयमूर्ज्जाव्वतो वृक्ष उर्ज्जीव फलिनी भव इति मन्त्रेण । तत उदुम्बरफलादिसमन्वितसूत्रदोरकं वधूग्रीवायाम् अनेनैव क्रमेण वा आचाराद्बध्नीयात् । ततो बिल्वादिसमन्वितं

इमं देव यज्ञँ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा।।' इस मंत्रद्वारा अग्निमें स्वाहा उच्चारण करके डाल देवे। पश्चात् नवीन वस्त्र धारण करी हुई गर्भवती स्त्रीको अग्निके पश्चिमकी तरफ कोमल आसनपर बैठाले और फिर सेई (वनसूकर) का कांटा, पीपल की कीली, पीले डोरे से लिपटा हुआ तकुआ तथा तीन कुशाओं की पिंजूलिका और गूलरकी दो फलयुक्त डाली इन पांचों पदार्थों से पति अपनी स्त्रीके बालोंको आगे लिखे 'ॐ भूर्भुवः स्वः विनयामि' इस मंत्रसे एक वार 'ॐ भूर्विनयामि' 'ॐ भुवर्विनयामि' 'ॐ स्वर्विनियामि' इन मंत्रों से तीन वार इकट्ठा करे अनंतर उन्हीं पांचों पदार्थों द्वारा माँग निकालने की रीति से आगे लिखे 'ॐ अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव' इस मंत्र से गूलर के फलादिसहित डोरेको परंपरानुसार वधूके गले या चोटीमें बाँध देवे और फिर सुवर्णरचित तागें

वाराष्टतयेन स्नपनम् । ततः फलपुष्पादिकं नूतनवस्त्रेण बद्ध्वा प्रतीक्ष्य धर्त्तव्यं प्रतिस्नपने स्वामिपठनीयो मन्त्र ॐ अयमूर्जोतिराजान्^१ संगायेतामितिप्रैषानन्तरं-सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः । अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ श्रीअमुकदेवी इति गाथां वीणागाथिनौ गाये-तामन्यो वा वीरतरः । ततो या ग्रामसन्निहिता नदी तस्या नाम गृह्णीयात् ।तत उत्थाय वधूदक्षिणकरेण स्रुव-स्पृष्टेन फलपुष्पसमन्वितघृतेन ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति

अथवा पीले तागेसे वधूकी वेणी बाँध देनी चाहिये। फिर जो बिल्वफलादि मांगलिक पदार्थ कहे हैं उनको जलमें डालकर आठ वार (लोटे अथवा मोलुएसे) पत्नीको स्नान करावे। यहाँ फल पुष्पादि नये वस्त्रमें बाँधे और उनको देखकर अपने निकट रख लेवे प्रत्येक वार स्नानके समय पति आगे लिखे मंत्रको पढ़े और उसी समय वीणागायकों को 'आप किसी राजा अथवा वीरपुरुषके यशको गाओ' ऐसी आज्ञा देवे। स्नानका मंत्र 'अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव' (वीणा) गायकों के गानेका मंत्र) 'सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः । अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरेतुभ्यमसौ श्री^१अमुकदेवी' फिर जिस नगर या ग्राममें यजमानका घर हो उसके समीप बहनेवाली नदीका नाम पत्नीसे उच्चारण करावे फिर पति अपनी स्त्रीके साथ खड़ा हो जाय और पत्नीके दाहिने हाथसे स्रुवेको स्पर्श कराय उस स्रुवे में घृत, फल, पुष्प स्थानपूर्वक 'ॐ मूर्द्धानं दिवो

---

१ अमुकदेवी के स्थान में स्त्री का नाम लेवे।

पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँ्सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्तः देवाः स्वाहा ।। इति मन्त्रेण ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणाव्वहाइषमूर्ज्ज ँ्शतक्रतो स्वाहा ।। इत्यनेन च पूर्णाहुतिं दत्त्वोपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणकरानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ।ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । इति त्र्यायुषं कुर्य्यात् । अनेनैव क्रमेण वध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्य्यात् । तत्र तत्ते त्र्यायुषं इति विशेषः । ततो ब्राह्मणभोजनम् ।। इति सीमंतोन्नयनम् ।।३।।

अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँ्सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।। ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणाव्वहा इषमूर्ज- ँ्शतक्रतो स्वाहा' इन मंत्रों से पूर्णा हुति करावे। फिर बैठकर स्रुवे में कुंड (वेदी) की भस्म लगाय दाहिने हाथकी अनामिका अंगुली से स्रुवे में लगी हुई भस्म ग्रहणकर 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह कहकर माथे में, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' बोलकर गले में, 'ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषं' कहकर दक्षिण बाहुमूल में और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके उसको हृदय में लगाना चाहिये। इसी प्रकार फिर अपनी पत्नी के भी त्र्यायुष करे अर्थात् भस्म लगावे। किंतु पत्नी के भस्म लगाते समय तन्नो अस्तुके स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे और

अथ जातकर्म ।।४।।

तत्र प्रथमं शूलवतीमद्भिः परिषिञ्चति-ॐ एजतु दशमस्यो गर्भो जरायुणा सह । यथाऽयं वायुरेजति यथा समुद्र एजति । एवायं दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह ॥ इति मन्त्रेण । ततो वधूसमीपे पतिर्ज्जपति-ॐ अवैतु पृश्नि शेवल ँ्शुने जराय्वत्तवे । नैव मा ँ्सेन पीवरीं न कस्मिंश्चनायतनमव जरायुपद्यताम् ।। इति । ततः पुत्रेण जाते नाभिवर्धनीयात् प्राक्कृताभ्युदयिकः कुमारंदक्षिण-करस्यानामिकया स्वर्णान्तर्हितया मधुघृते एकीकृत्य

फिर पीछे ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्र-
सुखानन्दसूरिसून-पंडितकन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दी-
टीकायां सीमन्तोन्नयनसंस्कारः समाप्तः ।।३।।

अब जातकर्म संस्कार कहा जाता है। जिस समय प्रसव होनेसे पूर्व स्त्रीको प्रसवकी प्रथम पीड़ा उपस्थित हो तो उसका पति आगे लिखे 'ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह। यथा-ऽयं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायं दशमास्यो अस्रज्ज-रायुणा सह' इस मंत्रसे जलसे पत्नी पर अभिषेक कर। इस मंत्र को पत्नीके समीप जपे-'ॐ अवैतु पृश्नि शेवल ँ्शुने जराय्वत्तवे। नैव मा ँ्सेन पीवरीं न कस्मिंश्चनायतनमव जरायु पद्यताम्' तत्पश्चात् पुत्रके उत्पन्न होनेपर नाल काटनेसे पहले नान्दीमुख नामक श्राद्ध करके बालकको सुवर्णकी सलाईसे अनामिका अंगुलिद्वारा शहत और घृतको मिलाकर अथवा केवलमात्र

घृतमेव वा प्राशयति ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि इति मन्त्रेण ।एतच्च मेधाजननम् । ततः कुमारस्य दक्षिणकर्णे । नाभ्यां वा मुखं दत्त्वा ॐ अग्निरायुष्मान्सवनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।।१।।ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।२।ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मंतं करोमि।।३।ॐदेवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽयुष्मन्तं करोमि ।।४।। ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ।।५।। ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि

घृतको ही चटावे और इन आगे लिखे हुए मंत्रोंका उस समय उच्चारण करे-'ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि' एतच्च मेधाजननम्। तिस पीछे (पिता वा आचार्य) कुमारके दाहिने कान अथवा उसकी नाभिके समीप अपना मुख लगाकर आगे लिखे हुए मंत्रोंको तीन वार जपे-ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।।१।।ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मंतंकरोमि।।२।।ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।।३।।ॐ देवा आयुष्मंतस्तेऽमृतेनायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।४।।ॐ ऋषय आयुष्मंतस्ते व्रतैरायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ।।५।। ॐ पितर आयुष्मंतस्ते स्वधाभिरायुष्मंतस्तेन त्वाऽऽयुषा-

।।६।। ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।।७।।ॐ समुद्र आयुष्मान्त्स स्रवंतीभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषायुष्मन्तं करोमि ।।८।। इति त्रिर्जपित्वा । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषु त्र्ययुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति त्रिर्जपित्वा । अथ तस्य दीर्घमायुः कामयमानः पुत्रमभिस्पृशन् वाग् जपति । स चायम्-ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्द्वितीयं परि जातवेदाः । तृतीयमप्सु नृम्णा अजस्रमिधान एनं जरते स्वाधीः ।।१।। ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा धाम बिभृता पुरुत्रा । विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगंथ ।।२।। ॐ समुद्रे त्वा नृम्णा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न

ऽऽयुष्मन्तं करोमि।।६।।ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्सदक्षिणाभिरायुष्मांस्तेनत्वायुषायुष्मंतं करोमि।।७।। ॐ समुद्र आयुष्मान्त्स स्रवंतीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि।।८।। तत्पश्चात् आगे लिखे हुए 'त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' मंत्रको तीन बार जप करे। पिता यदि पुत्रको दीर्घायु होने की कामना करे तो फिर पुत्रके शरीर को अपने हाथसे स्पर्श करता हुआ इन आगे लिखे हुए मंत्रों को जपे। "ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्द्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयमप्सु नृम्णा अजस्रमिंधान एनं जरते स्वाधीः ।।१।। ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम बिभृता पुरुत्रा। विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ।।२।। ॐ समुद्रे त्वा नृम्णा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो

ऊधन् । तृतीये त्वा रजसि तस्थिवा ँसमपामुस्थे महिषा अवर्द्धन् ।।३।। ॐ अक्रंददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन् ।सद्योजज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यंतः ।।४।। ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः । वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उषसामिधानः ।।५।। ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः । वीडुं चिदद्रिमभिनत्परायंजना यदग्निमयजन्त पंच ।।६।। ॐ उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्त्तेष्ष्वग्निरमृतो निधायि । इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ।।७।। ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः । अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ।।८।। ॐ यस्ते

अग्न ऊधन्।। तृतीये त्वा रजसि तस्थिवा ँसमपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन्।।३।। ॐ अक्रंददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदा रोदसी-भानुना भात्यंतः ।।४।। ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः। वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उषसामिधानः।।५।। ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः। वीडुं चिदद्रिमभिनत्परायं जना यदग्निमयजंत पंच।।६।। ॐ उशिक पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्ष्वग्निरमृतो निधायि। इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन्।।७।। ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोमिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः

अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवंतमग्ने । प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ।।९।। ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने । प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ।।१०।। ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वा सु दधिरे वार्याणि । त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमंतमुशिजो विवव्रुः ।।११।। ततः कुमारं प्रतिदिशमेकैकं ब्राह्मणं मध्ये पंचममूर्ध्वमवेक्षमाणमवस्थाप्य तमुद्दिश्य इममनुप्राणितेति पिता ब्रूयात् । ततस्तेषु प्राणेति पूर्वो व्यानेति दक्षिणोऽपानेति अपर उदानेति उत्तर

।।८।। ॐ यस्ते अद्य कृष्णवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवंतमग्ने। प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ।।९।। ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः।।१०।। ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि। त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमंतमुशिजो विवव्रुः।।११।।" तिसके पीछे बालकके पूर्व पश्चिम उत्तर और दक्षिण इन चारों दिशामें चार ब्राह्मण को बैठा देवे और उनके बीचमें एक पांचवें ब्राह्मणको ऊर्ध्वदृष्टि करके बैठाले अर्थात् वह पाँचवां ब्राह्मण ऊपरको देखता रहे। तब पिता पूर्व तरफके ब्राह्मणकी ओर देखकर 'इममनुप्राणित' ऐसा कहे। तत्पश्चात् उन चारों ब्राह्मणोंमें से पूर्वकी ओर बैठा हुआ ब्राह्मण 'प्राणेति' उच्चारण करे। दक्षिणकी दिशामें बैठा हुआ ब्राह्मण 'व्यानेति' पश्चिमदिशा में बैठा हुआ ब्राह्मण 'अपानेति' और उत्तर दिशामें बैठा

उपरिष्टादवेक्षमाणः समानेति पञ्चमो ब्रूयात् । एषामसंभवे स्वयमेव तत्र तत्रोपविश्य तथैव ब्रूयात् । अथ कुमारस्य जन्मभूमिमभिमंत्रयेत्-ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चंद्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मांत द्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ् शृणुयाम शरदः शतमित्यनेन । अथ कुमारमभिमृशति-अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं भव । आत्मा वै पुत्रनामासि त्वं जीव शरदः शतमित्यनेन । तत्र कुमारमातरमभिमंत्रयेत्-इडाऽसि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः । सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत् ।। इत्यनेन। ततः कुमारनाभिवर्द्धने कृते तस्या दक्षिणस्तनं प्रक्ष्याल्य कुमा-

---

हुआ ब्राह्मण' उदानेति, उच्चारण करे। तथा बीचमें ऊर्ध्वदृष्टि खड़ा हुआ ब्राह्मण 'समानेति' उच्चारण करे। यदि उस समय यह पांच ब्राह्मण नहीं मिल सकें तो पिता को चाहिये कि, उन पूर्वादि चारों दिशाओं में स्वयं जाकर उन उन मंत्रों को उच्चारण कर देवे। फिर आगे लिखे 'ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ् शृणुयाम शरदः शतम्' इस मंत्र से कुमारकी जन्मभूमिको भी अभिमंत्रित करे। अनन्तर आगे लिखे 'अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं भव । आत्मा वै पुत्रनामासि त्वं जीव शरदः शतम्' इस मंत्रसे कुमारको स्पर्श करे।इसके पश्चात् आगे लिखे 'इडाऽसि' मैत्रावरुणो वीरे वीरमजीजनथाः । सात्वं वीरवती भव याऽस्मान् वीरवतोऽकरत्' इस मंत्रसे कुमार (बालक) की माताको भी अभिमंत्रित करे। फिर बालकके

राय प्रयच्छति-ॐ इम ँ्स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीन म
सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमंतमर्वन्त्समुद्रिय
ँ्सदनमाविशस्व ॥ इति मंत्रेण । ततो वामस्तन
प्रक्षाल्य प्रयच्छति-ॐ इम ँ्स्तनमित्यादि । यस्ते स्तन
शशयो यो मैयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यःसुदत्रः ।येन विश्व
पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः॥इति मंत्रा
भ्याम् । ततः प्रसवित्रीशयनीयमस्तकोपरि भूमौ वारि
पूर्णभाजनं निदध्यात्-आपो देवेषु जागृथ यथा देवेषु जा
गृथ एवमस्यां सूतिकायां सपुत्रिकायां जागृथ ॥ इत्यने
मंत्रेण । तच्च सूतिकोत्थापनपर्यंतं तत्रैव धर्तव्यम् । तत
सूतिकागृहद्वारप्रदेशे पंचभूसंस्कारान् कृत्वाऽग्नेरुपसमा-

नालच्छेदन करनेपर उसकी माताके दाहिने स्तनको धुला
और आगे लिखे 'ॐ इम ँ्स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्न सरि
रस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमंतमर्वन्त्समुद्रिय ँ्सदनमाविशस्व
इस मंत्र से बालक को दुग्धपान करावे अर्थात् बालकके मुख
स्तन देवे। फिर बांये स्तनको धोकर पूर्वोक्त 'ॐ इ
ँ्स्तनमूर्जस्वन्तं इत्यादि और दूसरे 'यस्ते स्तनः शशयो य
मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः । येन विश्वा पुष्यसि वार्या
सरस्वति तमिह धातवेऽकः ॥' इस मंत्रसे बालकको देवे। फि
उस पुत्रवती स्त्रीके शिरहानेकी तरफ आगे लिखे-'आपो देवे
जागृथ यथा देवेषु जागृथ एवमस्यां सूतिकायां सपुत्रिका
जागृथ' इस मंत्र द्वारा जलसे भरा हुआ एक पात्र (कलश
स्थापन करे और दश दिनपर्यंत अर्थात् जबतक सूतक निवृत्त
हो उसको वहांसे नहीं उठावे। फिर जहां पुत्र जन्मा हो उ

धानम्।स चाग्निरुत्थानदिनपर्यंतं तत्रैवधर्तव्यः।तत्र चाग्नौ संध्ययोः फलीकरणांस्तण्डुलांस्तन्मिश्रान् सर्षपान् दश दिनानि पिता अन्यो वा ब्राह्मणो नित्यं हस्तेन जुहोति। तत्र प्रथमाहुतौ मंत्रः-ॐ शंडामर्का उपवीरः शौंडिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा।।इदं शंडामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय०। द्वितीयाहुतौ ॐ आलिखन्ननिमिषः किंवदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुंभीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा ।। इदमालिखतेऽनिमिषाय किंवदद्भ्य उपश्रुतये हर्यक्षाय कुंभीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हंत्रीमुखाय सर्षपायारुणाय०।

कोठरी (सोवर) के दरवाजे पर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निको स्थापन करे। यह अग्नि भी सूतकांततक रहनी चाहिये। उस घरकी स्थापित अग्निमें प्रातः तथा सायंकालको धानोंकी पृथक् की हुई भुस्सी (चोकर) चावलोंकी कनी और सरसों मिलाकर आगे लिखे "ॐ शण्डामर्का उपवीरः शौण्डिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा।। इदं शण्डामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय०। द्वितीयाहुतौ ॐआलिखन्ननिमिषः किंवदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुंभी शत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनो नाश्यतादितः स्वाहा।। इदमालिखतेऽनिमिषाय किंवदद्भ्य उपश्रुतये हर्यक्षाय कुंभीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हन्त्रीमुखाय सर्षपायारुणाय० इन मंत्रोंसे पिता अथवा और कोई ब्राह्मण दशदिन तक आहुति देता रहे फिर यदि दश दिनके भीतर बालकको

अथ यदि दशाहाभ्यन्तरे कुमारग्रहो बालमाविशेत्ते
नाविष्टो न नामयति न रोदिति न हृष्यति न
तुष्यति च तदैतन्नैमित्तिकं कर्तव्यम् । तदा तं बालक
जालेन प्रच्छाद्य उत्तरीयेण वाससा अंकमादाय तं बाल
पिता जपति-कूर्कुरस्तु कूर्कुरः कूर्कुरो बालबंधनः । चेच्चे
च्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरत्सत्यं यत्
देवा वरमददुः स त्वं कुमारमेव वावृणीथाः चेच्चेच्छुनक
सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर सत्यं यत्ते सरम
माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेच्चेच्छुनक
सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरेति जपः । न नाम

किसी (पूतनादि) बालग्रहजनित पीड़ा (व्याधि) मालूम हो औ
उससे ग्रसित होनेपर बालक न हाथ पैर हिलावे, न रोवे, न हँसे औ
न प्रसन्न रहे तब इस व्याधिके शमनार्थ यह कर्म करना चाहि
कि, उस बालकको उसके ओढ़नेके वस्त्रसहित जालसे ढकक
पिता अपनी गोदीमें बैठाले और इन आगे लिखे "कूर्कुरस्
कूर्कुरः कूकुरो बालबन्धनः। चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्
सीसरो लपेतापह्वरत्सत्यं यत्ते देवा वरमददुः सत्वं कुमारमे
वावृणीथाः चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर
त्संत्यं यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातर
चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरेति जपः। न
नामयति न रोदिति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र
चाभिमृशामसि" इन मंत्रोंको जपता हुआ अभिमर्शन करे।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसस्वर्गीयमिश्रमुकुन्दानन्दसूनुपण्डित कन्हैया-
लालमिश्रकृतहिन्दीटीकायां जातकर्मसंस्कारः समाप्तः ॥४॥

यति न रोदिति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिनृशामसि ।इत्यभिमृशति।।इति जातकर्म।।४।।

अथ नामकर्म ।।५।।

अथ दशमेऽहनिसूतिकां चोत्थाप्यैकादशेऽहनिविहितदिनान्तरे वा पिता नाम कुर्यात् । तत्र प्रथमं मातृ-पूजाभ्युदयिकादि कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयेत् । कुमारं संस्नाप्य अहतवासः परिधाप्य कृतस्वस्त्ययनं प्राङ्मुखं दक्षिणकर्णे अमुकशर्मासीति त्रिः श्रावयति । अथ आयुर्वे-दान्मंत्रः-ॐ अंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे ।आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम् । नाम द्व्यक्षरं चतुरक्षरं सुखोद्यं शर्मान्तं ब्राह्मणस्य वर्मान्तं क्षत्रियस्य

अब नामकर्मसंस्कार कहा जाता है-दशवें दिन सूतिकाको स्नान कराकर घरको (झाड़ बुहार लीप पोतकर) शुद्ध करे। फिर ग्यारहवें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिये। यदि कदाचित् उस दिन हो सके तो जिस दिनको निश्चय कर लिया है उसी दिन कर देवे। उस दिन पहले मातृपूजा और नांदी-मुखश्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर बालकको स्नान कराकर नवीन वस्त्र पहरावे। अनंतर स्वस्तिवाचनपूर्वक पूर्व को मुख किये हुए बालकके दाहिने कानमें 'अमुक शर्मासि' ऐसा तीन बार सुनावे और फिर अगले-'ॐ अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे। आत्मा वै पुत्रनामासि सजीव शरदः शतम्" मंत्र का पाठ करे। ब्राह्मणके पुत्रका नाम दो अक्षरयुक्त चार अक्षरयुक्त सहज ही उच्चारण करने योग्य और शर्मान्त करे

गुप्तातं वैश्यस्य दासान्तं शूद्रस्य ।। इति नामकर्म ।।५।।

अथ निष्क्रमणम् ।।६।।

तत्र चतुर्थे मासि चन्द्रतारानुकूले दिने स्नातमलंकृतं शिशुं गृहाद्बहिरानीय पिताऽन्यो वा ब्राह्मणः सूर्यमुदीक्षयति ॐ- तच्चक्षुरित्यादिमंत्रेण । तत्र फलपुष्पान्वितपयसा भास्करस्य अर्घ्यो देयः । इति निष्क्रमणम् ।।६।।

अर्थात् नाम के अन्त में शर्मा पद जोड़ देना चाहिये। क्षत्रिय का वर्मान्त नाम करण करे अर्थात् उसके नाम के पीछे वर्मा पद जोड़ देना चाहिये। वैश्यका गुप्तान्त नामकरण करे अर्थात् वैश्यके नामके अन्तमें गुप्त पद जोड़ देना चाहिये और शूद्रका दासान्त नामकरण करे अर्थात् शूद्रके नामके अन्तमें दासपद जोड़ देना चाहिये।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि पं० कन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दीटीकायां नामकर्मसंस्कारः समाप्तः ।।५।।

अब निष्क्रमण संस्कार लिखा जाता है-यह संस्कार चौथे महीने में और चन्द्र ताराको अनुकूलताके दिन करना चाहिये प्रथम बालकको स्नान कराकर नवीन गहने और वस्त्र पहिराय पिता या कोई दूसरा पुरुष उसको बाहर ले जावे और फिर इस आगे लिखे 'ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रम्०' इत्यादि मंत्र का उच्चारण करके बालक को सूर्यनारायण का दर्शन करावे फिर उपरोक्त मंत्र का पाठकर चुकने पर फल पुष्प गंधयुक्त जल के द्वारा भगवान् सूर्य को अर्घ्य देना चाहिये।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-पं० कन्हैयालालमिश्रकृत हिन्दीटीकायां निष्क्रमणसंस्कारः समाप्तः ।।६।।

अथान्नप्राशनम् ।।७।।

तत्र षष्ठे मासि चन्द्रतारानुकूलशुभदिने स्नातःशुचिराचान्तः शुक्लद्विवासाः पिता सूतिकागृह एव कुशकण्डिकां कुर्यात् ।तत्र कुशैर्हस्तपरिमितचतुरस्रभूमिं परिसमूह्य तानैशान्यां निक्षिप्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण प्रागग्रं त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदं समुद्धृत्य वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य कांस्यपात्रस्थं वह्निं प्रत्यङ्मुखमुपसमाधाय ॐ अद्यकर्तव्यान्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति

अब अन्नप्राशन संस्कार लिखा जाता है-यह संस्कार छठे महीने में जिस दिन चन्द्र और तारा अनुकूल हो उसी शुभ दिन में करना चाहिये। उस दिन पिता प्रातःकाल स्नान पूर्वक शुद्ध हो आचमन करके पवित्र हो सफेद वस्त्र धारण पूर्वक जिस घर में बालक का जन्म हुआ हो उसी घर में चौखूंटी वेदी बनावे और उससे वेदी को तीन कुशोंसे बुहारकर उन कुशोंको ईशान दिशा में फेंक देवे। फिर गोबरसे वेदी को लीपकर स्फ्यनामक यज्ञपात्र अथवा स्रुवे से क्रमशः प्रादेशप्रमाण तीन रेखा करके अनामिका और अंगुष्ठसे रेखा खैंचनेके क्रमानुसार मिट्टी उठाकर फेंक देवे।फिर जलसे वेदीको सेचन करे।अनंतर कांसी के पात्रमें अग्निको लेकर पूर्वकी ओर उसका मुखकरके स्थापन करे फिर आगे लिखे 'ॐ अद्य कर्तव्यान्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः

ब्रह्माणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ॐ यथा विहितं कर्म कुर्विति यजमानेनोक्ते ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं निधाय तदुपरि प्राग-ग्रान् कुशानास्तीर्य अग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माण-मुदङ्मुखं तत्रोपवेश्यास्मिन्नन्नप्राशनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुख-मवलोक्याग्नेरुत्तरतो निदध्यात् । ततः परिस्तरणम् बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निप-

---

पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' इस संकल्पको उच्चारण करके ब्रह्मा का वरण करे तब ब्रह्मा उस पुष्पादि सामग्री को लेकर-'ॐ वृतोऽस्मि' कहे फिर यजमानके 'ॐ यथा विहितं कर्म कुरु' ऐसा कहने पर ब्रह्मा-'ॐ करवाणि' ऐसा कहे फिर अग्नि के दक्षिण की तरफ चौकी इत्यादि शुद्ध आसन बिछावे और उस पर पूर्व को अग्रभाग करके कुशा बिछावे फिर ब्रह्मा से अग्नि की प्रदक्षिण कराकर और उत्तर की तरफ मुख कराकर उस पर ब्रह्मा को बैठा देवे। और कहे कि 'अस्मि-न्नन्नप्राशनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' तब इसके उत्तर में ब्रह्मा-'ॐ भवानि' ऐसा कहे। तत्पश्चात् यजमान प्रणीता पात्र को अपने आगे रखकर जल से भर देवे और कुशों से उसको ढक देवे और ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि के (वेदी के) उत्तर की ओर को रख देवे। इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये। एक मुट्ठी कुशा लेकर उसके चारभाग करे। पहले भाग द्वारा अग्निकोनसे ईशान कोनतक, दूसरे भागद्वारा ब्रह्माके आसनसे

र्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्ने रुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थंकुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भितकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशाः उपयमनकुशाः प्रादेशमितपलाशसमिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं चर्वर्थास्तण्डुला एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयानि । ततः पवित्रच्छेदनकुशैर्यजमानप्रादेशमितपवित्रच्छेदनं सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्त-

---

अग्निपर्यंत, तीसरे भागद्वारा नैर्ऋत्यकोनसे वायव्यकोनतक, चौथे भागको अग्नि (वेदी) से लेकर प्रणीतापात्रतक बिछा देवे। फिर अग्निके उत्तरकी ओर पश्चिमदिशामें पवित्र छेदन के लिये तीन कुशा रखे। पवित्र बनानेके लिये अग्रभाग सहित तथा बीचके पत्तेसे रहित (अर्थात् जिनके भीतर अन्य कुश न हों) दो कुशपत्र रखने चाहिये।फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पाँच संमार्जन कुशा, तीन से लेकर तेरह तक उपयमनकुशा, प्रादेशप्रमाण (बिलस्तभर लम्बी) ढाक की तीन समिधा, स्रुवा घृत, दो सौ छप्पन यजमान की मुट्ठी चावलों से भरा हुआ पूर्ण पात्र और चरु के निमित्त चावल इन सब वस्तुओं को क्रमशः पवित्रच्छेदन की कुशाओं के पूर्वपूर्वकी ओर रखता जावे। फिर पवित्रच्छेदनकी कुशाओंसे यजमान प्रादेश प्रमाण पवित्रच्छेदनपूर्वक पवित्रोंको हाथमें ग्रहण कर प्रणीता के जल को तीन वार प्रोक्षणीपात्र में डाले। अनन्तर अनामिका

राग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् । ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्ते न गृहीत्वा दक्षिणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रे गहीत्वा त्रिरुद्दिङ्गनं ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम् । अग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्।ततःआज्यस्थाल्यामाज्यंनिरूप्य प्रणीतोदकेन तण्डुलान्प्रक्षाल्य चरुपात्रे प्रणीतोदकं दत्त्वा तत्र तण्डुलान् प्रक्षिप्य स्वयं चरुं गृहीत्वा ब्रह्मा चाज्यं वह्नावुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं निदध्यात् । ततः सिद्धे चरौ तृणादि प्रज्वाल्य उभयारुपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः । ततस्त्रिः

और अंगुष्ठ से पवित्रों को पकड़कर तीन बार प्रोक्षणी के जल को उछाले फिर प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथमें रख दाहिने हाथ के अनामिका अंगुष्ठ द्वारा पवित्रों को ग्रहण करके तीन बार प्रोक्षणी का जल ऊपर को फेंके। तिसके पीछे प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का सेचन करे फिर प्रोक्षणी के जल से पूर्व स्थापन करी हुई सब वस्तुओं को सेचन करे। पश्चात् अग्नि (वेदी) और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र को रख देवे। अनन्तर आज्यस्थालीमें घृत डालकर प्रणीताके जलसे चरुके निमित्त रखे हुए चावलों को धोवे और चरु पकानेके पात्रमें प्रणीताका जल डालकर फिर उसमें चावलों को डाल देवे पीछे यजमान चरुपात्रको उठाकर और ब्रह्मा घृतपात्र को लेकर अग्नि में उत्तर की तरफ को चरु और दक्षिण की तरफ घृतको रख देवे। फिर चरुके पक जाने पर एक तिनके को बाले और उनको चरु तथा घृतके ऊपर दक्षिण तरफ से घुमाता

स्रुवप्रतपनम् । संमार्जनंकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् । तत आज्यस्य प्राशणीवत्त्रिरुत्पवनम् अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं ततः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थाय उपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य

हुआ अग्निमें डाल देवे। तत्पश्चात् स्रुवे को तीन बार अग्नि में तपाना चाहिये फिर संमार्जन कुशाओं के अग्र से स्रुवे के भीतर और मूलभाग से बाहरकी तरफ स्रुवेको झाड़ अर्थात् शुद्ध करे। अनन्तर प्रणीताके जलसे स्रुवेको छिड़क कर फिर तीन बार तपाकर (वेदीके) दक्षिण की ओर रख देवे। फिर घृतको अग्निमें से उठाकर और उसको चरुके पूर्वभाग से लाकर अपने आगे रखे और फिर घृतके पश्चिमकी तरफ से चरुको लाकर घृत के उत्तरकी ओर रख देवे।पश्चात् प्रोक्षणीकी तरह तीन बार पवित्रोंसे उछाले और देखे यदि उसमें कोई मक्खी इत्यादि अशुभ वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर बाहर फेंक देवे फिर प्रोक्षणीके जलको भी उछाले और फिर यजमान खड़ा होकर उपयमन कुशाओं को बाये हाथमें ग्रहणपूर्वक मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ तीनों समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा मंत्रके सहित चुपचाप अग्निमें डाल देवे। तदनंतर आसनमें बैठकर पवित्रों के साथ प्रोक्षणीका जल हाथमें ग्रहणपूर्वक दक्षिण

प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात्। तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः-ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ०। इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय०। इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये ०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ०। इत्याज्यभागौ। ततोऽनन्वारब्धेन साधारणासाधारणाहुतिद्वयम् । तत्र प्रथमाहुतिमंत्रः- ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति । सा नो मन्द्रेषमूर्ज्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु स्वाहा ।

क्रमसे अग्निके चारों तरफ छिड़के फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे अनन्तर ब्रह्मा से मिलकर और दाहिनी जानुको नवायकर जलती हुई अग्निमें होम करे। पहली चार आहुति देने के अनंतर स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणी पात्र में डालता जाय। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय । इत्याघारौ । ॐ अग्नये[१] स्वाहा इदं अग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। फिर ब्रह्मा से मिले हुए यजमान को आगे लिखे मंत्रों से साधारण और असाधारण दो आहुति देनी चाहिये। तिनमें पहली आहुति का मंत्र निम्न लिखित जानना-'ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतेतु स्वा० इदं वाचे न०। और दूसरी आहु-

---

१ यह दो आहुति आज्यभाग कहाती हैं।

इदं वाचे०। द्वितीयाहुतिस्तु-ॐ देवीं वाचमित्यादिमंत्रः। ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवा ँ ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेय ँ स्वाहा॥ इदं वाचे वाजाय। इति मंत्राभ्याम्। ततः स्थालीपाकेनाहुतिचतुष्टयम्-ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा इदं प्राणाय०। ॐ अपानेन गंधमशीय स्वाहा इदमपानाय०। ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा-इदं चक्षुषे०। ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय०। ततो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृको होमः। तत्र तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषद्रव्यस्य प्रोक्षणीपात्रे

तिका वही पहला 'ॐ देवीं वाचम्' इत्यादि मंत्र जिससे कि प्रथम आहुति दी गई है और एक यह 'ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवा ँ ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेय ँ स्वाहा इदं वाचे वाजाय०' अर्थात् पहली आहुति का मन्त्र और एक दूसरा मंत्र इन दोनों को मिलाकर दूसरी आहुति देनी चाहिये। इसके अनंतर स्थालीपाक में घृत मिलाकर आगे लिखे 'ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा इदं प्राणाय०। ॐ अपानेन गन्धमशीय स्वाहा इहमपानाय०। ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा इदं चक्षुषे०। ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय०' इन मन्त्रों से स्थालीपाक चरु की चार आहुति देवे। इसके आगे का हवन भी ब्रह्मा से मिलकर ही किया जाता

---

१ यह दोनों आधार आहुति कहलाती हैं।

प्रक्षेपः। तत्रैवाज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृतम्। ॐ अ
ग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। तत
आज्येन-ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाह
इदं वायवे न०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न०। एत
महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य
हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो
विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणा
भ्यां०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या
उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँरराणो वीहि मृ
डीक ँसुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ
अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि

है। प्रत्येक आहुति के अनन्तर स्रुवे में बची हुई वस्तु को
प्रोक्षणी पात्र में डालना चाहिये। अब प्रथम घृत और चरु इन
दोनों से आगे लिखे 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये
स्विष्टकृते' इन मंत्रों द्वारा स्विष्टकृत् आहुति देवे। फिर घृतद्वारा
आगे लिखे भूरादि मन्त्रों से नव आहुति देवे-ॐ भूः स्वाहा
इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न०। ॐ स्वः स्वाहा इद
सूर्याय न०। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य
विद्वान् देवस्य हेडो अब यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशु
चानो विश्वाद्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्।
ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुण ँरराणो वीहि मृडीक ँसुहवो न एधि
स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च
सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज

अयान्नो यज्ञं वहास्ययान्नो धेहि भेषज ँस्वाहा इदमग्नये० । ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुंचुंत मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यः० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँश्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०।इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्य

स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं। वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमंवरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तम्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। अनन्तर प्रोक्षणीपात्र के जल को यत्किंचित् पान करे फिर शुद्ध जल से आचमन करे पुनः आगे लिखे हुए 'ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' ऐसा

महं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततः प्रणीताविमोकः । ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पठित्वा पवित्राभ्यां प्रपीताजलमानीयतेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मःइत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा व्याते धाः स्वाहा । इति बर्हिर्होमः । अथ सर्वान् कटुमधुरलवणादि रसान् सर्वाणि च शाल्यादीन्यन्नानि यथासंभवमुद्धृत्यैकस्मिन्नुत्तमपात्रे कृत्वा कृतस्नानादिरलंकारादियुतो बाल-

---

संकल्प करके पूर्णपात्र का दान करके ब्रह्मा को देवे। तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर उसको ग्रहण करे। फिर पवित्रों से प्रणीता पात्र के जल को लेकर आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' मन्त्र से अपने शिर में छिड़के। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यश्च वयं द्विष्मः' मंत्र से प्रणीतापात्र को ईशानकोन में उल्टा कर देना चाहिये। इसकेपीछेस्तरणक्रमसे अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रम से कुशों को उठाकर घृत में भिगोवे और फिर उनको हाथ से ही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रद्वारा अग्नि में होम कर देवे। फिर सब प्रकार के कडवे, तीखे, कसैले, मीठे, खट्टे, लवण रसोंको, सब प्रकारके चावल इत्यादि अन्नको, जिस परिमाणसे घरमें बनाये गये हों उन सब में से थोड़ा थोड़ा

स्तूष्णीं ॐ हंत इति मंत्रेण वा अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्व शुष्मिणः प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥इत्यनेन वा प्राशनीयम् । अथ कुमारस्य वाक्प्रसरणकामेन भरद्वाजमांसेन अन्नाद्यकामेन कपिञ्जलमांसेन जवनकामेन आयुःकामेन च कृकलासमांसेन ब्रह्मवर्चसकामेन आटिमांसेन सर्वफलकामेन कथितसर्वमांसः कपिञ्जलः।(आटिगौरतित्तिर इति केचित्।) अलाभे पिष्टकमयानां भरद्वाजप्रभृतीनामेकदेशः प्राश-

---

एक उत्तम पात्रमें परोसकर स्नानपूर्वक शुद्ध नवीन वस्त्र पहराये हुए बालकको चुपचाप 'ॐ हन्त' इस मंत्रसे यह आगे लिखे 'अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे' इस मंत्रसे उस पात्रमें रखे हुए सब अन्न चटा देवे। यहाँ विशेषता यह है, यदि पिता इच्छा करे कि यह मेरा बालक उत्तम वक्ता हो तो भारद्वाज (पक्षी विशेष) के मांससे उसको प्राशन कराना चाहिये। यदि बालकके विशेषअन्नशाली होनेकी कामना हो तो कपिञ्जल (पक्षी) के मांससे प्राशन कराना चाहिये। यदि पुत्रके वेगवान् होनेकी चाहना हो तो मत्स्यमांस द्वारा, विशेष दीर्घायु होनेकी लालसा होनेपर कृकलास (गिरगट) के मांस द्वारा और पुत्रके ब्रह्मतेजस्वी होनेकी अभिलाषा होनेपर सफेदतीतरके मांससे प्राशन कराना चाहिये। यदि बालकके सर्वगुणसम्पन्न होनेकी अभिलाषा हो तो उसको सबप्रकारके भक्ष्यमांसद्वारा प्राशन कराना चाहिये। यदि उपरोक्त मांस न मिल सकें तो आटे द्वारा उन उन पक्षियोंका आकार (मूर्ति) बनाकर उसके कुछ अंश को

यितव्यः । तत आचम्योत्थाय फलमूलपुष्पसमन्वित-घृतेन स्रुवं परिपूर्य ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ॥ इति मंत्रेण पूर्णाहुतिं दद्यात् । तत उपविश्य भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले।ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि तन्नो इत्यत्र तत्ते अस्त्विति विशेषः । ततो दूर्वाक्षतादिदानं ब्राह्मणानां भोजनं च ॥ इत्यन्नप्राशनम् ॥७॥

प्राशन करा देवे, फिर आचमनपूर्वक स्रुवेमें फल, मूल, पुष्प, घृत भरकर खड़ा हो जाय और आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा' इस मंत्रसे पूर्णाहुति देवे। तत्पश्चात् आसनमें बैठकर स्रुवेमें होमकी भस्मलगावे और फिर अनामिका अंगुलीद्वारा उस स्रुवेकी भस्मलेकर ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' उच्चारण करके माथेमें, 'ॐकश्यपस्य त्र्यायुषं'कहकर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' पढ़कर दक्षिण बाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा बोलकर उस भस्मको हृदय में लगा लेना चाहिये।इस प्रकार पिता अपने भस्म लगाकर फिर ऐसेही पुत्रके भी लगावे किंतु जब पुत्रके भस्म लगावे तब 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे। फिर ब्राह्मणों से दूर्वा अक्षत पुष्पादि द्वारा आशीर्वाद ग्रहण करे।इसके उपरांत ब्राह्म-

अथ चूडाकर्म ।।८।।

तच्चपूर्णवर्षे तृतीये वा असंपूर्णे उपनीत्या सहवा यथाचारम् उदगयन आपूर्यमाणपक्षे शुक्रास्तादिदोषरहितरिक्तादिदोषरहित-सोमगुरुबुधशुक्रान्यतमवारविहित-नक्षत्रसमन्वितायां तिथौ कृतनित्यक्रियो यजमानो मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा मंडपे परिष्कृतभूमौ कुशकण्डिकामारभेत् । तत्र क्रमः-कुशैर्हस्तमितां भूमिं परिसमूह्य तानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रादेशमात्रं त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामि–

णोंको भोजन कराना चाहिये।। इति अन्नप्राशन संस्कारः।।७।।

अब चूडाकरणसंस्कार लिखा जाता है-यह चूडाकरण संस्कार वर्षके पूर्ण हो जानेपर अथवा तीसरे वर्ष या यज्ञोपवीत संस्कारके साथ अपने यहाँकी रीतिके अनुसार किया जाता है। चूडाकरण संस्कार उत्तरायण शुक्लपक्ष और शुक्रादिके अस्तरहित समयमें तथा रिक्तातिथिरहित समयमें और सोम, गुरु, बुध तथा शुक्र इन वारोंमें और ज्योतिषशास्त्रोक्त चूडाकर्म कथित नक्षत्रयुक्त तिथिमें होना चाहिये। उस दिन यजमान स्नान तथा नित्यकर्म करके मातृपूजा और नान्दीमुख श्राद्ध कर रचे हुए मण्डपकी शुद्ध भूमिमें वेदी बनायकर कुश कण्डिका का आरंभ करे। प्रथम तीन कुशाओंसे वेदीको परिष्कार (साफ) करे और फिर उन कुशाओं से ईशानकोन में फेंक देवे। अनन्तर गोबरमें जल मिलाकर वेदीको लीपे फिर स्रुवसे प्रादेशप्रमाण तीन रेखा खैचकर रेखा खैंचने के क्रमानु–

काङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य कांस्यपात्रेणाग्निमानीय प्रत्यङ्मुखमग्नेरुपसमाधानं कुर्यात् । ततोऽग्नेः पश्चिमतो यजमानदक्षिणदिशि स्नापितं कुमारमहतवासः परिधाप्याङ्के निधाय माता उपविशति । ततः पुष्पचन्दनताम्बूलवासांस्यादाय ॐ अद्य कर्तव्यचूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति यजमानेनोक्ते ॐ करवाणीति प्रतिवचनम् ।

सार अनामिका और अंगुष्ठ द्वारा उन रेखाओंमें से मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें डालदेवे तत्पश्चात् वेदीको जलसे सेचन करना चाहिये और काँसीके पात्रमें अग्नि लाकर उसको पश्चिमाभिमुख करके वेदीमें स्थापन करे। फिर अग्निके पश्चिमकी तरफ आसन बिछाकर यजमान नवीनवस्त्र पहरकर बैठे पश्चात् बालकको स्नान कराय नवीनवस्त्र पहराय माता अपनी गोदीमें लेकर पतिके दाहिनी तरफ बैठे तदनंतर, पुष्प, चन्दन, ताम्बूल तथा वस्त्र लेकर यजमान आगे लिखे हुए 'ॐ अद्य कर्त्तव्यचूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' इस संकल्पको उच्चारण पूर्वक ब्रह्माका वरण करे तब ब्रह्मा उस पुष्पादि सामग्रीको लेकर 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा कहे। फिर यजमान 'ॐ यथाविहितं कर्मकुरु' कहे तब (उसके उत्तर में) ब्रह्मा 'ॐ करवाणि' ऐसा कहे। तत्पश्चात् यजमान अग्निके

ततो यजमानोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्याग्निंप्रदक्षिणं कारयित्वा अस्मिन् कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय । ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतःपश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भितकुशपत्रद्वयं प्रोक्ष-

---

दक्षिणकी ओर चौकी आदि शुद्धआसन बिछाकर उसपर पूर्वको जिनका अग्रभाग हो ऐसे कुश बिछावे और ब्रह्मा से अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' अर्थात् इस कर्ममें आप मेरे ब्रह्मा हो ऐसा कहे तब इसके उत्तरमें ब्रह्माके 'ॐ भवानि' कहनेपर उस आसनपर ब्रह्माको उत्तराभिमुख करके बैठा देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे परिपूर्ण करके कुशाओं से ढकदेवे और ब्रह्माके मुखकी तरफ देखकर अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंपर रख देवे तिसके पीछे अग्निके सब ओर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुश लेकर उसके चार भाग करे। प्रथम भाग अग्निकोनसे लेकर ईशानकोन तक, दूसरा भाग ब्रह्मा के आसनसे अग्निकोन–तक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यकोन से वायुकोन तक और चौथा भाग अग्नि से प्रणीतापात्र पर्यंत बिछा देवे। फिर हवन के लिये अग्नि से उत्तर पश्चिम दिशा में पवित्रच्छेदन के लिये तीन कुश

णीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्न-तंडुलपूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणा-सादनीयम् ।अमीषामुत्तरोत्तरतः साधारणवस्तून्युपकल्प-नीयानि । तत्र शितोदकमुष्णोदकं घृतदधिनवनीतान्यत-मस्य पिंडः त्रिश्वेतशल्लकीकंटकं साग्रसप्तविंशतिकुश-पत्राणि लोहक्षुरः नापितः वृषभगोमयपिंडः अन्यदप्या-चारान्नलिनीदलादि । ततः पवित्रच्छेदनकुशाः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रेनिधाय द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रेगृहीत्वात्रिरु-

---

रखे और पवित्र बनाने के लिये अग्रभाग सहित और बीच के पत्ते से रहित ऐसे दो कुशपत्र रखे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्य-स्थाली, पांच संमार्जनकुशा, तीन समिधा, स्रुवा घृत और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब पदार्थोंको पवित्रच्छेदन की कुशाओं के आगे आगे रखता जावे और इन सबके आगे आगे अन्यान्य साधारण वस्तुओं को भी रखता जावे। (इनके सिवाय) शीतल और उष्णजल रखे। घृत, दही अथवा माखन इनमें यथालब्ध किसी एक पदार्थ का गोला-कार पिंड बनाकर रख देवे। तीन स्थान में सफेद वाला वन सूअर का कांटा, सत्ताईस कुशा, लोहे का उस्तरा, नापित (नाई) बैल के गोबर का पिंड (लौंदा) तथा अन्यान्य कमलके पत्ते इत्यादि मांगलिक पदार्थों को स्थापन करे। फिर पवित्रच्छेदनकी कुशाओंसे पवित्र छेदनकर उन पवित्रोंको हाथ में ले प्रणीताके जलको प्रोक्षणीपात्रमें डाले। पश्चात् अनामिका

त्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते कृत्वाऽनामिकांगुष्ठ-गृहीतपवित्राभ्यां प्रोक्षणीजलं त्रिरुत्क्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तून्यभि-षिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । आज्य-स्थाल्यामाज्यंकृत्वाऽधिश्रित्य ज्वलत्तृणादिकमादायाज्य स्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत् क्षिपेत् ।ततस्त्रिः स्रुवप्रतपनं संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पूर्ववत् त्रिःप्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात् । ततः अग्नितः प्रदक्षिणक्रमेणाज्यमवतार्या-ग्रतो निदध्यात् ।ततःप्रोक्षणीवत्त्रिराज्योत्पवनम्,अवेक्ष्य

और अंगुष्ठ इन दोनों अंगुलियोंके द्वारा पवित्रोंको पकड़ प्रोक्ष-णीका जल तीन बार उछाले। फिर प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथमें रखकर अनामिका तथा अंगुष्ठसे पकड़े हुए पवित्रोंसे प्रोक्षणीका जल तीन बार ऊपरको छिड़के। पीछे प्रणीताके जलसे प्रोक्षणी-पात्रको सेचनकर प्रोक्षणीके जल द्वारा पूर्व स्थापित सब वस्तु-ओंको छिड़के। फिर उस प्रोक्षणीपात्र को अग्नि और प्रणी-ताके बीच में रख देना चाहिये अनंतर आज्यस्थाली में घृत डालकर उसको वेदी की अग्निमें रख देवे। फिर एक तिनका बालकर घृत के चारों ओर दक्षिण क्रमसे घुमाकर अग्निमें डाल देवे तदनंतर तीन बार स्रुवे को (वेदीकी अग्निमें) तपावे और फिर संमार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाह-रकी तरफ स्रुवेको शुद्धकर प्रणीता के जल से छिड़के अनन्तर पूर्वोक्त प्रकार से ही फिर तीन बार तपाकर दक्षिणकी ओर रख देवे। तत्पश्चात् दक्षिण क्रमसे अग्निसे घृतको उठाकर यजमान

सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रेकृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धःपातित-दक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात् । तत्र प्रत्याहु-त्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० १। इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० २। इत्याघारौ ॥ ॐ

अपने आगे रख लेवे फिर प्रोक्षणीपात्र की तरह यजमान उस घृतको पवित्रोंद्वारा उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये। फिर पूर्ववत् पवित्रों द्वारा तीन बारही प्रोक्षणी पात्रके जलको उछालना उचित है। फिर यजमान खड़ा हो उपयमन कुशाओं को बायें हाथमें ले मनमें प्रजापति का ध्यान करता हुआ उन पूर्वस्थापित तीनों समिधाओं को घृत में भिगोकर स्वाहा शब्दके साथ चुपचाप अग्निमें डाल देवे। फिर आसन-पर बैठकर पवित्र और प्रोक्षणी का जल हाथमें ग्रहणपूर्वक अग्नि के चारों तरफ छिड़के पवित्रों को प्रणीतापात्र में रख देवे फिर ब्रह्मासे मिलकर और अपने दाहिने घुटुएको नवायकर प्रज्वलित अग्नि में होम करे प्रत्येक आहुति देने पर स्रुव में जो घृत शेष रहे उसको प्रोक्षणी पात्र में डालता जाय। हवन करने के मंत्र यथा-ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥१॥ इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिन्द्राय

अग्नये स्वाहा इदमग्नये० ३। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० ४। इत्याज्यभागौ ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ५। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० ६। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ७। एता महाव्याहृतयः ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ८।ॐ स त्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ९। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहं। इदमग्नये० १०। ॐ ये ते शतं

न मम ॥२॥ इत्याघारौ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥३॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम ॥४॥ इत्याज्यभागौ। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम ॥५॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥६॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥७॥ एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥८॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥९॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये० ॥१०॥

वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ११। ॐ उदुत्तमं वरुणपाश मस्मदवाधमं विमध्यमँ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम इदं वरुणाय० १२। इति सर्वप्रायश्चित्तम्।।ॐप्रजापतये स्वाहाइदं प्रजापतये०१३। इति प्राजापत्यम् ।। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० १४।इतिस्विष्टकृत् ।। अथ संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ॐ अद्यामुष्य कुमारस्य कृतैतच्चूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदंपूर्णपात्रंप्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुक-

---

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।।११।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विप्रध्यमँ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० ।।१२।। इति सर्वप्रायश्चित्तम् ।। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापये० ।।१३।। इति मनसा । इति प्राजापत्यम् ।ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० ।।१४।। इसके पीछे प्रोक्षणीके जलद्वारा प्राशन करना चाहिये और फिर दूसरी बार शुद्धजल से आचमन करे अनन्तर आगे लिखे 'ॐ अद्यामुष्य कुमारस्य कृतैतच्चूडाकरणहोमकर्माणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं

शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे । इति ब्रह्मणे दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु । इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः । इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा ।। इति मंत्रेण बर्हिर्होमः ।। अथ शीतोदकेमुष्णोदकेन ॐ उष्णेन वा य उदकेनेह्यदिते

प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' इस संकल्पको पढ़कर ब्रह्माके निमित्तपूर्ण पात्र का दान करे। ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर वह दक्षिणा ले लेवे। फिर पवित्रों की गांठ खोल देना चाहिये और उन्हीं पवित्रों से आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' यह मंत्र पढ़कर यजमान प्रणीताके जलद्वारा शिरमें मार्जन करे और पश्चात् आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः'इस मंत्रको पढ़कर प्रणीतापात्रको ईशान कोनमें उल्टा कर देवे।तिस पीछे बिछानेके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे उन कुशों को उठावे और फिर उनको घृत में भिगोकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मंत्रसे अग्नि में डाल देवे। तदनन्तर पूर्वस्थापित शीतल जलको गरम जल में आगे लिखे 'ॐ उष्णेन

केशान्वप इति मंत्रेणाभिषिच्य तक्रमिश्रितोदके नवनीताद्यन्यतमपिण्डं तूष्णीं प्रक्षिप्य दक्षिणपश्चिमोतरक्रमेण पूर्वनिशाबद्धकुमारकेशजूटिकात्रये दक्षिणजूटिकाम् । ॐ सवित्रा प्रसूता देव्या आप उन्दन्तु ते तनुम् । दीर्घायुत्वाय वर्चसे । इति मंत्रं पठित्वा तेनैव मिश्रितवारिणा प्रक्षाल्य ततो दक्षिणभागस्थितजूटिकाभागत्रयं कुर्यात् । तत्र एकैकां जूटिकां प्रति कुशपत्रत्रयसंयोजनं कुर्यात् । शल्लीकीकण्टकेन तूष्णीं विवरणं कृत्वा भागत्रयं कुर्यात्। ततः सप्तविंशतिकुशपत्रतः पत्रत्रयमानीय तत्केशमूलसंलग्नाग्रजूटिकाप्रथमभागमध्यांतरितं कुर्यात् ।ॐ ओषधे

वा य उदकेनेह्यदिते केशान् वप' इस मंत्र द्वारा मिलावे। फिर उस जल में थोड़ा सा मट्ठा डालकर पूर्व स्थापित घृत, दही वा माखन के पिंडमें से भी यत्किंचित् पिंड ही बनाकर चुपचाप उसमें डाल देवे।फिर चूड़ाकर्मके निर्दिष्ट दिनसे पहले दिन बालकके केशोके तीन भागकर कलावे से दक्षिण पश्चिम उत्तर तीन तरफ जूटिका (जूड़ा) बांधे। उन पहले दिन बांधी हुई तीनों जूटिकाओं में दक्षिण तरफवाली जूटिका को आज चूड़ाकर्म के दिन आगे लिखे 'ॐ सवित्रा प्रसूता देव्या आप उन्दन्तु ते तनुम्। दीर्घायुत्वाय वर्चसे' इस मन्त्र से पढ़कर शीतोदक, उष्णोदक, मट्ठा और दधि इत्यादिमिश्रित जलसे भिगोवे। फिर उस दक्षिण तरफकी जूटिकाके भी सेही के काँटे से सुलझाकर तीनभाग करे और पूर्वस्थापित सत्ताईस कुशोंमें से तीन कुशले कलावा लपेटकर उनकी भी पिंजूलिका बना लेवे और पहली जूटिका के साथ उस पिंजूलिकाको युक्त करे। अनन्तर आगे

त्रायस्व स्वधिते मैन ँ हि ँ सीः । शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि ँ सीः ॥ इति मंत्रेण लोहक्षुरं गृहीत्वा ॐ निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । इति मंत्रेण जूटिकासंलग्नं कुर्यात् ॥ ततः कुशपत्रत्रयसहितां जूटिकां छिनत्ति । ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् । तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथासत् । इति मंत्रेण पश्चिमजूटिकाछेदनं कुर्यात् । ततस्तान् लूनकुशपत्रत्रयसहितान् अनडुद्गोमयपिण्डोपरि उत्तरस्यां निदध्यात् । अत्रैव पूर्वप्रक्षालितपरभागद्वये कुशपत्रत्रितयान्तर्निधानादि च्छेदमर्जं सर्वं पूर्ववदेव

लिखे ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ँ हि ँ सीः शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि ँ सीः ।' इस मंत्र से उस्तरेको हाथ में लेवे। तदनन्तर आगे लिखे 'निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय' इस मन्त्र से उस उस्तरेको बालों में लगावे और फिर आगे लिखे 'ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् । तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथाऽसत्।' इस मंत्रसे उस पिंजूलिका समेत बालोंके जूड़ाको काट लेवे। पश्चात् उन कुश सहित काटे हुए बालोंको उत्तर की ओर स्थापित बैल के गोबर पर रख देवे फिर पहले भिगोई हुई दक्षिणभाग की दोनों जूटिकाको तीन कुशोंकी पिंजूलिका से युक्त कर केश काटने के अतिरिक्त तीन तीन कुशपत्र रखना तथा सेही के काँटेका लगाना इत्यादि सब काम पूर्ववत् करे, किंतु छेदन अर्थात् बालोंके

छेदनं तूष्णीम् । ततः पश्चिमजूटिकायां पूर्ववत्तेनैव मंत्रेण प्रक्षालनं तूष्णीं शल्लकीकण्टकेन भागत्रयकरणं केशमूलसंलग्नाग्रकेशांतरितमध्यकुशपत्रत्रयधारण-क्षुरग्रहण-तत्संयोजनानि तत्तन्मंत्रेणैव । तत्र प्रथमजूटिकाछेदने मन्त्रः-ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ इति मंत्रेण छित्वा ततः पूर्ववद्गोमयपिण्डोपरि निदध्यात् । तत्रावशिष्टभागद्वये कुशपत्रत्रयं केशांतर्निधानादि च्छेदनवर्जं सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूष्णीमेव लूनकुशपत्रत्रयकेशानां गोमयपिंडोपरि धारणं च । तत उत्तरभागजूटिकायां प्रक्षालनादिक्षुरसंयोजनान्तेषु पूर्ववत्तत्तन्मन्त्रंप्रयोज्य प्रथमभाग जूटिकायां

काटनेका काम चुपचाप करे। अनन्तर पश्चिमकी तरफके जूड़ामें पूर्ववत् तत्तन्मंत्रों द्वारा भिजाना सेईके काँटते चुपचाप बालोके तीन भाग करना और फिर तीन तीन कुश पिंजूलिकाओं का युक्त करना, क्षुरे (उस्तरे) को हाथ में लेना, बालोंमें उस्तरेका लगाना यह सब काम करे। पश्चात् आगे लिखे 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' इस मंत्र से पहली जूड़ाको काट लेवे। फिर पूर्ववत कांटी हुई जूटिका इत्यादि को उसी गोबर के लौंदे पर रख देवे। अनन्तर बची हुई दो जूटिकाओं को तीन तीन कुशों से संयुक्तकर छेदन के अतिरिक्त सब कार्य पूर्ववत् करे किंतु छेदन चुपचाप करना चाहिये। फिर इन केश और पिंजूलिका को पूर्ववत् गोबर के लौंदे पर रख देवे इसके पश्चात् उत्तर भाग के जूड़ामें बाल भिगोनेसे लेकर बालोंमें छुरेको रखने तक उन उन

छेदने मंत्रः-ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धि सूर्यम् । तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये ।। ततः केशान् गोमयपिण्डोपरि निदध्यात् । ततोऽवशिष्टभागद्वये कुशपत्रत्रये केशान्तर्निधानादिच्छेदनवर्जं सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूष्णीं गोमयपिंडोपरि धारणमपि । ततः समस्तं शिरः प्रक्षाल्य त्रिः केशोपरि क्षुरं प्रदक्षिणक्रमेणानुकेशान् भ्रामयति । ॐ यत् क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वपति केशांश्छिंधि शिरो माऽस्यायुः प्रमोषीः ।। इति मंत्रेण । ततस्ताभिरेवाद्भिः समस्तं शिरः प्रक्षाल्य ॐ अक्षण्वन्परिवप इति नापिताय क्षुरं प्रयच्छति । अथ नापितः शिखां

मंत्रों द्वारा सब कार्य पूर्ववत् करके प्रथम भाग के जूड़ा को आगे लिखे 'ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये' इस मंत्र से छेदन करे अर्थात् काट लेवे। फिर उन केश तथा कुशाओं को गोबरके लौंदे पर रख देवे। तत्पश्चात् शेष उत्तर के दो भागोंमें तीन तीन कुशाओंको केशोंके भीतर रखना इत्यादि सारे कार्य पहलेकी नाईं चुपचाप करे और बालोंको काटकर गोबर के लौंदे पर रख देवे। तदनंतर समस्त शिर को गीलाकर अर्थात् जल से भिजोकर छुरे को दक्षिण क्रमसे तीन वार आगे लिखे 'ॐ यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वपति केशांश्छिंधि शिरो माऽस्यायुः प्रमोषीः' इस मंत्रद्वारा शिरके चारों ओर घुमावे फिर उन्हीं पहले घृतादि मिले शीतल और उष्ण जलसे सारे शिरको भिगोकर 'ॐ अक्षण्वन्परिवप' ऐसा उच्चा-

धृत्वा समस्तशिरोवपनं यथाकुलधर्मं कुर्यात् । तांश्च केशान्नूतनवस्त्रेण प्रतीक्ष्य माता दधिभक्तदुग्धसमन्वितगोमयपिंडोपरि निदध्यात् ।इति समाचारः।।पूर्ववत्पूर्णाहुतिः ।ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जसयंत देवाः स्वाहा ।। इति मंत्रेण पूर्णाहुतिः तत उपविश्यस्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना त्र्यायुषं कुर्यात् । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ।ॐकश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ।ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुष-

---

रण करके उस छुरे (उस्तरे) को नाईके हाथमें दे देना चाहिये और तब फिर वह नाई कुलधर्मानुसार शिखा को छोड़कर शेष समस्त शिर का मुण्डन कर देवे। अनन्तर बालक की माता उन बालोंको नवीन वस्त्रमें लपेटकर दही दूध सहित गोबरके लौंदे पर रख देवे। इस रीतिको सब किसी के पक्ष में समान जानना चाहिये। फिर पूर्ववत् आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँसम्राजमतिथि जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा' इस मंत्रसे पूर्णाहुति देनी चाहिये। फिर आसनपर बैठकर स्रुवेसे अग्निकी भस्म ले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलीसे उस भस्म को ॐ 'त्र्यायुषं जमदग्नेः' ऐसा कहकर माथे में 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह कहकर गले में 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं ' ऐसा कहकर दक्षिण बाहुमूल में और 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' कहकर यजमान अपने हृदय में लगावे। फिर इसी रीति से पुत्र

मिति हृदि । अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि । तत्र तत्ते अस्तु इति विशेषः । ततो दूर्वाक्षतादिग्रहणम् । ततस्तान् केशान् सगोमयपिंडान् गोष्ठे सरित्तीरे वा अन्यस्मिन्नुदकान्तरे वा निदध्यात् । तत आचाराद्ब्रोज्यादिकम् । इति चूडाकर्म ॥८॥

अथ कर्णवेध: ॥९॥

तत्र तृतीये वर्षेपंचमे वा पुष्येन्दुचित्राहरिरेवत्यन्यतमनक्षत्रसमन्वितरिक्ताऽतिरिक्ततिथिपूर्वाह्णेपिताऽन्योवा-

---

भस्म लगानी चाहिये। किंतु जब पुत्र के भस्म लगावे तब 'तन्नो अस्तु' के स्थान में 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे फिर दूर्वाक्षतादि रूप आशीर्वाद ग्रहण करे। तत्पश्चात् उन केशोंको गोबरके लौंदे समेत गोशाला में अथवा किसी नदी के किनारे किंवा किसी अन्य जलाशय के समीप रख देवे और फिर अपने कुलकी रीति के अनुसार ब्राह्मण तथा इष्ट मित्रों को भोजन करावे॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनु-पंण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दीटीकायां चूड़ाकर्मसंस्कार: समाप्त:॥८॥

अब कर्णवेध (कनछेदन) संस्कार लिखा जाता है। तीसरे अथवा पाँचवें वर्षमें पुष्य, इन्दु, चित्रा, हरि, रेवती इन नक्षत्रों में कोई नक्षत्रयुक्त, रिक्ता तिथि के अतिरिक्त अन्य तिथि के पूर्वाह्न समयमें पिता अथवा दूसरा घरका कोई वृद्ध पुरुष पूर्वाभिमुख बैठकर बालकके हाथ में कोई मोदकादि (मीठी) वस्तु

पूर्वाभिमुखोपविष्टःकुमारस्य मधुरं दत्त्वा ॐभद्रंकर्णेभि
शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तु
ष्टुवा ँसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः । इति मंत्रे
दक्षिण कर्णमभिमंत्र्य ॐ वक्ष्यंतीवेदा गनीगंति क
प्रिय ँसखायं परिषस्वजाना । योषेव शिंक्ते वितता
धन्वन्ज्या इय ँसमने पारयंती ॥ इति मन्त्रेण वा
कर्णमभिमंत्रयेत् । ततो मध्यं वीक्ष्य नापितद्वारा वे
येत् । तस्मिन् समये मधुरादिदानमाचारात् । त
ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति कर्णवेधः ॥९॥

देकर आगे लिखे 'ॐ भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम देवा भद्र पश
माक्षभिर्यजत्रा:। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहि
यदायु:' इस मंत्रसे दाहिने कानको अभिमंत्रित करे फिर अ
लिखे मंत्र से बायें कान को भी अभिमंत्रित करे। मंत्र यथ
'ॐ वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रिय ँपखायं परिषस्वजान
योषेव शिंक्ते वितताधि धन्वन्ज्या इय ँसमने पारयन्ती'। अ
न्तर कर्णवेध के ठीक मध्यस्थान को देखकर नाई[1] के द्वारा वे
करावे अर्थात् कान को छिदावे कर्णवेध के समय बालक
हाथमें मोदकादिका देना सदाचार अर्थात् परंपरा है। तत्पश्च
ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये ॥ इति कर्णवेध: ॥९

---

१ यहां नाई शब्द से स्वर्णकार को समझना चाहिये।

अथोपनयनम् ॥ १० ॥

तत्रशुद्धसमयेरविगुरुचन्द्रतारादिशुद्धौ जन्मतोगर्भतो वाष्टमेऽशब्दे वाऽ नुकूल्येषो डशसंवत्सराभ्यन्तरेब्रह्मवर्चसकामस्यपञ्चमेऽप्युदगयनआपूर्यमाणपक्षेऽनध्यायषष्ठीरिक्ताद्यतिरिक्ततिथौ रविगुरुशुक्रान्यतमवारे मध्याह्नादर्वाक् कुमारपित्राभ्युदयिके कृतेतदभावे आचार्येणैव कृते ब्राह्मणान्माणवकं च भोजयित्वा सशिखकृतक्षौरं स्नानानंतरं यथाशक्त्यलंकृत्य बहिःशालायां तुषकेशशर्करादिशून्यपरिष्कृतभूमौ आचार्योऽग्निस्थापनं कुर्यात् । तत्र हस्तमात्रपरिमितचतुरस्रभूमिकुशकरणकसमूहना-

---

अब उपनयनसंस्कार लिखा जाता है। सूर्य; गुरु, चन्द्र, ताराादिकी शुद्धिवाले शुभ समय में जन्म अथवा गर्भ से आठवें वर्ष अथवा सोलह वर्ष के भीतर अपने अनुकूल समय में और ब्रह्मतेज की इच्छा करनेवाला पुरुष पाँचवें वर्ष उत्तरायण और शुक्लपक्षयुक्त कालमें अनध्याय षष्ठी रिक्ताके सिवाय अन्यान्य तिथिमें रवि, गुरु, शुक्र इन वारोंके बीच किसी वारमें मध्याह्नसे पहले यज्ञोपवीत करना चाहिये। पिता अथवा पिताके न होनेपर आचार्य नान्दीमुख श्राद्ध करके ब्राह्मण[1] और बालकको भोजन करावे। फिर शिखा धरवाय और करवाय स्नान करावे और उस बालकको अपनी सामर्थ्यके अनुसार अलंकृत कर बाहर तुष केश धूरि इत्यादि रहित संस्कृत तथा शुद्ध भूमि पर रची हुई शाला में आचार्य अग्नि स्थापन करे। तहां

---

१ अन्यान्य पद्धतियों में तीन तीन ब्राह्मणों को भोजन कराना लिखा है।

नन्तरं गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रागग्रप्रादे
मात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुलिख्य उल्लेखनक्रमेणानाि
कांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य नवीनकांस
पात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात् । ततः कुमा
माचार्यः शिष्यद्वाराऽग्नेः पश्चादक्षिणपार्श्वेऽवस्था
यति । ततः कुमारं बद्धांजलिं संबोधयति-ॐ ब्रह्मचर्यम
गामिति ब्रूहि इति प्रैषानन्तरं ॐब्रह्मचर्यमागामि
कुमार आह।ततः ॐ ब्रह्मचार्यसानीति ब्रूहीत्याचार्येणो
ॐ ब्रह्मचार्यसानीति कुमार आह ।अथ माणवकमाचा
वासः परिधापयति तत्र आचार्यपठनीयो मंत्रः-

तहाँ एक हाथ परिमित चौकोन वेदी बनाकर कुशों से इ
करनेके अनन्तर गोबरसे उसको लीपना चाहिये। फिर स्रुवे
जड़से पूर्वको अग्रभागवाली प्रादेशप्रमाण उत्तरोत्तर क्रमसे ती
रेखा खैंचकर रेखाओंके क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठ
दो अंगुलियोंद्वारा रेखाओंमें से मिट्टी उठाकर ईशानकोन
डाल देवे फिर जल से उस वेदी को सेचन करे पीछे नवी
काँसी के पात्रमें अग्नि मंगाकर अपने सन्मुख अर्थात् पश्चिमा
मुख स्थापन करे फिर आचार्य उस कुमार (बालक)
अपने शिष्यके द्वारा अग्नि के पश्चिम ओर अपनी दाहिनी त
बैठाले तदनन्तर कुमारसे हाथ जुड़वाकर कहे कि 'ॐ ब्र
चर्यमागाम्' ऐसा उच्चारण कर, इस प्रकार आज्ञा देवे ऐ
आज्ञा देनेपर कुमार कहे कि 'ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्' फिर आच
'ॐ ब्रह्मचार्यसानि' ऐसा उच्चारण कर, आचार्यके आज्ञा
उपरांत 'ॐ ब्रह्मचार्यसानि' ऐसा कुमार कहे। तत्पश्चा

येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे । ततो माणवकस्य द्विराचमनम् । अथ माणवकस्य वेष्टनत्रयेण तत्प्रवरग्रंथितां मेखलामाचार्यो बध्नाति । तत्र माणवकपठनीयो मंत्रः-ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् ।। ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसादेवयंतः।।इति वा।तत आचाराद्यज्ञोपवीत सहितभांडाष्टतयंब्राह्मणेभ्योदत्त्वा ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रःस्वकीयोपनयनकर्मविषयकसत्संस्कारप्राप्त्यर्थं इदंभां-

---

कुमार को आचार्य आगे लिखे 'ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे' इस मंत्र से वस्त्र (कौपीन) पहरावे। फिर कुमार को दो आचमन करावे। इसके अनन्तर तीन लड (लपेट) वाली और प्रवरके अनुसार ग्रन्थिवाली मूंज की मेखला आचार्य कुमार के बांध देवे। तब कुमार आगे लिखे मंत्रों को उच्चारण करे-'ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् ।। ॐ युवा सुवासाःपरिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः।।' अनन्तर परंपरानुसार यज्ञोपवीतयुक्त तथा दक्षिणासहित आठ (२४) पात्र कुमारसे आगे लिखे संकल्पद्वारा ब्राह्मणोंको प्रदान करावे। संकल्पः-अद्यामुकगोत्रः स्वकीयोपनयनकर्मविषयसत्संस्कार-

डाष्टत (त्र)यं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं यथानामेति ।तत
यज्ञोपवीतं परिदधाति माणवकः-ॐ यज्ञोपवीतमि
मंत्रस्यपरमेष्ठी ऋषिर्लिङ्गोक्ता देवतात्रिष्टुप् छंदोयज्ञो
पवीतपरिधाने विनियोगः। ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवि
प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमु
शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ इति मंत्रेण । त
ऐणेयमजिनं तूष्णीं परिधत्ते ।ततो माणवककेशपरिमि
पालाशदंडमाचार्यस्तूष्णीं तस्मै प्रयच्छति । तं च य
मे दण्ड इति प्रजापतिर्ऋषिर्दण्डो देवता । यजुर्दण
ग्रहणे विनियोगः । ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैह

प्राप्त्यर्थे इदं भाण्डाष्टत्रयं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं यथाना
गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः यथांशेन विभज्य दास्ये ॐ तत्सत् । तद
न्तर आचार्य कुमारको यज्ञोपवीत धारण करावे और कुम
आगे लिखे 'ॐ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषिर्लिङ्गो
देवता त्रिष्टुप् छन्दो यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः' इस मंत्र
यज्ञोपवीत धारण का विनियोग छोड़े फिर आगे लिखे
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्
मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥' इस मंत्र
यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। अनन्तर आचार्य कुमार
चुपचाप मृगचर्म प्रदान करे और कुमार उसको धारण कर
फिर कुमार के केश तक प्रमाण वाले पलाश (ढाक) के
को आचार्य चुपचाप कुमार के निमित्त देवे। उसको ले
कुमार आगे लिखे 'ॐ यो मे दण्ड इति प्रजापतिर्ऋषिर्दंडो देव
यजुर्दंडग्रहणे विनियोगः' इस मंत्र से विनियोग छोड़े। पश्च

यसोऽधिभूम्याम् । तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय इति मन्त्रेण माणवको गृह्णाति । तत आचार्यो वारिणा स्वमञ्जलिं पूरयित्वा कुमारस्यांजलिं तेनैवांजलिजलेन पूरयति-ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता- न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।उशतीरिव मातरः ॥ ॐ तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ इति ऋग्भिः ॥ ततः सूर्यमुदीक्षस्वेति आचार्यप्रैषानंतरं ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्च- रत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ भृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ इत्यनेनादित्यं पश्यति ।

आगे लिखे 'ॐ यो मे दंडः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् । तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय' इस मंत्र से दण्ड को ग्रहण करे। फिर आचार्य प्रथम अपनी अंजली जल से भरकर पुनः उसी जल से आगे लिखे मंत्र द्वारा कुमार की अंजली भर देवे। 'ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन महेरणायचक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।उशतीरिव मातरः। ॐ तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।' फिर नीचे लिखे मंत्रसे आचार्य कुमार को सूर्य के दर्शन करने की आज्ञा देवे-"ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।" कुमार वह अञ्जली इन मंत्रोंके सहित सूर्यके सन्मुख

अथ कुमारस्य दक्षिणांसं सहृदयं दक्षिणहस्तेन स्पृ
त्याचार्यः-ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्त
चित्तं ते अस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पति
नियुनक्तु मह्यम्।।इति मंत्रेण ।ततः कुमारस्य दक्षिणह
गृहीत्वा तं पृच्छति को नामासीति । श्रीअमुकशर्माहं
इति कुमार आह । कस्य ब्रह्मचार्यसीत्याचार्यः । भव
इति कुमार आह । पुनराचार्या भाषते-ॐ इन्द्रस्य ब्रह
चार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः-श्रीअमुकशर्मन् । अ
माणवकं बद्धांजलिं पूर्वादिदिक्षु प्रदक्षिणमुपस्थ
कारयति । अथाचार्यो माणवकं भूतेभ्यः परिददाति ।त
आचार्यस्य मंत्रपाठः-ॐ प्रजापतये त्वा परिददामी
प्राच्यां ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि इति दक्षि

छोड़ देवे। तदनन्तर कुमार के दाहिने कन्धे की तरफ अप
दाहिना हाथ डालकर आचार्य कुमार के हृदयको स्पर्श करे अ
फिर आगे लिखे 'ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्त
चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुन
मह्यम्' इस मंत्र को उच्चारण करे! फिर कुमार के दा
हाथ को पकड़कर आचार्य पूछे 'को नामासि' तब श्री
मुकशर्माहं भोः' ऐसा कुमार कहे। 'कस्य ब्रह्मचार्यसि' ऐ
आचार्य कहे, तब 'भवतः' ऐसा कुमार कहे। फिर पुनव
आचार्य कहे 'ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवाहमाचा
श्रीअमुकशर्मन्' इसके उपरांत कुमार के हाथ जुड़वा
पूर्वादि दिशाओं में प्रदक्षिण पूर्वक सूर्य के सन्मुख खड़ा करा
फिर आचार्य कुमार को भूतों के अर्थ सोंपे और वह आच

स्यां ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि इति प्रतीच्यां ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि इति उदीच्यां ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि इत्यधः ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्टचै इत्यूर्ध्वम्। ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य आचार्यस्य दक्षिणदिशि उपविशति माणवकः। ततः पुष्पचंदनतांबूलवासांस्यादाय ततः ॐ अद्यकर्तव्योपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात्। ॐ

यह मंत्र पाठ करे[1]-"ॐ प्रजापतये त्वा परिददामिति प्राच्याम्। ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि इति दक्षिणस्याम्। ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि इति प्रतीच्याम्। ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि इति उदीच्याम्। ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि इत्यधः। ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्टचै इत्यूर्ध्वम्।" तदनन्तर अग्नि की प्रदक्षिणा करके आचार्यके दक्षिणकी ओर कुमार को बैठना चाहिये फिर पुष्प, चन्दन, तांबूल तथा वस्त्रादि वरण की सामग्री हाथ में लेकर आगे लिखे 'अद्यकर्त्तव्योपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः

---

१ इसका तात्पर्य यह हैं कि, आचार्य 'प्रजापतये०' इत्यादि मंत्र से हाथ जोड़े हुए बालक को पूर्वादि दिशा में उपस्थान करावे। मंत्रों को आचार्य स्वयं पढे। (प्रजापतये त्वा) मंत्र को पढ़ता हुआ पूर्वाभिमुख बालक को उपस्थान करावे। (देवाय त्वा) से दक्षिणाभिमुख (अद्भ्यस्त्वा) से पश्चिमाभिमुख (द्यावापृथिवीभ्यां) से उत्तराभिमुख (विश्वेभ्यस्त्वा) से नीचे की दिशा को देखता हुआ (ॐ सर्वेभ्यस्त्वा) से ऊपर की दिशा में उपस्थान करावे।

वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।पुष्पचंदनतांबूलवस्त्राण्यादाय
अद्य कर्तव्योपनयनकर्मणि होतृत्वकर्म कर्तुममुकगोत्र-
ममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभि-
र्होतृत्वेन त्वामहंवृणे इति होतारं वृणुयात् ।ॐ स्वस्तीति
प्रतिवचनम् । ॐ यथाविहितं कर्म कुर्वित्याचार्येणोक्ते ॐ
करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्। ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासन
दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्नि-
प्रदक्षिणं कारयित्वाऽस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्य-
भिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते तदुपरि ब्राह्मणमुदङ्मुख-
मुपवेश्य ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य

पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे०' इस संकल्पसे ब्रह्मा का वरण करना चाहिये। तब ॐ वृतोऽस्मीति ' ब्रह्मा कहे। फिर पुष्प, चन्दन, तांबूल, वस्त्रादि सामग्री ले आगे लिखे हुए 'अद्यकर्त्तव्योपनयनकर्माणि होतृत्वकर्म कर्तुममुकगोत्र ममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनतांबूलवासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे' इस वाक्यसे ब्रह्मा को प्रदान करे। तब ब्रह्मा उस सामग्री को 'स्वस्ति, ऐसा कहकर ग्रहण करे। 'अनन्तर 'ॐ यथा विहितं कर्म कुरु' ऐसा यजमान के कहनेपर 'ॐ करवाणि ऐसा ब्रह्मा कहे। फिर अग्नि के दक्षिण की ओर शुद्ध आसन-स्थापन पूर्वक उसके ऊपर पूर्व को अग्रभाग करके कुशा बिछावे और फिर ब्राह्मणसे अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर इस यज्ञोपवीत-कर्ममें आप मेरे ब्रह्मा हूजिए ऐसा कहे। तब वह ब्राह्मण 'मैं ब्रह्मा होता हूं' ऐसा कहे फिर ब्रह्मा को उत्तराभिमुख से उस आसन् पर बैठा देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्र को आगे

कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम् । बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशाः उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तराचार्यमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नामतण्डुलपूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् । ततः पवित्र-

---

रखकर जल से भरदेवे और उसको कुशाओं से ढक देवे अनन्तर ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि के उत्तर की ओर प्रणीतापात्र को रख देना चाहिये। फिर परिस्तरण करे-मुट्ठी भर अथवा सौ कुशग्रहण करके उसके चार भाग करे। उनमें पहला भाग अग्निकोनसे ईशान दिशा तक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नितक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्र तक बिछा देना चाहिये। फिर अग्निसे उत्तरकी ओर पश्चिमको पवित्र छेदनके अर्थ तीन कुशा स्थापन करे। पवित्र बनाने के निमित्त अग्रभागसहित तथा बीचके पत्तेसे रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुश न हों ऐसे दो कुशपत्र रखे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जनकुशा, तीनसे तेरहतक अर्थात् तीन अथवा तेरह उपयमनकुशाप्रादेशमात्र (बिलस्तभर) ढाककी तीन समिधा, स्रुवा, घृत और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलों से भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब वस्तुओं को पवित्र छेदनकी कुशाओं से आगे आगे रखता

च्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां तज्जलं किंचित्त्रिरुत्क्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीं त्रिरभिषिच्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनं कृत्वाऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः अधिश्रयणं ततः कुशं प्रज्वाल्याज्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षिप्य स्रुवं त्रिःपरितप्य संमार्जनकुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यमग्नेरवतार्य त्रिः प्रोक्षणीवदुत्पूया-

---

जाय फिर पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्र छेदन करे। अनन्तर पवित्रों को हाथ में लेकर प्रणीता के जल को प्रोक्षणीपात्र में तीन बार सेचन करे फिर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण करके उसके जलको तीनबार ऊपरकी ओर फेंके फिर प्रणीताके जल से प्रोक्षणी को तीन बार सेचन करे अनन्तर पवित्रों को लेकर प्रोक्षणी के जल से पूर्व स्थापित सब वस्तुओं को सेचन करके उस प्रोक्षणीपात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के बीच में रख देना चाहिये। तब आज्यस्थाली में घृत डालकर उसको अग्नि पर चढ़ा देवे। फिर एक कुशा बालकर उसको घृत के चारों तरफ घुमाय वेदी की अग्नि में डाल देवे। तत्पश्चात् स्रुवे को अग्नि में तीन वार तपाकर संमार्जन कुशाओं के अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और मूलभाग से बाहर शुद्ध करे। फिर प्रणीतापात्र के जल से स्रुवे को सेचन करे और उसको तीन बार तपाकर दक्षिण की

वेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं कृत्वा पुनः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायोपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीं घृताक्तास्तिस्रः समिधः प्रक्षिपेत् । उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानु-र्ब्रह्मणाऽन्वारब्धःसमिद्धतमेऽग्नौस्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति। तत्र तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थितघृतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिंद्राय० । इत्याघारौ ।

ओर रख देना चाहिये। तदुपरांत उस घृत को अग्नि से उतार-कर प्रोक्षणीकी नाईं तीन बार पवित्रों से उछाले और फिर देखे कि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु तो नहीं पड़ी है यदि पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये। फिर प्रोक्षणी के जलको पवित्रोंसे तीन वार उछाले और फिर खड़ा होकर यजमान उन उपयमन कुशाओं को बायें हाथ में लेकर मन में प्रजापति का ध्यान करता हुआ घृत में भिजोकर तीनों समिधाओं को स्वाहा शब्दके साथ अग्निमें चुपचाप डाल देवे। फिर आसनपर बैठकर पवित्र सहित प्रोक्षणी का जल हाथ में लेकर दक्षिण क्रम से वेदी के चारों ओर सेचन करे। फिर उन पवित्रों को प्रणीतापात्र में रख देना चाहिये। अनन्तर दाहिनी जानु नवाय और ब्रह्मा से मिलकर प्रज्वलित अग्नि में स्रुवे के द्वारा नीचे लिखे मंत्रों से घृत की आहुति देवे प्रत्येक आहुति के अनन्तर स्रुवे में शेष घृत को प्रोक्षणी पात्र में डालता जाय। मन्त्र यथा-ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा।

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इ
सोमाय० इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०
ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इ
सूर्याय० एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने व
णस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअव या सिसीष्ठाः । यजिष्ठ
वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्म
स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो
भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व न
वरुण ँरराणो वीहि मृडीक ँसुहवो न एधि स्वाह
इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च
सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धे
भेषज ँस्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्न
स्वाहा इदमग्नये० ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्या
ज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा० इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इ
वायवे । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः
ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्म
स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। ॐ सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोत
नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण ँरराण
व्वीहि मृडीक ँसुहवो न एधि स्वाहा ।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्०
ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्त्वमया असि ।अयान
यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ
ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः

सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । इति स्विष्टकृद्धोमः । ततः संस्रवप्राशनम् आचमनं च । ततो ब्रह्मणे दक्षिणादानम् । ॐ अद्यैतस्मिन्नुपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवत-

---

तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजा०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्।ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।इति स्विष्ट कृद्धोमः। फिर घृतमिश्रित प्रोक्षणी पात्र के जल का आचमन करे और फिर शुद्ध जल से आचमन करे। अनन्तर दक्षिणासहित पूर्णपात्रको आगे लिखे 'ॐ अद्य एतस्मिन्नुपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणेदक्षिणां तुभ्य-

ममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणा दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः। ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति पवित्राभ्यां जलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम्। ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य घृतेनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इदं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा इति बर्हिर्होमः तत आचार्यः कुमारस्यानुशासनं करोति। ॐ ब्रह्मचार्यसीत्याचार्यः। ॐ असानीति ब्रह्मचारी।

महं सम्प्रददे' इस मंत्रसे दान करके ब्रह्मा के निमित्त देदे और ब्रह्मा उसको 'ॐ स्वस्ति' कहकर लेवे। फिर ब्रह्मग्रंथि को खोल देवे तिसके पश्चात् 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु' ऐसा कहकर पवित्रों से जल ग्रहण पूर्वक अपने मस्तकपर सेंचन करे। फिर 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' यह मंत्र उच्चारण करके ईशान कोन में प्रणीता को उलटा कर देना चाहिये। तदनंतर परिस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुशा बिछाये थे उसी क्रमसे उनको उठाकर घृत में बोर हाथसे ही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्र द्वारा अग्नि में डाल देवे। फिर आचार्य आगे लिखे वाक्यों से कुमार को शिक्षा करे। अर्थात् 'ॐ ब्रह्मचार्यसि' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ असानि' ऐसा ब्रह्मचारी कहे। 'ॐ

ॐ अपोऽशान इत्याचार्यः। ॐ अशानीति कुमार आह। ॐ कर्म कुर्वित्याचार्यः। ॐ करवाणीति माणवकः। ॐमा दिवासुषुप्स्व इत्याचार्यः। न स्वपानीति कुमारः। ॐ वाचं यच्छ इत्याचार्यः। ॐ यच्छानीति कुमारः। ॐ समिधमाधेहीत्याचार्यः। ॐ आदधानीति माणवकः। ॐ अपोऽशानेत्याचार्यः। ॐ अशानीति कुमारः। अथाग्नेरुत्तरतः प्रत्यङ्मुखायोपविष्टायाचार्यचरणोपसंग्रहणपूर्वकमुपसन्नायाचार्यं समीक्षमाणायाचार्यः स्वयमपि समीक्षितायास्मै निवारितशंखतुर्यादिशब्द इष्टांशके सावित्रीमन्वाह। तत्र प्रथमावृत्तौ ॐ भुर्भूवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।धियो यो नःप्रचोदयात्॥

अपोऽशान ' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ अशानि' ऐसा ब्रह्मचारी कहे। 'ॐ कर्म कुरु' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ करवाणि' ऐसा कुमार कहे। 'ॐ मा दिवा सुषुप्स्व' ऐसा आचार्य कहे। 'न स्वपानि' ऐसा कुमार कहे। ॐ वाचं यच्छ' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ यच्छानि' ऐसा कुमार कहे 'ॐ समिधमाधेहि' ऐसा आचार्य कहे। ॐ आदधानि' ऐसा कुमार कहे। 'ॐ अपोऽशान' ऐसा आचार्य कहे। 'ॐ अशानि' ऐसा कुमार कहे। इसके उपरान्त अग्नि के उत्तर की ओर पश्चिमको मुख किये आचार्यके चरणोंको पकड़कर और उनके मुख को देखता हुआ और आचार्य भी कुमार के मुख को देखता हुआ अपने समीप बैठे हुए कुमारके निमित्त स्वयं बाजों को बंदकर लग्नके उपस्थित होने पर गायत्री का उपदेश करे अर्थात् आचार्य आगे लिखे 'ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स-

ॐ पुनर्वारद्वयं अत्र तु सहपाठी विशेषः । अथ माणवक आचार्यदक्षिणदिशि अग्निपश्चिमोपविष्टो घृताक्तशुष्क-निषिद्धेतरेन्धनेन जुहुयात् । ततः ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्नेः सुश्रवा असि । ॐ एवं मा ँसुश्रवः श्रौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥ ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा पर्युक्ष्य उत्थाय स्वप्रादेशमितां घृताक्तपलाशसमिधमादाय

वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः[१] प्रचोदयात्' इस मन्त्र को कुमार के दाहिने कान में तीन बार उप-देश करे। फिर कुमार आचार्य के दक्षिण की ओर पश्चिम में बैठा हुआ घृत से भिगोकर सूखे और शुद्ध ईंधन से आगे लिखे 'ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु स्वाहा। ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि स्वाहा। ॐ एवं मा ँसुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा। यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासं स्वाहा।' इन मंत्रों से होम[२] करे। फिर जल हाथ में लेकर अग्नि के चारों ओर सेचन करे। फिर उठकर प्रादेशप्रमाण समिधा को ग्रहण-पूर्वक घृत में भिगोकर आगे लिखे 'ॐ अग्नये समिधमाहार्षं

---

१ यहां तीन वार कहने का तात्पर्य यह है कि, मंत्र के तीन भाग करके उप-देश करे। किन्तु इस पद्धतिकार के मतानुसार मन्त्र का एक साथ ही उपदेश करे यह विशेष है।

२ यहां यह प्रतीत होता है कि, आगे लिखे हुए पांच मंत्र तो वेदी से इधर उधर गिरी हुई जो समिधा तथा अग्नि इत्यादि है उसको पुनर्वार अग्नि में एकत्रित करने के हैं और शेष समिधाधानके अर्थात् समिधाको घृत में भिगोकर आहुति देने के हैं।

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसे एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वीब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयासँ स्वाहा इति मंत्रेण जुहुयात् । एवं समिदन्तरद्वयं जुहुयात् । ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं पर्युक्ष्य तूष्णीं पाणी प्रतप्य मुखं प्रतिमंत्रान्तेऽवमृशति । ॐ

बृहते जातवेद से यथा त्वमग्ने समिधा समिध्य से एवमहमायुषा मेधयावर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयासँ स्वाहा' इन मंत्रों से आहुति देवे। तत्पश्चात् इसी प्रकार और इसी मंत्र से पृथक् पृथक् दो समिधाओंकी आहुति देवे। फिर उन्हीं पाँच मत्रों से अग्नि को एकत्रित करे। (अथवा होम करे)। "अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु स्वाहा। ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि स्वाहा । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा। ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासं स्वाहा।" तदनन्तर हाथ में जल लेकर अग्नि के चारों ओर सेचन करे। तदनन्तर चुपचाप दोनों हाथों को अग्निमें तपाकर आगे लिखे हुए प्रत्येक मंत्रके साथ अपने मुखको

तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि। ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि। ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु। ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु। ॐ मेधां मेऽश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ॥ ततः सर्वगात्रादिषु दक्षिणपाणिना स्पर्शः। अत्र प्रत्येकं मंत्रः ॐ अङ्गानि च म आप्यायन्तां इति सर्वगात्रालंभने। ॐ वाक्य म आप्यायतामिति मुखालंभने। ॐ (प्रा) घ्राणश्च म आप्यायतामिति नासिकयोः। ॐ चक्षुश्च म आप्यायतामिति चक्षुषोः। ॐ श्रोत्रं च म आप्यायतामिति मंत्रपाठमात्रम्। ततो दक्षिणकरानामिकाग्रगृहीत-

---

स्पर्श करे। "ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि। ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि। ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु। ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु। ॐ मेधां मेऽश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ" फिर दाहिने हाथको तपाकर सब शरीरको स्पर्श करे। उन सब अंगों के स्पर्श करने का मंत्र आगे लिखा है-ॐ अंगानि च म आप्यायन्ताम्। यह मंत्र उच्चारण करके सब शरीरको स्पर्श करे। ॐ वाक् च म आप्यायताम्। यह मंत्र उच्चारण करके मुख को स्पर्श करे। ॐ (प्रा) घ्राणश्च म आप्यायताम्। यह मंत्र उच्चारण करके नासिका को स्पर्श करे। ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम्। यह मंत्र उच्चारण करके नेत्रों को स्पर्श करे। ॐ श्रोत्रञ्च म आप्यायताम्। ऐसा उच्चारण करके कानों को स्पर्श करे। ॐ यशो बलञ्च म आप्यायताम्

भस्मना ललाटे ग्रीवायां दक्षिणबाहुमूले हृदि च त्र्यायुषं कुर्यात् । तत्र यथासंख्येन मंत्रचतुष्टयम् । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् ॐ यद्देवेषु त्र्ययुषम् इति दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि । ततो व्यस्तपाणिभ्यां पृथिवीं स्पृशन्नभिवादनं कुर्यात् । तत्र प्रकारः- ॐ अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहंभोवैश्वानर त्वामभिवादये । ततोऽनेनैव क्रमेण संबोध्य वरुणमभिवाद्याचार्यं तथैवाभिवादयेत् । ततः आयुष्मान् भव

इस मंत्र का केवल उच्चारण ही कर लेना चाहिये। तदनन्तर दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीद्वारा स्रुवेमें लगाई हुई होमीय भस्म को गले में दक्षिण बाहुमूल और हृदय में त्र्यायुष करे। उन चारों मंत्रों को क्रमानुसार लिखते हैं। अर्थात् ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः ऐसा कहकर ललाट में ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं ऐसा उच्चारण करके गलेमें, ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं यह पढ़कर दक्षिणबाहुमूलमें और ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं ऐसा बोलकर हृदय में उस स्रुवेकी भस्मको लगाना चाहिये। फिर बायें हाथ के ऊपर दाहिने हाथको रखकर पृथ्वी को स्पर्श करता हुआ आगे लिखे वाक्यका उच्चारणपूर्वक अग्निके निमित्त प्रणाम करे।'ॐ अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरो हममुकशर्माहंभोवैश्वानरत्वामभिवादये' फिर इसी क्रमानुसार'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वरुण त्वामभिवादये' फिर अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो गुरो त्वामभिवादये' तिस पीछे 'आयुष्मान् भव सौम्य' ऐसा कहकर आचार्य कुमारको आशीर्वाद देवे। अन-

सौम्येत्याचार्यो ब्रूयात् । ततो भिक्षापात्रमादाय प्रथमं मातुः सकाशात् ॐ भवति भिक्षां(मे)देहि इति प्रार्थनानन्तरं तद्दत्तां चादायाचार्याय निवेदयेत् । तथैव भिक्षान्तरं याचेत । तत आचार्येण भुंक्ष्वेत्यनुज्ञातो भिक्षां स्वीकुर्यात् । ततः फलपुष्पचन्दनघृतपूर्णस्रुवेण ब्रह्मचारि दक्षिणकरस्पृष्टेनाचार्यः पूर्णाहुतिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः- ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँ संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इदमग्नये० । ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः इति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवा-

---

न्तर भिक्षापात्र हाथ में लेकर ब्रह्मचारी प्रथम अपनी माता से भिक्षा मांगने को जावे और 'ॐ भवति भिक्षां (मे) देहि' ऐसा कहकर भिक्षा मांगे फिर मांगने के पीछे मिली हुई भिक्षा को गुरु (आचार्य) के अर्थ निवेदन करे। फिर इसी प्रकार और भिक्षा माँगनी चाहिये तब पीछे आचार्य के 'भुंक्ष्व' ऐसी आज्ञा देने पर कुमार भिक्षा को ग्रहण करे। तदुपरांत फल, पुष्प, चन्दन और घृत इन सब वस्तुओं से स्रुवे को परिपूर्ण कर उसमें ब्रह्मचारी के दाहिने हाथ का स्पर्श कराय आचार्य आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इदमग्नये०' इस मन्त्र से पूर्णाहुति देवे। फिर स्रुवे से वेदी की भस्म ग्रहणपूर्वक उसको दाहिने हाथ की अनामिका द्वारा लेकर त्र्यायुष करे अर्थात् 'ॐ

याम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि ।इति त्र्यायुषं कुर्यात्। कुमारपक्षे'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति विशेषः । अथ क्षारलवणमधुमांसादिनिवृत्तिः उद्धृतजलस्नानं दंडकृष्णाजिनधारणंवृक्षारोहणविषमभूमिलंघननग्नस्त्रीनिरीक्षणस्त्रीसंभोगव्यसनव्यावृत्तिरिति ब्रह्मचारिणो नियमाः । तद्दिने ब्रह्मचारी वाग्यतोऽहः शेषं स्थित एव गमयेत् । ततः सायंसंध्यां कृत्वा तस्मिन्नेवाग्नौ पूर्ववत्पर्युक्षणपरि-

---

त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह कहकर माथे में 'कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह उच्चारणकर गले में, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' बोलकर दक्षिणबाहुमूल में और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके हृदय में भस्म को लगाना चाहिये। किन्तु जब कुमार के त्र्यायुष करे अर्थात् स्रुवे की भस्म लगावे तो 'तन्नो अस्तु' के स्थान में 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करना चाहिये। फिर आगे लिखे वाक्यों से ब्रह्मचारी को उपदेश करे। अर्थात् खारी वस्तु लवण, मधु (मद्य), मांस इनकी निवृत्ति करे अर्थात् इनको भोजन नहीं करना चाहिये। उद्धृत जल से स्नान करे, दण्ड और कृष्णाजिन (काले मृग का चर्म) धारण करे, वृक्षपर चढ़ना, ऊँची नीची भूमि को कूदना, नंगी स्त्री को देखना, स्त्री के संग मैथुन करना, व्यसन अर्थात् जुए (चौसर, ताश इत्यादि) में आसक्त होना इत्यादि दुष्कर्मों को त्याग देना ही ब्रह्मचारी के नियम कहे गये हैं। उस यज्ञोपवीत के दिन ब्रह्मचारी मिथ्या भाषणादि त्याग पूर्वक चुपचाप यज्ञोपवीत कर्म से बचे हुए दिन को बितावे। फिर सायंकाल की सन्ध्या

समूहने कृत्वा वाचं विसृजेत् । परिसमूहनान्ते शुष्कनिषिद्धेतरेन्धनस्याग्नौ प्रक्षेपः । ततः संध्यामुपास्य प्रतिदिनं सायंप्रातरपि ब्रह्मचारिणा कर्त्तव्यः । इत्युपनयनसंस्कारः ॥१०॥

अथ वेदारंभः ॥११॥

तत्र कृतनित्यक्रिय आचार्यः कुशैर्हस्तमात्रपरिमितां भूमिंपरिसमुह्य तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन उत्तरोत्तरतःप्रागग्रप्रादेशमात्रं त्रि-

---

कर उसी वेदिका की अग्नि में पूर्ववत् जल द्वारा चारों ओर वेदी का सेचन करे। फिर पूर्वोक्त पांच मन्त्रों के द्वारा अग्नि को एकत्रित करके वाणी को उच्चारण करे अर्थात् यह उपरोक्त कार्य करके तब फिर बातचीत कर सकता है। उसके उपरान्त अग्निके एकत्रित करने पर शुद्ध अथ च सूखी समिधा ग्रहणपूर्वक घृतमें भिजोकर पूर्ववत् अग्निमें होम करे। इसी नियम से ब्रह्मचारी को प्रतिदिन करना चाहिये।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु पंडितकन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दीटीकायाम्

उपनयनसंस्कारः समाप्तः ॥१०॥

अब वेदारंभसंस्कार लिखा जाता है-तहां नित्य कृत्य को समाप्त करके आचार्य एक हाथ की बराबर शुद्ध भूमि में वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्धकर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देवे। फिर गोबर से उस वेदी को लीपकर स्रुवे के

रुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य कांस्येनाग्निमानीयाभिमुखमुपसमाधाय पुष्पचन्दनताम्बूलवस्त्राण्यादाय-ॐ अद्यकर्त्तव्यवेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्त्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात् ।ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् ।ॐ यथाविहितंकर्म कुर्वित्याचार्यः। ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेण भ्रामयित्वा अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय

मूलसे उत्तर उत्तर को पूर्व की ओर अग्रभागवाली प्रादेशप्रमाण तीन रेखा खैंचे और रेखा खैंचने के क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठद्वारा उन रेखाओं से मिट्टी उठाकर ईशान कोने में फेंक देवे। फिर जलद्वारा वेदी को सेचन कर कांसी के पात्र में अग्नि लाय अपने समीप स्थापन करे। अनन्तर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल; वस्त्र लेकर आगे लिखे हुए संकल्प से ब्रह्मा का वरण करे-'ॐ अद्य कर्तव्यवेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन, तांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' तब ब्रह्मा 'ॐ वृतोऽस्मि' कहकर उस दक्षिणाको ले लेवे। फिर 'ॐ यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा आचार्य कहे। तब 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्रह्मा के कहने पर अग्नि के दक्षिण की ओर शुद्ध आसन बिछावे और उस आसन पर पूर्वाग्र कुशाओं को बिछाय ब्रह्मा को अग्नि की प्रदक्षिणा कराय 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कहे।

ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेय्यादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् । ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली संमार्जनकुशाः उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं पूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् । ततः

तब ब्रह्मा के 'ॐ भवानि' ऐसा कहने पर उसको उत्तर मुख करके उस आसनपर बैठा देवे। फिर प्रणीतापात्र को आगे रखे और उसको जल से भरकर कुशाओं द्वारा आच्छादन कर देवे। पश्चात् ब्रह्मा के मुख को देखकर अग्नि के उत्तर की ओर कुशाओं के ऊपर रख देवे। तदनन्तर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुशाओं को लेकर उसके चार भाग करे। पहिला भाग अग्निकोन से लेकर ईशान कोनतक, दूसरा भाग ब्रह्मासे अग्नि (वेदी) तक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्र तक बिछा देना चाहिये। फिर अग्निके उत्तर से पश्चिम दिशा में पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रखे और पवित्र बनाने के लिये अग्रभाग सहित तथा बिचले पत्ते से रहित दो कुशपत्र रखे। अनन्तर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पाँच संमार्जन कुशा, तीन से तेरह तक उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत, पूर्णपात्र इन सब वस्तुओं को

पवित्रच्छेदनकुशैःपवित्रेछित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रेनिधाय द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्त-राग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्।ततःप्रोक्षणीपात्रं वाम-हस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां त्रिरु-द्दिङ्गनम्।ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणी-जलेन यथासादितवस्तून्यभिषिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं निरू-प्याधिश्रयणम् । ततः कुशं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चोपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा अग्नौ तत्प्रक्षेपः । ततस्त्रिः स्रुवप्रत-पनं संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य

पवित्रच्छेदन कुशाओं से क्रमशः पूर्व पूर्व की ओर रखता जाय। फिर पवित्रच्छेदन के कुशाओं से पवित्रोंको छेदन करे। पीछे पवित्र हाथ में लेकर प्रणीता के जल को प्रोक्षणीपात्र में डाले। पश्चात् अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्रों को ग्रहण कर तीन बार प्रोक्षणीपात्र का जल ऊपर को उछाले। फिर प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथकी अना-मिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्रको पकड़कर तीन बार प्रोक्षणी के जल से ऊपरको सेचन करे अनन्तर प्रणीता के जलसे प्रोक्षणीपात्रको सेचनकर प्रोक्षणीके जलसे पूर्व स्थापित सब वस्तुओं को सेचन करे। फिर प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता और अग्निके बीचमें रखदेवे फिर आज्यस्थालीमें घृतडालकर अग्नि पर रख देवे पश्चात् एक कुशको बाल लेवे और उसको दक्षिणक्र-मसे घृत तथा अग्निके ऊपर घुमाकर अग्निमें डाल देवे।फिर स्रुवेको अग्निमें तीनवार तपावे और संमार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर

प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात् । ततः आज्यमग्निप्रदक्षिणं भ्रामयित्वाऽवतार्याग्रे निदध्यात् । ततः आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम् । अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं ततः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायोपयमनकुशानादाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रेपवित्रे निधाय ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात् । तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये स्रुवाव-

---

और मूलभागसे बाहर उस स्रुवेको शुद्ध करे।अनन्तर प्रणीताके जलसे उस स्रुवेको और पुनर्वार तीनवार तपाकर अग्निके दक्षिणकी ओर रख देवे। फिर घृतको अग्निसे उतारे और अग्निके चारों तरफ घुमाकर अपने आगे रख लेवे अनंतर पवित्रों से घृतको प्रोक्षणीपात्रकी नाईं तीन वार उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे। फिर पवित्रोंसे प्रोक्षणीपात्रके जलको तीन वार उछाले इसके पीछे खड़ा होजाय और बांये हाथमें उपयमनकुशाओंको लेकर मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ चुपचाप घृतसे भिजोई हुईं तीनों समिधाओंको स्वाहाशब्दके साथ अग्निमें डालदेवे।फिर आसनपर बैठकरपवित्रों के सहितप्रोक्षणी के जलको हाथमें लेकर दक्षिण क्रमसे अग्निके चारों ओर सेचन करे और पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रखदेवे।अनंतर ब्रह्माके साथ एकत्रित हो दाहिनी जानुको नवाय जलती हुई अग्नि में होम करे। प्रथम चार आहुति देने के समय जो स्रुवेमें घृतादि शेष रहे

स्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ततः प्राकृतोऽनन्वारब्धकर्तृको होमः । ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय० । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः० । एताः सामान्याहुतयः ।ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः० । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदम् ऋषिभ्यः । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै० । ॐ मेधायै स्वाहा

उसको प्रोक्षणीपात्रमें डाल देवे।आहुति मंत्र आगे लिखे हैं(उपरोक्त चार आहुतियोंमें पहिली दो आहुति आघार और दूसरी दो आहुति आज्यभाग कहलाती हैं। आघार की पहली आहुति मानसिक अर्थात् मनसे मंत्र बोलकर दी जाती है।) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ततः प्राक्तोऽनन्वारब्धकर्तृको होमः । अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः । एताः सामान्याहुतयः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्य० । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदम् ऋषिभ्यः ० । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै० । ॐ मेधायै

इदं मेधायै० । ॐ सदसस्पतये स्वाह इदं सदसस्पतये० । ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये० । ततोऽन्वारब्धकर्तृको होमः । तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्चसत्वमित्वमया असि ।

स्वाहा इदं मेधायै० । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये०। ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये० । ततोऽन्वारब्धकर्त्तृको होमः । (आहुतियों के अनन्तर स्रुवे में शेष रहे घृतादि को प्रोक्षणीपात्र में डालते जाना चाहिये) ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एताः महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यन्भिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो

अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ्स्वाहा इद-मग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः।तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतःस्वर्काःस्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँ् श्रथाय । अथा वयमा-दित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरु-णाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा ।इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । इति स्विष्टकृद्धोमः । ततः संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ॐ अद्य कृतैतद्वेदारंभहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्र-

---

धेहि भेषज ँ् स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु-र्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०।ॐ उदुत्तमं वरुणपाश-मस्मदवाधमं वि मध्यम ँ्श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवा-नागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्व-प्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इद-मग्नये स्विष्टकृते०। इसके उपरांत प्रोक्षणीपात्र के घृत मिश्रित जल का प्राशन करना चाहिये। फिर शुद्ध जल से आचमन करे अनन्तर आगे लिखे संकल्प को उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्र का दान करके ब्रह्मा को देवे-'ॐ अद्य कृतैतद्वेदारम्भहोमकर्मणि कृ-

ह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः । ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः । इति मंत्रेण ऐशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात् । तत आस्तरणबर्हिरानीय घृतेनाभिधार्य क्रमेण हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा । इति बर्हिर्होमः । ततः काश्मीरगमनम् । तत इष्टांशके वेदा-

---

ताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' तब ब्रह्मा उसको 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कहकर ग्रहण करे। फिर ब्रह्मग्रंथि को खोल देना चाहिये। तत्पश्चात् आगे लिखें 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मंत्रद्वारा पवित्रों से प्रणीतापात्र का जल लेकर अपने मस्तक पर मार्जन करे। तदुपरांत आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यश्च वयं द्विष्मः' इस मंत्र द्वारा प्रणीतापात्र को ईशान, कोनमें उलट देवे। फिर पूर्व बिछाई हुई कुशाओंको ग्रहणपूर्वक घृत में बोरकर आगे लिखे'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मतसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मंत्रसे अग्निमें होम कर देवे। इसके पीछे विद्याध्ययन के निमित्त ब्रह्मचारीको काश्मीर (अथवा काशी) भेज देना चाहिये। फिर

रम्भं गुरुः कारयेत् । तत्र क्रमः-ॐ भूर्भुवः स्वः तत्स-वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥ इति प्रणवान्तं पठित्वा पंक्तिनमस्कारं च कारयित्वा ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥ ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे । इति कण्डिकान्तरं वा फक्किकां वा पाठयेत् । ततः सप्रणवं स्वस्ति वाचयित्वा उत्थाय फलपुष्पसमन्वितब्रह्मचारि-दक्षिणकरस्पृष्टेन घृतपूर्णेन पूर्णाहुतिं दद्यात्-ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँ्सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः इति पूर्णाहुतिः । तत उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षि-

---

लग्नके उपस्थित होनेपर गुरु ब्रह्मचारी को वेदाध्ययन कराना आरंभ करावे। उसका क्रम यह है-"ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।धियो यो न:प्रचोदयात् ॐ"इस प्रकार प्रणवान्त गायत्री पढ़ाकर नमस्कार करावे फिर आगे लिखे हुए 'ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन। ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे' इस मंत्रको उच्चारण करावे। अनन्तर 'ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे' इस कण्डिका अथवा अन्य किसी कण्डिकाको वा किसी शास्त्रकी फक्किकाको पढ़ावे फिर प्रणव (ॐ) का उच्चारण करा देवे। और पीछे स्वस्तिवाचन करावे। तदन्तर उठकर स्रुवे में फल पुष्प तथा घृत भरकर ब्रह्मचारी का हाथ स्पर्श कराय आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँ् सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवा:' इस मंत्र से पूर्णा-

णानामिकाग्रगृहीतभस्मना त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ।ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । अनेनैव क्रमेण ब्रह्मचारिललाटादावपि । तत्र तत्ते इति विशेषः । इति वेदारंभः ।।११।।

अथा समावर्तनम् ।।१२।।

तत्र शुभे दिने प्रह्वीभूय आचार्यं स्नास्यामीति कुमार आचार्यं भाषते ।तत्र स्नाहीत्याचार्यः ।।ततो ब्रह्मचारिणि आचार्यसन्निहितदक्षिणदिशि उपविष्टे कृतस्नानादि-

---

हुति करानी चाहिये। पश्चात् आसन पर बैठकर स्रुवे से होमकी भस्म ले दक्षिण हाथकी अनामिका अंगुलीद्वारा फिर उस स्रुवे से भस्म लेकर 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' ऐसा कहकर माथे में 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह उच्चारण करके गले में 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' यह कहकर दक्षिणबाहुमूल में और 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा कहकर हृदय में लगानी चाहिये। फिर इसी क्रमसे ब्रह्मचारी के त्र्यायुष करे अर्थात् भस्म लगावे किन्तु जब ब्रह्मचारी के लगावे तो 'तन्नो अस्तु' के स्थान में 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे।। इति वेदारम्भसंस्कारः ।।११।।

अब समावर्तन संस्कार लिखा जाता है-किसी शुभ दिन में नम्र होकर ब्रह्मचारी आचार्य से प्रार्थना करे कि-'मैं स्नान करूंगा' तब आचार्य ब्रह्मचारी से कहे कि 'स्नाहि' अर्थात् स्नान कर। फिर आचार्य के दाहिनी ओर समीप में ब्रह्मचारी के

राचार्यः कुशैर्हस्तमात्रां भूमिं परिसमुह्य तानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेनोत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेण मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य कांस्येनाग्निमानीय प्रत्यङ्मुखं निदध्यात् । ततः पुष्प-चन्दनताम्बूलवासांस्यादाय ॐ अद्यामुकस्य कर्तव्य समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तु-ममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूल-वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । वृतोऽस्मीति प्रति वचनम्।यथाविहितं कर्म कुर्वित्यभिधाय ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्राग-

---

बैठ जाने पर जो कि स्नानादि नित्यकर्म से निश्चिन्त हो चुका है ऐसा आचार्य शुद्धभूमि में इस प्रमाण वेदी रचकर उसको तीन कुशाओं से शुद्ध कर उन कुशाओं को ईशानकोन में डाल देना चाहिये। फिर गोबर से वेदी को लीपकर स्रुवे के मूल से क्रमशः उत्तर की ओर को तीन रेखा खैंचकर रेखा खैंचने के क्रमानु-सार मिट्टी उठाकर जल से सेचनपूर्वक कांसी के पात्र में अग्नि लाय उत्तराभिमुख स्थापित करे। पीछे पुष्प, चन्दन, ताम्बूल और वस्त्र लेकर आगे लिखे 'ॐ अद्यामुकस्य कर्तव्यसमावर्तन-होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकश-र्माणं ब्राह्ममेभिःपुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहंवृणे' इस संकल्पद्वारा ब्रह्माका वरण करे। तब ब्रह्मा 'वृतोऽस्मि' ऐसा उच्चारण करके उस सामग्रीको लेवे।फिर 'यथाविहितं कर्मकुरु' ऐसा आचार्य कहे। अनंतर 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्रह्मा के कहने-पर अग्नि के दक्षिण की ओर शुद्ध आसन बिछाय उसके ऊपर

ग्रान् कुशानास्तीयास्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्राह्मणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याऽग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाऽऽग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तमग्नितःप्रणीतापर्यंतम्। ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयंपवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भंकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशा उपय-

---

पूर्वको जिनका अग्रभाग हो ऐसे कुशा बिछाकर इस समावर्तन संस्कारमें आप मेरे ब्रह्मा हूजिये ऐसा कहकर ब्रह्मा के 'ॐ भवानि' कहने पर उसको उत्तरमुख करके उस आसन पर बैठा देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्र को आगे रखकर जल से परिपूर्ण करे और उसको कुशाओं से ढककर ब्रह्मा के मुख को देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओं पर रख देवे। फिर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुशा लेकर उसके चार भाग करे। पहिला भाग अग्निकोन से ईशानकोन तक, दूसरा भाग ब्रह्मासे अग्नि (वेदी)तक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायु कोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापर्यंत बिछा देना चाहिये। फिर अग्नि के उत्तर पश्चिम दिशा में पवित्र छेदन के लिये तीन कुशा रखे और पवित्र बनाने के निमित्त अग्रभाग सहित तथा बीच के पत्ते से रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुश पत्र न हो ऐसे दो कुशपत्र रखे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जन कुशा, तीन से तेरहतक उपयमन-

मनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुव आज्यं पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् । ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधायानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पूयप्रोक्षणीपात्रं वामकरेणादायानामिकांगुष्ठगृहीतपवित्राभ्यां तज्जलं किंचित्त्रिः प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तून्यभिषिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । तत आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः अधिश्रयणम् । ततस्तृणं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चोपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत् प्रक्षिप्य स्रुवं त्रिः

कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत इन सब वस्तुओं को पूर्वपूर्व की तरफ रखता जावे। तत्पश्चात् पवित्र छेदन की कुशाओं से पवित्रोंको छेदन करे और पवित्रयुक्त हाथ से प्रणीतापात्र का जल लेकर प्रोक्षणी में तीन बार रखे। फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्रों को ग्रहण करके प्रोक्षणी के जल को तीन बार उछाले। पश्चात् प्रोक्षणीपात्र को बायें हाथमें उठाकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्रों को ग्रहणपूर्वक प्रोक्षणी के जल को तीन बार फेंके। प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको सेचन करे। फिर प्रोक्षणी के जलद्वारा पूर्वस्थापित वस्तुओं को सेचन कर प्रोक्षणीपात्र को अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देवे। इसके पीछे आज्यस्थाली में घृतको रखे और फिर उस आज्यस्थाली को उठाकर वेदी की अग्नि में स्थापन करे। फिर एक कुशा बाल लेवे और उसको घृत तथा अग्नि के चारों तरफ घुमाकर अग्नि में ही डाल देवे।

प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्वस्य दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यमग्निं प्रदक्षिणं भ्रामयित्वाऽवतार्य्य त्रिः प्रोक्षणीवदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं कृत्वा पुनः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम् । तत उत्थायोपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्य्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् ।

अनंतर स्रुवे को अग्नि से तीन वार तपाकर संमार्जनकुशाओं के अग्रभाग से भीतर और मूलभाग से बाहर शुद्धकर प्रणीतापात्र के जलसे सेचन करे फिर दूसरी बार तपाकर वेदी के दाहिनी तरफ रख देवे। घृत को अग्निसे उतार लेवे और उसको अग्निके चारों तरफ घुमाता हुआ आगे रखकर प्रोक्षणी की नाईं पवित्रोंसे तीन वार उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अशुद्ध वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर बाहर फेंक देवे। फिर पूर्ववत् प्रोक्षणी के जलको पवित्रों से उछाले और फिर खड़ा होकर उपयमन कुशाओं को बायें हाथ में ले मन से प्रजापति का ध्यान करता हुआ चुपचाप तीनों समिधाओं को घृत में बोरकर स्वाहा शब्दके साथ अग्निमें डाल देवे। फिर पीछे आसन पर बैठकर पवित्र सहित प्रोक्षणीके जलको दाहिने हाथ में लेकर दक्षिण क्रमसे अग्निके चारों ओर सेचन करे फिर पवित्रों को प्रणीतापात्र में रख देवे। पश्चात् दाहिनी जानुको

तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ततोऽनन्वारब्धकर्तृकहोमः । ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय० । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० । ॐ छंदोभ्यः स्वाहा इदं छंदोभ्यः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यो० । ॐ श्रद्धायै स्वाहा

नवायकर ब्रह्मासे एकत्रित हो प्रज्वलित अग्निमें स्रुवे के द्वारा घृतकी आहुति देवे। पहली चार आहुतियों में प्रत्येक आहुति के अनन्तर स्रुवे में शेष रहे हुए घृत को प्रोक्षणीपात्र में डालता जाय (यहां का शेष विवरण पीछे कई वार लिखा जा चुका है वहाँ देख लेना) आहुतिके मंत्र निम्न लिखित हैं-'ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम । इत्याघारौ ।ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०।ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०।इत्याज्यभागौ (उनसे आगेकी आहुतियाँ भी ब्रह्मासे अयुक्त होकर ही दी जाती हैं)ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय० । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः० । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः०। ॐ ऋषिभ्यः

इदं श्रद्धायै० । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै० । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये० । ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये० । ततो ब्रह्मणाऽन्वारब्धो जुहुयात् । अत्राहुतिदशतये तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थिताज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः ।यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ्सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।यव यक्ष्व नो वरुण ँ्रराणो वीहि मृडीक ँ्सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अया-

---

स्वाहा इदं ऋषिभ्य०।ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै०।ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै०। ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये०। ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये०। फिर ब्रह्मा से मिलकर ही होम करे। यहां दश आहुतियों में प्रत्येक आहुति के पीछे स्रुवे में शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्र में डालता जाय। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ्सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् ०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँ्रराणो व्वीहि मृडीक ँ्सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्व-

श्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ् स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँ् श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् ।। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् ।। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । इति स्विष्टकृत् । ततः संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ॐ अद्य कृतैतत्समा-

---

मित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ् स्वाहा इदमग्नये । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँ् श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तम् ।। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम् ।। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इति स्विष्टकृत् ।। फिर प्रोक्षणीपात्र के घृतमिश्रित जल का प्राशन करे और इसके पश्चात् शुद्ध जल से आचमन कर लेना चाहिये। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ अद्य कृतैतत्समावर्त्तनहोमकर्मणि

वर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ।इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । ततः पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयस्सन्तु । इति मंत्रेण शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मना द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इति मंत्रेणैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरानीय घृतेनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञँ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा । इति

कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्र का दान करके ब्रह्मा के निमित्त देना चाहिये। तब उसको ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' ऐसा बोलकर ग्रहण करे। तत्पश्चात् ब्रह्मगांठ को खोल देना चाहिये। अनन्तर पवित्रों द्वारा प्रणीता के जल को ग्रहण करके आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मन्त्र से अपने शिर में मार्जन करे। फिर आगे लिखे ॐ दुर्भित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' इस मंत्र से प्रणीतापात्रको ईशानकोन में उलट देवे। तदनन्तर परिस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रम से उन कुशों को उठा लेवे और उसको घृत में बोरकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव

बर्हिर्होमः । ततो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृकं कर्म । ततो-ऽग्निपश्चिमोपविष्टो ब्रह्मचारी परिसमूहनं कुर्यात् । तत्र घृताक्तशुष्कनिषिद्धेतरेन्धनेन पञ्चाहुतीर्हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ।ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिण-मग्निं वारिणा पर्युक्ष्य उत्थाय घृताक्तां प्रादेशमितां समि-धमादाय जुहुयात् । तत्र मंत्रः-ॐ अग्नये समिधमा-हार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसे

यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा।' इस मन्त्र द्वारा हाथ से ही अग्नि में होम कर देवे। फिर ब्रह्मा से मिलकर आगे का कर्म करना चाहिये। ब्रह्मचारी अग्नि के पश्चिम की तरफ को बैठा हुआ अग्नि का परिसमूहन पश्चात् पवित्र और सूखे ईंधन की पांच समिधा लेवे और उनको घृत में बोरकर आगे पांच पृथक् पृथक् मंत्रों से आहुति देवे। 'ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्र-वसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु।ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्।।' फिर अग्नि के चारों तरफ जल सेचनपूर्वक खड़ा हो प्रादेश प्रमाण समिधा घृत से भिजोकर आगे लिखे 'ॐ अग्नयें समिधमाहार्षं

---

१ वेदी के इधर उधर जो होमीय द्रव्य अर्थात् होम के समय साकल्यादि छतर-कर गिर पड़े हैं उन सबको फिर इकट्ठा कर देने का नाम ही परिसमूहन है।

एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयासं स्वाहा । ततः समिदन्तरद्वयमनेनैव क्रमेण प्रत्येकं हुत्वा उपविश्य तेनैव क्रमेण पंचाहुतीर्घृताक्तशुष्कनिषिद्धेतरेन्धनेन जुहुयात्। ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिप असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा पर्युक्ष्य तूष्णीं पाणी प्रतप्य मुखं प्रतिमंत्रान्तेऽवमृशति । ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे

बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसे एव महमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयास 'स्वाहा' इस मंत्र से आहुति देवे। तिसके पीछे इसी मंत्र से दो समिधाओं को अलग अलग आहुति देवे। फिर आसन में बैठकर पूर्व कथनानुसार सूखे अथवा पवित्र ईंधनकी पांच समिधाओं को घृत में भिजोकर आगे लिखे 'ॐ अग्न सुश्रवः सुश्रवस मा कुरु। ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवतं कुरु। ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्' इन मंत्रों से आहुति देवे। पश्चात् दक्षिण क्रम से अग्नि के चारों ओर जल सेचन करे फिर अग्नि में चुपचाप हाथों को तपाकर आगे लिखे प्रत्येक मंत्र से मुख को स्पर्श करे। 'ॐ तनूपा

पाहि । ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि । ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु । ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधां मेअश्विनौ देवावधात्तां पुष्करस्रजौ । तत्र सर्वगात्रादिषु दक्षिणपाणिना स्पर्शः । तत्र प्रत्येकं मंत्रः-ॐ अङ्गानि च म आप्यायन्ताम् । इति सर्वगात्रालम्भने । ॐ वाङ् म आप्यायतामिति मुखालम्भने ।ॐ प्राणश्च म आप्यायतामिति नासिकयोः । ॐ चक्षुश्च म आप्यायतामिति चक्षुर्द्वयस्पर्शः । ॐ श्रोत्रं च म आप्यायतामिति श्रोत्रद्वयस्पर्शः । ॐ यशो बलं च म आप्यायतामिति मंत्रपाठमात्रम् ।

अग्नेसि तन्वं मे पाहि। ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि। ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ॐ मेधां मे देव: सविता आदधातु। ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु। ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्कर स्रजौ।' अनंतर आगे लिखा प्रत्येक मंत्र बोलकर दाहिने हाथसे शरीरके समस्त अंगोंका स्पर्श करें। 'ॐ अङ्गानि च म आप्यायन्ताम्' यह मंत्र उच्चारण करके समस्त शरीरको स्पर्श करे। 'ॐ वाक् च म आप्यायताम्' यह मंत्र बोलकर मुख को 'ॐ प्राणश्च म आप्यायताम्' यह मंत्र उच्चारण करके नासिका के दोनों छिद्रों को 'ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम्' यह मंत्र पढ़कर दोनों नेत्रों को 'श्रोत्रञ्च म आप्यायताम्' यह मंत्र उच्चारण करके दोनों कानों को स्पर्श करे। 'ॐ यशो बलञ्च म आप्यायताम्' इस मंत्रका केवल मात्र पाठही कर लेना चाहिये।

ततो दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ललाटे ग्रीवायां दक्षिणबाहुमूले हृदि च त्र्यायुषं कुर्यात् ।यथासंख्येन मंत्र-चतुष्टम्। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् ।ॐ यद्देवषु त्र्यायुषं इति दक्षिण-बाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदि । ततो व्यस्तपारिभ्यां पृथिवीं स्पृशन् प्रथमं वैश्वानरं सम्बो-ध्याभिवादयेत्। तत्रामुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुक-शर्माऽहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये इति प्रकारः ततस्त-थैव वरुणं सम्बोध्याभिवादयेत् । तथैवाचार्यं चाभि-

---

फिर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलीसे स्रुवे की भस्म लेकर माथे गले दक्षिणबाहुमूल और हृदयमें त्र्यायुष करे अर्थात् इन सब स्थानों में स्रुवे की उपरोक्त भस्म लगानी चाहिये। उसके क्रमसे निम्नलिखित चार मंत्र ये हैं। यथा-'ॐ त्र्यायुष जमदग्नेः' यह मंत्र उच्चारण करके माथे में, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह मंत्र बोलकर कण्ठ में, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' यह मंत्र बोलकर दक्षिणबाहुमूल में और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' यह मंत्र उच्चारण करके हृदय में लगानी चाहिये। फिर व्यस्तपाणि अर्थात् बायें हाथ के ऊपर दाहिने हाथ को पट्ट रखकर भूमि को स्पर्श करता हुआ प्रथम अग्निको सम्बो-धन करके प्रणाम करे। उसका क्रम यह है-'अमुकगोत्रो-ऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये' यह अभिवादन करनेकी रीति है।फिर इसी प्रकार वरुणको संबोधन करके प्रणाम करना चाहिये। उसका वाक्य यह है। यथा-'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वरुण त्वामभि-

वादयेत्। ततः आयुष्मान् भव सौम्य इत्याचार्यो ब्रूयात्। ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य तदुपरि दक्षिणोत्तरक्रमेणासादितवारिपूर्णकलशाष्टतये कलशानां पुरतः प्रागग्रेषु कुशेषु स्थित्वा एकस्मादाम्रपल्लवेनोदकं गृहीत्वा ॐ येऽपस्वंतरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो मनोहास्खलो विरुजस्तनूदूषुरिंद्रियहा तान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि। इति मंत्रेण। ततः तेन मामभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय इत्यात्मानमभिषिंचति। ततो द्वितीयघटस्थमुदकं गृह्णाति-ॐ येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण गृहीताम्रपल्लवे-

---

वादये' इसी प्रकार आचार्यको अभिवादन करे। यथा-'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो आचार्य त्वामभिवादये' अभिवादन करने के अनन्तर-'आयुष्मान् भव सौम्य' इस प्रकार आचार्य आशीर्वाद देवे। तत्पश्चात् अग्निके उत्तरसे पूर्व को अग्र भागवाले कुशाओं को बिछाकर दक्षिण उत्तर को जलसे भरकर रखे हुए आठ कलशो के आगे पूर्वाग्रकुशों को बिछावे और उस पर (ब्रह्मचारी) बैठकर उन आठ कलशों के बीच एक कलश में से आमके पत्तेद्वारा आगे लिखे 'ॐ येप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो मनोहास्खलो विरुजस्तनूदूषुरिंद्रियहा तान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि इस मंत्रसे जल लेवे और फिर इस आगे लिखे 'तेन मामभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।' मन्त्र से अपने शरीर में सेचन करे। फिर दूसरे कलश से आम के पत्ते द्वारा पूर्वोक्त 'ॐ येप्स्वंतरग्नयः' मंत्र से जल ग्रहण करे और आगे

नाभिषिंचति । ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृष्यता ँ सुरां येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वा तदश्विना यशः ॥ इति मंत्रेण । ततस्ते नैव क्रमेण पुनः ॐ येप्स्वंतरग्नय० इत्यनेन तृतीयकलशस्थजलमादाय ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे । इति मंत्रेणाभिषिच्य तेनैव क्रमेण ॐ येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण चतुर्थकलशस्थजलमादाय । ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ इति मंत्रेणभिषिच्य पुनः पंचमकलशस्थं जलं ॐ येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण तथैवादाय ॐ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः॥ इति मंत्रेणाभिषिच्य ततोऽवशिष्टकलशत्रितयजलं तथैव

लिखे 'ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृष्यता ँसुरा येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वा तदश्विना यशः।' इस मंत्र से अपने शरीर पर सेचन करे। फिर जल ग्रहण करने के पूर्वोक्त मंत्रसे आमके पत्ते द्वारा तीसरे कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥' इस मंत्र से शरीरमें सेचन करे। अनन्तर जल ग्रहण के उसी मंत्र से आम के पत्तेद्वारा चौथे कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ यो वःशिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।उशतीरिव मातरः' इस मंत्रसे अपने शरीर को सेचन करे। फिर जल ग्रहण के पूर्वोक्त मंत्रसे आमके पत्ते द्वारा पांचवें कलश का जल लेकर आगे लिखे 'ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥' इस मंत्रसे अपने शरीर में सेचन करे।

येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण प्रत्येकं गृहीत्वा तूष्णीं प्रत्येकमभिषिंचति । ततो मेखलामोचनं शिरोभागेन-ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँश्रथाय । अथा-वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम ।इति मंत्रेण। दंडकृष्णाजिने तूष्णीं भूमौ निधाय अन्यद्वस्त्रं परिधायोत्तरीयं च कृत्वाऽचम्य बद्धांजलिरादित्यमुपतिष्ठेत ब्रह्मचारी।ॐ उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिंमा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिंद्रो मरुद्भिरस्थात्सायंयावभिरस्थात् स-

---

पश्चात् शेष रहे हुए तीन कलशोंके बीच प्रत्येक कलशमें से पूर्वोक्तजल ग्रहणके मंत्रद्वारा आमके पत्तेसे जल लेकर क्रमानुसार अपने शरीर में चुपचाप सेचन करे फिर मूंज की मेखला को शिरकी ओर से आगे लिखे 'ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ँश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम०' इस मंत्र को उच्चारण करके निकाल देवे। अनंतर दण्ड और काली मृगछालाको चुपचाप रख देवे। फिर दूसरा वस्त्र और उत्तरीय वस्त्र धारणपूर्वक आचमन करे पश्चात् ब्रह्मचारी हाथ जोड़कर आगे लिखे 'ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्सायंयावभिरस्थात्सहस्रसनिरसि

हृत्नसनिरसि सहत्नसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमय।इतिमंत्रेण ततोदधितिलान्वा प्राश्याचम्य जटालोमनखादींश्छेदयित्वास्नात्वाऽऽचम्य प्रादेशमितोदुंबरकाष्ठेनदंतधावनम्। ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वँ सोमो राजाऽयमागमत् । समे मुखं प्रमाक्ष्र्यते यशसा च भगेन च ।। इति मंत्रेण । ततो दंतकाष्ठं परित्यज्याचम्य सुगंधिद्रव्योद्वर्तनानन्तरं स्नात्वा द्विराचम्य चन्दनकुंकुमादिना नासिकाया मुखस्यालंभने ॐ प्राणापानौ मे तर्प्पय । ॐ चक्षुर्मे तर्प्पय । ॐ श्रोत्रं मे तर्प्पय । इति मंत्रेणानुलिंपति । ततः पाणी प्रक्षाल्य

सहस्रनिं मा कुर्वाविदन्मा गमय' इस मंत्रका उच्चारण करता हुआ सूर्यनारायणके संमुख खड़ा हो जाय। फिर दही और तिल इन दोनों वस्तुओंको मिलाकर चख लेवे पीछे आचमन करले तदनंतर नाईके द्वारा क्षौर (हजामत) कराकर जटा लोम नाखून कटवावे और स्नान करके आचमन करे फिर प्रादेशप्रमाण गूलरकी दँतौन आगे लिखे 'ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वँ सोमो राजाऽयमागमत् । स मे मुखं प्रमाक्ष्र्यते यशसा च भगेन च' इस मंत्रको उच्चारण करके करनी चाहिये। पश्चात् दतौनको फेंक देवे और कुल्ला करके फिर आचमन करे तिस पीछे सुगन्धित पदार्थों द्वारा शरीरमें उबटन करे और फिर स्नानपूर्वक दो बार आचमन करे। फिर चन्दन केशर इत्यादि सुगन्धित द्रव्य ग्रहणपूर्वक 'प्राणापानौ मे तर्पय' यह मंत्र बोलकर नासिका और मुख में लगावे। 'ॐ चक्षुर्मे तर्पय' यह मंत्र उच्चारण करके नेत्रों में और 'श्रोत्रं मे तर्पय' यह मंत्र पढ़कर कानों में लगाना चाहिये। फिर हाथ धोकर दक्षिणकी

दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः कृतापसव्यो द्विगुण-भुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय आस्तृतकुशत्रयोपरि पितॄंस्तर्पयेत् ।ॐ पितरः शुंधध्वमिति मंत्रेण ।ततः सव्यंकृत्वा आचम्यानुलिप्य जपेत्-ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयासँ्सुवर्चा मुखेन सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् इति । ततोऽहत-वासः परिधानम् ।ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि । शतं जीवामि शरदः पुरूची रायस्पो-षमभिसंव्ययिष्ये ।। इति मंत्रेण । ततो यज्ञोपवीतपरि-धानम्-ॐ यज्ञोपवीतं परमंपवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुर-स्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बल-मस्तु तेजः ।। इति मंत्रेण । द्वितीयग्रहणम्-यज्ञोपवीत-

---

ओर को मुख किये ब्रह्मचारी वामजानुको नवायकर जनेऊको अपसव्य (उल्टा)कर दुहरे लपेटे हुए तीन कुश तिल और जल लेकर पृथ्वीमें बिछाये हुए तीन कुशोंके ऊपर आगे लिखे 'ॐ पितरः शुंधध्वम्' इस मंत्रको उच्चारण करके पितरों का तर्पण करे। फिर यज्ञोपवीत सव्य (सीधा)करके आचमन करे।पश्चात् कुछ सुगन्धित द्रव्योंको लेपन कर आगे लिखे 'ॐ सुचक्षा अहम-क्षीभ्यां भूयासँ्सुवर्चा मुखेन सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्' इस मंत्रको पाठ करना चाहिये।फिर आगे लिखे ॐ परिधास्यै यशो-धास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।शतं च जीवामि शरदःपुरूची-रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये' इस मंत्र से नवीन वस्त्र पहर लेवे अनंतर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करने के लिये आगे लिखा 'ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्य-मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः' यह मन्त्र

मिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरुपवीतदेवता यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः । यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि । आचनम् । अयोत्तरीयम्-ॐ यशसामा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती । यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् ।। इति मंत्रेण । ततः पुष्पमालाग्रहणे मंत्रः-ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च। इति मंत्रेण पुष्पमालाग्रहणम् । ततः पुष्पमालापरिधानम्-ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु । तेन संग्र-

---

उच्चारण करके यज्ञोपवीतको हाथमें लेले। फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करने के लिये जल हाथमें ले आगे लिखे हुए 'यज्ञोपवीतमिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरुपवीतदेवता यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः' इस वाक्यको उच्चारण करके उसका विनियोग छोड़े और फिर आगे लिखे हुए 'ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि' इस मंत्रसे (उस) यज्ञोपवीत को धारण कर लेना चाहिये। पश्चात् आचमन करे फिर आगे लिखे हुए 'ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्' इस मंत्रसे उत्तरीयवस्त्र[1] धारण करे। तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च' इस मंत्र से पुष्पमाला को हाथ में ग्रहण करना चाहिये। फिर उस पुष्पमाला को आगे लिखे 'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्च-

---

१. दुपट्टा

थिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि।।इति मंत्रेण पुष्पमालापरिधानम् ।अथ वसुप्रतिष्ठा ।अथोष्णीषेण शिरोवेष्टनम्-ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ।। इति मंत्रेण । ततः कुण्डले परिदधाति। ॐ अलंकरणमसि भूयोऽलंकरणं भूयात्। ततोऽञ्जनम् -वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि। तत आदर्शे आत्मदर्शनम्-ॐ रोचिष्णुरसि इति मंत्रेण। ततश्छत्रग्रहणम्-ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि तेजसो यशसो मान्तर्धेहि इति मंत्रेण । ततः पद्भ्यामुपानहौ प्रतिगृह्णाति-ॐ प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो

कार विपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि' इस मंत्रको उच्चारण करके पहर लेना चाहिये। अथ वसुप्रतिष्ठा। तदनन्तर पगड़ी या टोपी आगे लिखे 'ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः' इस मंत्रसे धारण करे। इसके पश्चात् आगे लिखे 'ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽलंकरणं भूयात्' इस मंत्रसे कुण्डल धारण करे। फिर आगे लिखे ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा अति चक्षुर्मे देहि' इस मंत्रसे अञ्जन धारण करे अर्थात् आंखों में काजल लगावे। फिर आगे लिखे 'ॐ रोचिष्णुरसि' इस मंत्रसे दर्पण में मुख देखे। पश्चात् आगे लिखे ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि तेजसो यशसो माऽन्तर्धेहि' इस मंत्रसे छतरी धारण करे। फिर आगे लिखे 'ॐ प्रतिष्ठे रथो विश्वतो मा पातम्, इस मंत्रसे

मा पातम् इति मंत्रेण । ततो वैणवदण्डधारणम्-ॐ विश्वोभ्योमानाष्ट्राभ्यस्परि पाहि सर्वतः इतिमंत्रेणततः स्नातकस्य नियमाः-गानवादित्रनृत्यत्यागः न तत्र गमनं क्षेमेसति न रात्रौग्रामान्तरगमनम् न धावेत न कूपेऽवेक्षणं न वृक्षारोहणं न फलत्रोटनम् अमार्गेण न गच्छेत् नग्नो न स्नायात् न संधिशयनं न विषमभूमिलंघनम् अश्लीलं नोपवदेत्, उदितास्तसमये सूर्यं नोपपश्येत् जलमध्ये सूर्यं आकाशस्थं न पश्येत् देवे वर्षति न गच्छेत् उदके

पैरोंमें उपानह (चर्मपादुका) धारण करे। अनंतर आगे लिखे 'ॐ विश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः' इस मंत्रसे लकड़ी (लाठी)हाथमें लेवे।तत्पश्चात् ब्रह्मचर्य अवस्थापूर्वक विद्याध्ययन करलेनेपर समावर्त्तन संस्कारके द्वारा गृहस्थाश्रममें आये हुए नियम।यथा-गाने, बजाने और नाचनेका त्याग करे और न ऐसे स्थानमें जावे। विशेषकार्य उपस्थित हुए विना रातके समय एक गांव से दूसरे गांव में न जाय, दौड़कर नहीं चले। कुए में मुँह डालकर नहीं झांके। वृक्ष पर नहीं चढ़े। कच्चे फलों को नहीं तोड़े। विना दरवाजे के घरमें न घुसे अर्थात् दरवाजे के होते हुए छोटी मोटी दीवार लांघकर कभी घरमें नहीं घुसे दरवाजेसे ही प्रवेश करे। नग्न (बिलकुल नंगा) होकर स्नान नहीं करे। सूर्यके उदय तथा अस्त समय में नहीं सोवे। विषमभूमि अर्थात् ऊंची नीची पृथ्वी को लांघकर गमन न करे। अश्लीलवचन (गालीगलौच) नहीं बोले। उदय और अस्त होते हुए सूर्य को नहीं देखे। आकाशस्थ सूर्य की परछांही को जल के बीच में न देखे। वर्षा होते हुए समय में रास्ता न चले। जल में

आत्मानं न पश्येत् अजातलोम्नीं प्रमत्तां पुरुषाकृतिं षण्ढां न गच्छेदित्यादि । ततः आचार्य्याय वरां दक्षिणां दद्यात् । ततः मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा । इति मंत्रेण फलपुष्पसमन्वितघृतपूर्णस्रुवेण माणवकदक्षिणकरस्पृष्टेनोत्थाय पूर्णाहुतिमाचार्य्यः कुर्य्यादिति । उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । इति त्र्यायुषं कुर्यात्

अपने शरीर को नहीं देखे। जिसके रोम न निकले हों, बावली पुरुषाकृति (जिस स्त्रीके पुरुषकी नाईं दाढ़ी मूछ निकल आई हैं जैसी गिंदिया हीजड़ी) इनके पास न जाय और न इनकी हाँसी ही उड़ावे। तदनंतर अपने आचार्य को उत्तम दक्षिणा देवे फिर आगे लिखे हुए 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा' इस मंत्रसे फल पुष्प तथा घृतसे परिपूर्ण स्रुवे को उठाय उसमें बालक का हाथ लगवाय आचार्य पूर्णाहुति करे। फिर आसन पर बैठकर स्रुवे में भस्म ग्रहणपूर्वक दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलीद्वारा उस स्रुवेसे भस्मलेकर त्र्यायुष करे। 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' ऐसा उच्चारण करके माथेमें 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके गलेमें 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' ऐसा उच्चारण करके दक्षिणबाहु-

अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि तत्र 'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति विशेषः । ततो मूर्द्धाक्षतादिग्रहणम् ।।

इति श्रीमहामत्तकमहासामंताधिपतिश्रीरामदत्त विरचिता वाजसनेयिनामुपनयन कर्मपद्धतिः समाप्ता ।।१२।।

मूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' ऐसा उच्चारण करके उस भस्मको हृदय में लगाना चाहिये। इसी प्रकार यह भस्म कुमार के भी ललाटादि स्थानों में लगावे। किन्तु जब कुमार के लगावे तो 'तन्नो अस्तु' के स्थान में 'तत्ते अस्तु' ऐसा उच्चारण करना चाहिये। फिर कुमार के माथे में तिलक अक्षत लगाकर अभिषेकादि करे।। इतिसमावर्तनम् ।।१२।।

अथ सामग्री

रोली १२ मोली ७ केशर २५ बतासे ३ आटा चावल पुष्प १२ पुष्प माला धूप ३ दीप १ ताम्बूल ७ यज्ञोपवीत ९ प्रणीता-पात्र ३ प्रोक्षणीपात्र ३ कांस्यपात्र ६ छायापात्र १ सुवर्ण १ कुशा १ स्रुवा १ गोमय एरणेगोहे पलाशसमिधा १ सेर ३ पूर्ण पात्र ३ उपर्णे ५ धोतियाँ २ कुपीनी ५ मृगचर्म १ पलाशदण्ड १ गूलरशाखा १ मेखला मुंजी की १ सुहालीयासेर १ पुरवा ८ लोटिया ८ नारियल २ खंडाऊं जोड़ा१ पट्टी १ चंगेर १ लाठी ५ गुथली १ कसारु २ घृततिल ३ दधि १ सुपारी ११ आम्र पल्लव वृक्षादिपत्र ७ अंजन १ दर्पण १ वसु ५ मोती उपानहौ वटणश्वेत दूर्वा दोने १० अबीरश्वेत ६ ब्राह्मणभोजन दक्षिणा पंच रंग २५। इति सामग्री।।

इति श्रीमहामत्तकमहासामन्ताधिपतिश्रीरामदत्तविरचिता वाजसनेयिनामुपनयनकर्मपद्धतिर्मुरादाबादनिवासि-कात्यायनगोत्रोत्पन्नपण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतहिन्दीटीकासहिता समाप्ता ।।

अथ विवाहविधिः ॥१३॥

तत्र कन्याहस्तेन षोडशहस्तमितं मण्डपं तद्दक्षिण-दिशि पश्चिमां दिशमाश्रित्य मण्डपसंलग्नमुत्तराभिमुखं कौतुकागारं मंडपाद्बहिरीशान्यां दिशि जामातृचतुर्हस्त-परिमितिसिकतादिपरिष्कृततुषकेशशर्करादिरहितां रम्यां वेणुनिर्मितां वेदिं च कारयेत्। विवाहदिने कृतनि-त्यक्रियेण जामातृपित्रा मातृपूजापूर्वकमाभ्युदयिक श्राद्धं कर्तव्यम् । कन्यापिता स्नातः शुचिः शुक्लाम्बरधरः कृत नित्यक्रियो मातृपूजाभ्युदयिके कृत्वा अर्हणवेलायां मण्डपेप्रत्यङ्मुखःप्राङ्मुखं वरमूर्ध्वजानुं तिष्ठन्तं संबोध्य ततः स्वस्तिवाचनं कलशगणेशादीनां पूजनं च कृत्वा

अब विवाहसंस्कार वर्णन किया जाता है-कन्या के हाथ से सोलह हाथ पृथ्वी नापकर पश्चिमदिशासे पूर्वको मण्डप बनाना चाहिये। उस मण्डपकी दक्षिणकी तरफ पश्चिमदिशा से युक्त और मण्डपसे सटे हुए उत्तरकी ओर मुखवाले कौतुकागार की रचना करे। मण्डपसे बाहर ईशानकोन में जामाता (वर) के चार हस्त प्रमाण वालुकाद्वारा सुशोभित, भुस्सी, केश, धूलि इत्यादि से रहित वाँसों से रची हुई मनोहर (दर्शनीय) वेदी बनावे। विवाहके दिन नित्यकृत्य अर्थात् स्नान संध्यादि कर जामाता का पिता षोडश मातृकाओं की पूजा पूर्वक नान्दी-मुख श्राद्ध करे। कन्या का पिता स्नान संध्यापूर्वक पवित्र होकर सफेद वस्त्र धारण किये मातृपूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके वर के पूजन का समय आने पर मण्डप में पश्चिमाभिमुख से बैठे हुए तथा पूर्वाभिमुख और ऊर्ध्वजानु स्थित वर को सम्बोधन

ॐ साधु भवानास्तामितिप्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मादेवता यजुर्वेरार्चने विनियोगः । ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ब्रूयात् ।ॐ अर्चयेति वरेणोक्ते वरोपवेशनार्थे शुद्धमासनं दत्त्वा विष्टरमादाय ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टर इत्यन्येनोक्ते ॐविष्टरः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ॐ विष्टरं प्रतिगृऽामि इत्यभिधाय वरो विष्टरंगृहीत्वा ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरो देवताऽनुष्टुप्छन्दः उपवेशने विनियोगः । ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः । इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।इत्यनेनासने उत्तराग्रविष्टरोपरि वर उपविशति।

करके स्वस्तिवाचन, कलशस्थापन तथा गणेशादिकों का पूजन करके हाथ में जल ले आगे लिखे हुए 'ॐ साधु भवानास्तामिति प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मा देवता यजुर्वरार्चने विनियोगः' इस वाक्य से विनियोग छोड़े फिर 'ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्' इस प्रकार कन्या का पिता कहे। पश्चात् 'ॐ अर्चय' ऐसा वर के कहने पर वर के बैठनेको शुद्ध आसन देकर कुश के बनाये विष्टर को हाथ में ले 'ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः'ऐसा किसी पाधाके कहनेपर-ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्' इस प्रकार दाता (कन्याका पिता) कहे फिर 'ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर वर विष्टरको ले हाथमें जल ग्रहणपूर्वक आगे लिखे हुए 'ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरो देवता अनुष्टुप् छन्दःउपवेशने विनियोगः'इस वाक्यको उच्चारण करके विनियोग छोड़े फिर आगे लिखे हुए 'ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः । इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभि-

तत्रोपविश्ययजमानःपाद्यमञ्जलिनाऽऽदाय ॐपाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते ॐपाद्यं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्। ॐपाद्यं प्रतिगृह्णामि इत्यभिधाय यजमानाञ्जलितोऽञ्जलिना पाद्यमादाय वरः विराजो दोहोऽसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षालने जलग्रहणे विनियोगः।ॐविराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजोदोहः इति दक्षिणपादं प्रक्षालयति।अनेनैवक्रमेणानेनैवमंत्रेणान्यपादप्रक्षालनम्।ततःपूर्ववद्विष्टरांतरं गृही-

---

दासति' इस मंत्रको उच्चारणपूर्वक वर अपने आसनमें विष्टर का उत्तरकी ओर अग्रभाग करके उसके ऊपर बैठ जावे। फिर कन्याका पिता आसनमें बैठकर एक पात्र में जल भर उसको हाथ में लेवे और 'ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं' ऐसा किसी अन्य पाधाके कहने पर 'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कन्याका पिता कहे 'फिर ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर वर यजमानके हाथसे उस जलपात्र को लेकर आगे लिखे हुए 'ॐ विराजो दोहोसीति[1] प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुः पादप्रक्षालने जलग्रहणे विनियोगः' इस वाक्यसे विनियोग छोड़े।पश्चात् आगेलिखे हुए "ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः" इस मंत्रसे दाहिने चरणको धोवे फिर इसी मंत्र और इसी रीतिसे बाँये चरण को धोवे अनन्तर कन्या का पिता दूसरा विष्टर लेकर वरको देवे और वर उसे उत्तरको अग्रभाग करके अपने आसन के नीचे रख लेवे। फिर दूब अक्षत फल

---

१ विनियोग के निमित्त और जल लेना चाहिये।

त्वा चरणयोरधस्तात् उत्तराग्रंवरःकुर्यात्।ततो दूर्वाक्षत-फलपुष्पचन्दनयुतार्घपात्रं गृहीत्वा यजमानः ॐ अर्घोऽ-र्घोऽर्घः इत्यन्येनोक्ते ॐ अर्घः प्रतिगृह्यतामि दाता वदेत्। ॐ अर्घंप्रतिगृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादर्घंगृहीत्वा ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानीति शिर-स्यक्षतादिकं किंचिद्दत्वा ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि म-त्पयः इत्यर्घपात्रस्थं जलमैशान्यां दिशि त्यजन् पठति। ततः आचमनीयमादाय ॐ आचमनीयमाचमनीयमाच-मनीयमित्यन्येनोक्ते ततो वरः-ॐ आचमनीयं प्रति-गृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादाचमनीयमादाय ॐ

पुष्प चन्दन युक्त अर्घ्यपात्र को कन्या का पिता हाथ में ले 'ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः' ऐसा किसी दूसरे पाधा के कहने पर 'ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कन्या का पिता कहे। ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि वर ऐसा उच्चारण पूर्वक यजमान के हाथ से उस अर्घपात्र को लेकर ईशानकोन में उसके जल को छोड़ता हुआ आगे लिखे 'ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि' इससे शिर पर अक्षत देकर 'ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनि-मभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः' इस मंत्र का पाठ करे। अर्थात् 'ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्का-मानवाप्नवानि' यह उच्चारण करके मस्तक में अक्षत लगावे। फिर आचमन के लिये एक पात्र में जल भरकर कन्या का पिता हाथमें लेवे और फिर 'ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्' ऐसा कन्याके पिता के कहनेपर वर 'ॐ आचमनीयं प्रतिगृ-

आमागन्यशसा स्ँसृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामारिष्टिंतनूनाम् इत्यनेनसकृदाचामेत्। द्विस्तूष्णीम् । ततो यजमानः कांस्यपात्रस्थदधिमधुघृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादाय ॐ मधुपर्कों मधुपर्कों मधुपर्कः इत्यन्येनोक्ते ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् । ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि इति वरो वदेत् ।ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे इति यजमानकरस्थमेव निरीक्ष्य ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामीत्यनेन

ह्लामि' ऐसा कहकर यजमान के हाथ से उस आचमनीय जलपात्रको लेकर आगे लिखे हुए 'ॐ आमागन्यशसा स्ँसृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनां' इस मन्त्र से एक बार आचमन करे। फिर दो बार चुपचाप आचमन करे। तदनन्तर कन्या का पिता कांसी के पात्र में दही सहत घृत इन तीन वस्तुओं को मिलाकर दूसरे कांसी के पात्रद्वारा उस पात्र को ढककर हाथ में ले 'ॐ मधुपर्कों मधुपर्कों मधुपर्कः' ऐसा पाधा के कहने पर 'ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा दाता (यजमान) कहे। फिर 'ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्लामि' इस प्रकार वर कहे। तत्पश्चात् 'ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे' ऐसा कहकर यजमान के हस्त स्थित मधुपर्कको देख आगे लिखे हुए 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्लामि' इस मन्त्रद्वारा कन्या के पिता के हाथसे मधुपर्क को लेकर बायें हाथमें रखे। फिर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों

मधुपर्कं गृहीत्वा वामहस्ते कृत्वा ॐ नमः श्यावास्याया-न्नशने यत्त आविद्धंतत्ते निष्कृंतामीत्यनामिकयाऽङ्गुष्ठेन च त्रिः प्रदक्षिणमालोड्य अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां भूमौ किंचिन्निक्षिपेत् । पुनस्तथैव द्विः प्रत्येकं क्षिपेत् । ततो वरः ॐ यन्मधुन इति कुत्स ऋषिर्मधुपर्को देवता जगती छंदो मधुपर्कप्राशने विनियोगः ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम ँरूपन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपे-णान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि इत्यनेन वारत्रयं मधुपर्कप्राशनम् । प्रतिप्राशनै चैतन्मंत्रपाठः । ततो मधु-पर्कशेषमसंचरदेशे धारयेत् । ततो द्विराचम्य ॐ वाङ् म आस्येस्तु ॐ न नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षु-

---

से आगे लिखे 'ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि'। इस मन्त्रद्वारा उन पात्रस्थ, घृत, मधु, दधि इनको तीन बार मिलावे फिर उसमें से यत्किंचित् पृथ्वी में गिरा देवे। फिर दो बार थोड़ा थोड़ा पृथ्वी पर गिरावे अनंतर हाथमें जल लेकर आगे लिखे 'ॐ यन्मधुन इति कुत्सऋषिर्मधु-पर्को देवता जगती छन्दो मधुपर्कप्राशने विनियोगः'इस वाक्यसे विनियोग छोड़े। इसके पश्चात् आगे लिखे हुए 'ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम् ँ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणा-न्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोऽसानि' इस मन्त्र से तीन बार उस मधुपर्क का प्राशन करे, किन्तु मन्त्र को प्रत्येक प्राशन के समय उच्चारण करना चाहिये। फिर शेष रहे मधुपर्क को किसी एकान्त स्थान में रख देवे। पश्चात् दो बार आचमन करे। तदनन्तर 'ॐ वाङ् म आस्येऽस्तु' यह मन्त्र उच्चारण

रस्तु ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तुइत्यास्यादि प्रत्येकं सर्वगात्राणि स्पृष्ट्वा ॐ गौर्गौ-र्गौरित्यन्येनाभिहिते यजमानेन प्रत्युक्तं ततो वरः ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूना ँ स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनाममदितिं वधिष्ट । मम चामुष्य पाप्मा हतः ॐ उत्सृजत तृणान्य-त्त्विति तृणं छिंद्यात्ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करादि-रहितायां हस्तमात्रपरिमितायां चतुरस्रां भूमिं कुशैः

करके दाहिने हाथ से मुख को स्पर्श करे। ॐ नसोर्मे प्राणो-ऽस्तु' यह मंत्र उच्चारण करके नासिका के दोनों छिद्रोंको स्पर्श करे। 'ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों आँखों को स्पर्श करे। ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु' यह मन्त्र उच्चा-रण करके दोनों कानों को स्पर्श करे। 'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके हाथों को स्पर्श करे। 'ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके जंघाओं को स्पर्श करे। 'ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु' यह मन्त्र उच्चारणपूर्वक मुखसे आरंभ करके समस्त शरीरका स्पर्श करे। फिर 'ॐ गौर्गौर्गौः' यजमान के ऐसा कहने पर वर आगे लिखे 'ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूना ँस्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट। मम चामुष्य पाप्मा हतः ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु' इस मन्त्र को उच्चारण करके तिनके को तोड़कर डाल देवे। फिर भुस्सी, केश, धूरि, कंकर इत्यादि रहित एक हाथकी बराबर बनाई हुई

परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पांसुमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रस्थं वह्निमग्निकोणादानीय प्रत्यङ्मुखमुपसमाधाय तद्रक्षार्थं कंचिन्नियुज्य कौतुकागाराद्वरः कन्यामानीय मंडपे उपविश्य ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा।शतं च जीव शरदः सुवर्चारयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः इति पठित्वा

चौकोन वेदीको तीनकुशाओंसे शोधन करे और फिर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देवे। तदनन्तर गोबर से वेदी को लीप कर स्फ्य नामक यज्ञपात्र अथवा स्रुवे से पूर्वको अग्र भागवाली दक्षिण से उत्तर की तरफ को तीन रेखा खैंचे। रेखा खैंचने के क्रमानुसार दाहिने हाथ की अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों द्वारा (उन रेखाओंसे) मिट्टी उठाकर ईशान कोनमें फेंक देवे फिर जल लेकर रेखाओं पर छिड़कना चाहिये पीछे चुपचाप कांसीके पात्रमें अग्नि लेकर अग्निकोन के मार्ग से वेदीके समीप आकर अग्निको पश्चिमाभिमुख वेदी में स्थापन करे। फिर उस अग्नि की रक्षा के लिये किसी को नियुक्त कर कौतुकागार से वर उस कन्या को लाकर मण्डपमें बैठे। अनन्तर आगे लिखे हुए 'ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वास' इस मंत्रको उच्चारण करके उस कन्याको पहरने के वस्त्र प्रदान करे। तत्पश्चात् आगे लिखे

परिधानवस्त्रं तस्यै ददाति वरः।ततः ॐया अकृंतन्नवयन् या अतन्वत याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ । तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः इति पठित्वोत्तरीयं ददाति । ततो वरः ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वायजरदष्टिरस्मि।शतं च जीवामिशरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये इति पठित्वा अधोवस्त्रं वरः परिधत्ते । ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती। यशो भगश्चमाविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।इति पठित्वोत्तरीयं परिदधाति वरः । ततो वरस्य कन्यायाश्च द्विराचमनम् ।ततः कन्याप्रदेन परस्परं समञ्जेथाम् इति प्रेषणं कन्यावरयोःपरस्परमभिमुखीकरणम्।ॐसमञ्जन्तु

'ॐ या अकृंतन्नवयन् या अतन्वत याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततथ। तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः' इस मंत्र को उच्चारण करके कन्याको उत्तरीय वस्त्र प्रदान करना चाहिये। फिर वर आगे लिखे 'ॐपरिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि।शतश्च जीवामि शरदःपुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्टे' इस मंत्रको उच्चारणकरके अपने आप भी अधोवस्त्र (धोती इत्यादि) धारण करे।तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ यशसा मा द्यावापथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती।यशो भगश्च माविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्' इस मंत्रको बोलकर वर उत्तरीयवस्त्र धारण करे। फिर वर और कन्या दो दो आचमन करे फिर कन्या का पिता वर और कन्याको परस्पर सम्मुख (आमने सामने) बैठाकर उन दोनोंके परस्पर एक दूसरे से देखनेकी आज्ञा देवे। उस काल वर आगे लिखे 'ॐ समन्ञ्जतु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ।संमा-

विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ । संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ।। इति वरः पठति । ततः कन्याप्रद-कर्तृकं ग्रन्थिबन्धनम् । बंधनं कन्यावरयोः । अथ हस्त लेपनं शाखोच्चारणम् ।अथ कन्यादानम् ।दाता शङ्खस्थ-दूर्वाक्षतफलपुष्पचन्दनजलान्यादाय जामातृदक्षिणकरो-परि कन्यादक्षिणकरं निधाय ॐ दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदैवतम्। वरोऽसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः ।। इति पठित्वा गोत्रोच्चारणं कुर्यात् । ॐ अद्या-मुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुकवासरे अमुक-गोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्राय, अमुकगोत्र-स्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्राय, अमुकगोत्रस्यामु-

---

तरिश्वा संधाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ' इस मंत्रका पाठ करे। फिर कोई कन्यापक्षीय पाधा अथवा पुरोहित कन्याका और वर का ग्रन्थिबंधन (गण्ठजोड़ा) करे। अनंतर कन्या और वर के हाथों में हलदी लेपन पूर्वक दोनों पक्ष के पुरोहित या पाधा शाखोच्चार करें। फिर यजमान कन्यादान करे। कन्या का पिता शंखमें दूर्वाक्षत फल पुष्प चन्दन तथा जल रखकर जामाताके दाहिने हाथ पर कन्या का दाहिना हाथ रख 'ॐ दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदैवतम्। वरोऽसौ विष्णुरूपेणप्रतिगृह्णात्वयं विधिः।।' यह मंत्र पाठपूर्वक गोत्रोच्चारण करे। कन्यादान का संकल्प। यथा-ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्राय। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्राय। अमुकगोत्रस्या-

कप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्राय । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीम् इत्यनेन क्रमेण त्रिरावर्त्य पठनीयम् । अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय अमुकगोत्रां अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीं इमां कन्यां सालङ्कारां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकामः पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ।ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु इति वरः पठेत् । ततः कन्याप्रदः ॐ अद्य

मुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्राय[1] अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीम्। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्रीम्। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीम्। इत्यनेन क्रमेण त्रिरावर्त्त्य पठनीयम्। अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय अमुकगोत्रां अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीमिमां कन्यां सालंकारां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकामः पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे' तब वर 'ॐ स्वस्ति' कहकर उस कन्यादान को ग्रहण करे। फिर वर आगे लिखे 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु' इस मंत्र को उच्चारण करे। तत्पश्चात् कन्या का पिता आगे लिखा 'अद्य कृतैतत्कन्या-

---

१ इस स्थान में प्रत्येक श्लोक के अंतमें 'पुत्राय' तक तीनों पीढ़ी के नामों के अमुकपद की जगह गोत्रप्रवर वेद शाखा सूत्रों के नामों का उच्चारण करना चाहिये। गोत्रशाखोच्चारण यहां 'त्रिरावर्त्य पठनीयं' पदका तात्पर्य यह है कि 'अमुकगोत्रस्य' से लेकर 'अमुक शर्मणः पुत्रीम्' यहां तक का पाठ तीन वार पढ़कर फिर आगे के संकल्प का उच्चारण करना चाहिये।।

कृतैतत्कन्यादानप्रतिष्ठार्थं इदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्रायअमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय दक्षिणांतुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् ।ॐ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् । गोमिथुनं वा दद्यात्।ॐकोदात्कस्मा अदात्कामोऽदात्कामायादात् ।कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते इति वरः पठेत् । ततस्तां पाणौ गृहीत्वा ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु । श्रीअमुकदेवी इति पठन्निष्क्रामति । ततो वेदि-

---

दानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' यह संकल्प उच्चारण करके सुवर्ण या गोमिथुन (एक गाय एक बैल) वर को दक्षिणास्वरूप देवे। तब उसको भी वर 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कहकर ले लेवे। जिसके अन्तर्गत है ऐसे संकल्प के पीछे वर 'ॐ स्वस्ति' उच्चारण करके 'ॐ द्यौस्त्वा' मंत्र का पाठ करे। फिर कन्यादान करने वाला पिता संकल्पपूर्वक अपने सामर्थ्य के अनुसार सुवर्ण अथवा एक गौ और एक बैल वर के निमित्त कन्यादानकी दक्षिणा में प्रदान करे और वर 'ॐ कोदात्' इत्यादिमंत्र उच्चारण करके उसको ग्रहण कर लेवे। और आगे लिखे 'ॐ कोऽदात्कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात् कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते' इस मंत्रको पढ़े। और फिर कन्या के हाथको पकड़कर आगे लिखे 'यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु श्रीअमुक देवी' इस मंत्र को उच्चारण करता करता फिर वेदी के समीप आवे। फिर वेदी के दक्षिण

दक्षिणस्यां दिशिवारिपूर्णदृढ़कलशं ऊर्द्धंतिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्य स्कंधे अभिषेकपर्यन्तं धारयेत् । ततः परस्परं समीक्षेथां इति कन्याप्रदप्रैषानंतरं ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः। सोमोऽदद्द्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये। रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम । सा नः पूषा शिवतमा मैरय सा न उरू उशती विहर । यस्यामुशंतः प्रहराम शेफं यस्यामु कामा बहवो निविष्टचै ।इति वरपठितमंत्रांते परस्परं निरीक्षणम्। ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चादग्नेरहतवस्त्रवेष्टिततृणपुलके कटे वा तदुपरिदक्षिणं

दिशा में जल से भरा हुआ दृढ़कलश कन्धेपर रखकर चुपचाप एक मनुष्य अभिषेकपर्यंत खड़ा रहे। पीछे कन्या का पिता तथा वरको आपसमें एक दूसरे के देखने की आज्ञा देवे। तब वर आगे लिखे 'ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यःसुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।सोमःप्रथमो विविदेगन्धर्वो विषिद उत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः सोमोऽददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये । रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्।सा नःपूषाशिवतमा मैरय सा न ऊरू उशती विहर। यस्यामुशंतः प्रहराम शेफं यस्यामु कामा बहवो निविष्टचै इस मंत्रको उच्चारण करेऔर तब दोनों जन परस्पर एक दूसरेको देखें। फिर वधू वर अग्निकी प्रदक्षिणा करे अग्नि के पश्चिमकी ओर नवीन वस्त्रसे लपेटे हुए घासके पूले या चटाईके

चरणं दत्त्वा वधूं दक्षिणतः कृत्वा तामुपवेश्य स्वयमुपविश्यवरः पुष्पचन्दनतांबूलवस्त्राण्यादाय ॐअद्य कर्तव्यविवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । यथाविहितं कर्म कुरु इति वरेणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् ।

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि पागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्निं प्रदक्षिणक्रमेणानीयात्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत् । ॐ अद्य कर्तव्यविवाहकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपाचार्यकर्म कर्तु-

---

ऊपर दाहिने चरणको रख और वधूको वर अपने दाहिनी ओर बैठाकर आप भी बैठे फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्र इन वस्तुओं को हाथ में लेकर 'अद्य कर्तव्यविवांहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे' ऐसा कहकर ब्राह्मण का वरण करे। तब 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा ब्राह्मण कहे। फिर 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा वर के कहने पर 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्राह्मण कहे। तत्पश्चात् अग्निके दक्षिण की ओर शुद्ध आसन बिछाकर उसपर पूर्वको अग्रभाग वाले कुशा बिछाय ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणा के क्रमानुसार समीप बुलाय 'त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कह उसको उस आसन पर बैठा देवे फिर 'ॐ अद्य कर्तव्यविवाहकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपाचार्यकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनताम्बूल-

ममुकगोत्रममुकशर्म्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूल-वासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणाऽऽपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थ-भागमादाय आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्या द्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चि-मदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रम-नन्तर्गर्भकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली सम्मा-र्जनार्थं कुशत्रयम् उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयं समिध-

---

वासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे' इस प्रकार कहकर आचार्य का वरण करे, तब आचार्य 'ॐ वृतोऽस्मि ऐसा कहे। फिर प्रणीतापात्र को आगे रखकर जलसे भर देवे और उसको कुशा-ओंसे ढककर ब्रह्माके मुखको देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओं पर धर देवे। फिर परिस्तरण करे अर्थात् मुट्ठीभर या सौ कुश हाथमें लेकर उसके चार भाग करे उनमें पहला भाग अग्निकोन से ईशानकोन तक, दूसरा भाग ब्रह्मा के आसन से अग्नि वेदी तक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निग्ने प्रणीतापर्यंत बिछा देना चाहिये। अनंतर अग्नि से उत्तर की तरफ पश्चिमदिशा में पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रखे और पवित्र बनाने के लिये अग्रभाग सहित और बीच के पत्ते से रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हों दो कुश पत्र रखें। फिर प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली संमार्जन कुशाओं के

स्तिस्रः स्रुव आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशतद्वयाव-च्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् । अथ तस्यामेव दिशि असाधारण-वस्तून्युपकल्पनीयानि । तत्र शमीपलाशमिश्रा लाजाः दृषदुपलं कुमारीभ्राता शूर्पः दृढपुरुषः अन्यदपि तदु-पयुक्तमालेपनादिद्रव्यम् । ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे

लिये तीन कुशा[1] उपयमन के लिये कुशा वेणीरूप[2] करके रखे तीन समिधा स्रुवा आज्य और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलों से भरा हुआ पूर्ण पात्र इन सब वस्तुओं को पवित्रछेदन की कुशा-ओंसे आगे पूर्व पूर्व की तरफ को क्रम से रखता जाय। इसके उपरांत उसी दिशा में इन असाधारण वस्तुओं को भी इकट्ठी करे। वे यहं हैं-शमी (जड़वृक्ष) की पत्तों से युक्त खीलें, पत्थर, लड़की का भाई, सूप (छाज), कोई एक दृढ़ पुरुष तथा और भी उस विवाहकार्य के योग्य आलेपनादि द्रव्य रखे। फिर पवित्र छेदन की कुशाओं से पवित्र को छेदन कर पवित्रसहित प्रणीता के जल को हाथ में लेकर तीन वार प्रोक्षणीपात्र में डाले। फिर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्रों के अग्रभाग को आगे करके ग्रहण करे। पश्चात् प्रोक्षणी पात्र का जल तीन वार ऊपर

---

१ प्रचलित पांच कुशा । २ कलावे से लपेट चोटी की समान आकार बनाकर रखे।

पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्ते करणं अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीजलेन यथासादित वस्तुसेचनं ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानम् । आज्यस्थाल्यमाज्यनिर्वापः ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः पर्यग्निकरणं ततः स्रुवप्रतपनं कृत्वा सम्मार्जन कुशानामग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेन अभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यस्याग्नेरवतारणं तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं

को उछाले और प्रोक्षणीपात्र को बाँये हाथ में रखकर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियों से पवित्रोंको ग्रहण कर तीन वार जलको ऊपर (आकाशकी ओर) सेचन करे। प्रणीता और प्रोक्षणी के जलसे पूर्वस्थापित सब वस्तुओं को सेचन करे तत्पश्चात् उस प्रोक्षणीपात्र को अग्नि और प्रणीता के बीचमें रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थाली में घृत डालकर अग्निपर चढ़ा देवे और पीछे एककुश बालकर प्रदक्षिण क्रमसे घृतको चारों ओर उसको घुमाता हुआ अग्निमें डाल देवे। इसके पीछे पर्यग्निकरण करे। अनंतर स्रुवे को अग्नि में तपाकर संमार्जन कुशाओं के अग्रभाग से स्रुवे के भीतर और मूलभाग से बाहर स्रुवे को शुद्धकर प्रणीता के जलसे सेचनपूर्वक फिर दूसरी वार तपावे और तब उसको अग्नि के दक्षिण की ओर रख देवे। फिर उस घृतको अग्निसे उतार लेवे तत्पश्चात् आज्यको प्रोक्षणीपात्र की नाईं पवित्रों से उछाले और देखे यदि उसमें

अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः प्रोक्षण्युत्पवनं ततः उपयमनकुशानादाय उत्तिष्ठन्प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्तास्तिस्रः समिधः क्षिपेत् ।तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति। तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ ।।ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०।

कोई मक्खी इत्यादि अपवित्र वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये। फिर प्रोक्षणीपात्र के जल को पवित्रों से उछाले तदनंतर उपयमनकुशाओं को बायें हाथ में लेकर खड़ा हो जाय और पूर्वस्थापित तीन समिधाओं को घृत में भिजोकर 'स्वाहा' शब्द के साथ मन में प्रजापति का ध्यान करके चुपचाप अग्नि में डाल देवे। फिर आसन पर बैठकर पवित्रों सहित प्रोक्षणीपात्र का जल हाथ में लेकर अग्नि के चारों तरफ सेचन करे और फिर पवित्रों को प्रणीतापात्रमें रख देवे। अनंतर दाहिनी जानुको नवाय करके कुशके द्वारा ब्रह्मा से मिलित हो जलती हुई अग्निमें स्रुवे के द्वारा घृतकी आहुति देवे। इन आहुतियोंमें आधार आहुतियों से लेकर बारह आहुतियोंतक स्रुवे में रहे शेष घृत को प्रोक्षणीपात्र में डालता जाय। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषिःअग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्-छन्दो होमे विनियोगः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः ।यजिष्ठो वह्नितमः शोशु-चानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरु-णाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण ँरराणो व्वीहि मृडी-क ँसुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । अया-श्चाग्नेइति वामदेवऋषिःअग्निर्देवता त्रिष्टुप्छंदःसर्वप्राय-श्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि

इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ।। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः ।। त्वन्नो अग्ने इति वामदेवऋषिःअग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दो होमे विनि-योगः।ॐत्वन्नो अग्नेवरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँरराणो व्वीहि मृडीक सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। अयाश्चाग्ने इति वामदेव ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः सर्व-प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च

भेषज ँस्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम्ँ श्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्त-संज्ञकाः । ततोऽन्वारब्धं विना ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । उदकोपस्पर्शनम् । अथ राष्ट्रभृतः । ॐ

सत्वमित्वमया असि। आयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजँ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यःस्वर्केभ्यश्च०।ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विम-ध्यम्ँ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥ ततोऽन्वारब्धं विना ॐप्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०।ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वा इदमग्नये स्विष्टकृते उदकोपस्पर्शनम्। अथ राष्ट्रभृतः।

---

१ समस्त आहुतियों के अन्त में त्याग वाक्य स्वयं वर को ही उच्चारण करना चाहिये। कारण कि इस होम में यजमान वर ही है। चौदह आहुतियों के पीछे ब्रह्मा के अन्वारब्ध किये विना ही आहुतियें प्रदान करनी उचित हैं। यहां जिस जिस स्थान में उदकोपस्पर्शन लिखा है वहां वहां दाहिने हाथ से प्रणीता के जल का स्पर्श करना चाहिये।

ऋताषाडृतधामाग्निर्गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गंधर्वाय० १। ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो० २। ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सꣳहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गंधर्वाय० ३ । ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो० ४ । ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चंद्रमसे गंधर्वाय० ५ । ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम

ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय० १।ॐ ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनामताभ्यः स्वाहा इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो०२। ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सꣳहिताय विश्वासाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय० ३ । ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो० ४ । ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय०५ । ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम

ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो० ६ ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गंधर्वाय० ७ । ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्भ्यो० ८ । ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गंधर्वाय० ९ । ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः स्तावाभ्यो ० १० ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंधर्वाय० ११ । ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गंधर्वस्तस्य ऋक्-

---

ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरीभ्यो ६।ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातोगन्धर्वःस न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहावाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय० ७। ॐ इषिरो विश्वब्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्भ्यो० ८। ॐ भुज्यः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय० ९ ॐ भुज्यः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्व स्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्ताव नाम ताभ्यः स्वाहा इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः स्तावाभ्यो० १०। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मामनोगन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय ११।ॐ प्रजाप्रतिविश्वकर्मा म-

सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमृक्सा-मभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो० १२। इति राष्ट्रभृतः ।।अथ जयाहोमः । ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय० । ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै० । ॐ आकूतं च स्वाहा इदमाकूताय० । ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै० ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय० । ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै०। ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे० । ॐ शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो० । ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय० । ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्ण-मासाय० । ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते० । ॐ रथंतरं च स्वाहा इदं रथन्तराय०।ॐप्रजापतिर्जयानिंद्राय वृष्णो

नो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यःस्वाहा इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्यो एष्टिभ्यो० १२। इति राष्ट्रभृतः।अथ जयाहोमः । ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय० । ॐ चितिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै० । ॐ आकूतं च स्वाहा इदमाकूताय । ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै० । ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय०। ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै० । ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे०। ॐ शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो०।ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय०। ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्णमा-साय०। ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते०। ॐ रथन्तरञ्च स्वाहा इदं रथन्तराय०।ॐप्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णो प्रायच्छदुग्रःपृतना-

---

१ राष्ट्रभृत नामक होम का बारह आहुति, जया होम की तेरह, अभ्यातान होम की अठारह, पांच और यह सब मिलाकर बासठ आहुतियां विवाह संबंधी होम कहलाता है।

प्रायच्छदुग्रः पृतनाज्येषु तस्मै विशः समनमन्तु सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा इदं प्रजापतये जयानिंद्राय० । इति जयाहोमः । उदकोपस्पर्शनम् । अथाभ्यातानहोमः । ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदमग्नये भूतानामधिपतये०।ॐ इद्रो ज्येष्ठानामधिपतिःसमावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदमिद्राय ज्येष्ठानामधिपतये० । ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ वायुरन्तरिक्षस्या-

---

ज्येषु तस्मै विशः समनमन्तु सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा। इदं प्रजापतये जयानिंद्राय० । इति जयाहोमः । उदकोपस्पर्शनम्। अथाभ्यातानहोमः ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मणस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदमग्नये भूतानामधिपतये०। ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये० । ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामरिमन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः

धिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँ स्वाहा इदंवायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये०। ॐ सूर्योदिवोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यास्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याँ स्वाहा इदं सूर्याय दिवोधिपतये० ।ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याँस्वाहा इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये० । ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याँस्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये० । ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरो-

---

स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँस्वाहा इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये०। ॐ सूर्यो दिवोधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याँस्वाहा इदं सूर्याय दिवोधिपतये० । ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याँस्वाहा इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये०।ॐबृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिःस मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याँस्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये० । ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-

धायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं मित्राय सत्यानामधिपतये० । वरुणोऽपामधिपतिः स माव-त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधाया-मस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं वरुणाय-पामधिपतये० ।ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मावत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-स्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं समुद्राय स्रोत्या-नामधिपतये० । ॐ अन्न ँ साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरो-धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० । ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं

स्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं मित्राय सत्यानामधिप-तये०। ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यसां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं वरुणायापामधिपतये०।ॐ समुद्र स्रोत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं समुद्राय स्रोत्यानामधि-पतये०।ॐ अन्न ँ साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-स्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहू-त्या ँ स्वाहा इदमन्नाय सामाज्यानामधिपतये०।ॐ सोमओषधी-नामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहाइदं सोमायौषधीना-

सोमायौषधीनामधिपतये० । ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये० ।ॐ रुद्रःपशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ त्वष्टा रूपणामधिपतिः स मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० । ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये० । ॐ

मधिपतये० । ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये०।ॐ रुद्रःपशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतये०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः। ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये०। ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यसां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये०।ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते

मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो० । ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहा इह माऽवन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो० ॥ अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम् । इत्यभ्याताननामकम् ॥ ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवताना ँ सोऽस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् । तदय ँ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेय ँ स्त्री पौत्रमघन्न रोदात्स्वाहा इदमग्नये० । ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंदमभिविबुध्यता-

---

मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिनक्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं मरुद्भ्योगणानामधिपतिभ्यो०।ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहा इह माऽवन्त्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो०।अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम्।इत्यभ्याताननामकम्।।ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवताना ँ सोऽस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात्। तदय ँ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेय ँ स्त्री पौत्रमघन्न रोदात् स्वाहा इदमग्नये०।ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंदमभिविबुध्यतामिय ँ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ स्वस्ति नो

मिय स्वाहा इदमग्नये० । ॐ स्वस्ति नो अग्ने दिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र । यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रं स्वाहा इदमग्नये० । ॐसुगं नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः । अपैतु मृत्युरमृतं म अगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा इदं वैवस्वताय० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम् । तत अन्तःपटं ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा इदं मृत्यवे० । अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम् ।ततो वधूमग्रतः कृत्वा वरो वधूश्च द्वावपि प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः। ततोवराञ्जलिपुटोपरि संलग्नवध्वञ्जलिस्थघृताभिघारितवधूभ्रातृदत्तशमीपलाशमिश्रैर्ला-

---

अग्नेदिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र।यदस्यां महिदिवि जातंप्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रं स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सुगं नु पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः। अपतु मृत्युरमृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा इदं वैवस्वताय०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्। अब यहां वधूको परदे में करके आगे लिखे 'ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा रीरिषो मोत व्वीरान्स्वाहा इदं मृत्यवे न मम। इस मंत्र से आहुति देवे। फिर प्रोक्षणीपात्र के जल को छू लेवे। अनन्तर वधू को आगे करके वर वधू दोनों जने पूर्वाभिमुख खड़े हो जांय फिर वर की अंजलीके ऊपर संलग्न वधू की अंजली में घी से अभि-

जैर्वधूकर्तृको मंत्रपाठपूर्वको होमः । तत्र मन्त्राः-अर्यमणमित्याथर्वण ऋषिरग्निर्देवताऽनुष्टुप्छन्दो लाजाहोमे विनियोगः । ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत । स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पते स्वाहा इदमर्यम्णे-देवाय० । ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा इदमग्नये० । ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव । मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियँ स्वाहा इदमग्नये० । ततो वरो वधूदक्षिणहस्तं सांगुष्ठं गृह्णाति-ॐ गृभ्णामि

घारितशर्माके पत्तोंसे मिश्रित लाजा (खीलें) वधूका भाई (छाजे के कोनोंद्वारा) भरे, तब वधू आगेलिखे 'अर्यमणमित्याथर्वण ऋषिरग्निर्देवताऽनुष्टप् छन्दो लाजाहोमे विनियोगः' इस वाक्य को बोलकर विनियोग छोड़े। फिर वधू अपने हाथमें पहले रखी हुई घृत सेचनपूर्वक शमीपलाशमिश्रित खीलों की आहुति आगे लिखे 'ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत। स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुंचतु मा पते स्वाहा इदमर्यम्णे देवाय न मम। ॐ इयं नार्यपब्रूयते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधंतां ज्ञातयो मम स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव।मम तुभ्यं च संवननंतदग्निरनुमन्यतामियँ स्वाहा इदमग्नये न मम' इन तीनों मंत्रोंसे देवे। प्रत्येक मंत्र के अन्तमें खड़ी हुई वधू के हाथसे तृतीयांश खीलों की आहुति खड़ा हुआ वर डाले त्याग वाक्य भी स्वयं वधूको ही बोलना चाहिये। तत्पश्चात् अंगुष्ठसहित वधू के दाहिने हाथ को पकड़कर वर आगे लिखे 'ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया

ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्याजरदष्टिर्यथाऽसः । भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्म्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोहमस्मि सा त्व ँ सा त्वमस्यमो अहं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ भृणुयाम शरदः शतमिति मंत्रेण । अथ वधूमग्नेरुत्तरतः प्राङ्मुखः पूर्वोपकल्पितं दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः-ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्व ँ स्थिरा भव । अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः ।। इति मंत्रेण । आरूढायामेव तस्यां वरो गाथां गायति-ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वा-

---

पत्या जरदष्टिर्यथाऽसः। भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वार्ऽदुर्गार्हपत्याय देवाः।अमोहमस्मि सा त्व ँ सा त्वमस्यमो अहं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्विन्द्यावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतम्।' इन चार मंत्रों को पाठ करे। तदनन्तर अग्नि से उत्तर में पूर्वाभिमुख खड़ा हुआ वर पहले से रखी हुई पत्थर की शिलापर अपने बांये हाथसे वधूका दाहिना पैर रखवाता हुआ 'ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्व ँ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः' यह मंत्र पढ़े। फिर वधूके शिलापर पैर रखे। रखते ही वर आगे लिखे 'ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा

जिनीवति । यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रत:।। यस्यां भूत ँ् समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः । ततोऽग्रे वधूः पश्चाद्वरः प्रणीताब्रह्मसहितमग्निप्रदक्षिणं कुरुतः।तत्र वर-पठनीयो मंत्रः-ॐ तुभ्यमग्रे पर्य्यवहन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह।।ततःपश्चा-दग्नेःस्थित्वा लाजहोमसाङ्गुष्ठहस्तग्रहणाश्मारोहणगा-थागानाग्निप्रदक्षिणाःपुनरपि ।तथैव एतानव लाजाहुतयः साङ्गुष्ठहस्तग्रहणत्रयम् गाथागानत्रयं प्रदक्षिणत्रयं संप-

---

विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रत:।। यस्यां भूत ँ्समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः' इस गाथा को गावे। गाथा गान के पश्चात् वधू आगे और वर पीछे चलते हुए प्रणीतापात्र तथा ब्रह्मा के सहित अग्निकी प्रदक्षिणा करे चलता हुआ वर आगे लिखे 'ॐ तुभ्य-मग्ने पर्यवहन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह' इस मंत्रको पढ़ता जावे। उसके पीछे अग्नि के पश्चिमकी ओर खड़े होकर लाजाहोम, अंगुष्ठसहित हस्तग्रहण, शिला पर आरोहण, गाथागान और अग्निकी प्रदक्षिणा इन सब कामों को उन उन उक्त मंत्रों से तीसरी चौथी बार भी वैसा वैसा ही करे। ऐसा करने पर लाजाकी नौ आहुति हो जाती हैं तथा सांगुष्ट हस्तग्रहण, गाथागान और प्रदक्षिणा तीन तीन

---

१ देशाचार तथा कुलाचारादि के अनुसार सात परिक्रमा भी वेद विरुद्ध नहीं है। क्योंकि वेदोक्त चार की वाधक सात नहीं किन्तु सात के अन्तर्गत चार को समझना चाहिये।।

हूते । ततोऽवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृदत्तैरंजलिस्थशूर्पकोणेन वधूर्जुहोति-ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय०। चतुर्थे भ्रमणं तूष्णीं अग्रे वरः पश्चात् वधूः । ततस्तूष्णीं परिक्रमणम् । ततो वरः उपविश्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः आज्येन प्राजापत्यं जुहुयात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा । अत्र प्रोक्षणीपात्रे हुतशेषाज्यप्रक्षेपः। तत आलेपनेनोत्तरोत्तरकृतसप्तमंडलेषु सप्तपदाक्रमणं वरः कारयेत् वक्ष्यमाणमंत्रैः । तत्र प्रथमे-एकमिषे विष्णुस्त्वां नयतु । द्वितीयै-द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वां नयतु । तृतीये-त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वां नयतु । चतुर्थे

हो जाती हैं। फिर तीसरी परिक्रमाके अनन्तर कन्या का भाई छाजके कोनेसे शेष रहे सब खीलों को बहन की अंजली में डाल देवे और वधू 'ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय०' मन्त्र पढ़कर एक ही वारमें आहुति प्रदानपूर्वक आगे वर पीछे वधू चलते हुए विना मन्त्र पढ़े चुपचाप चौथी परिक्रमा करे। फिर वर बैठ जाय और ब्रह्मा से मिलकर आगे लिखे "ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम" इति मनसा। इस मंत्र से प्राजापत्य आहुति देवे इस आहुति के देने पर स्रुवे में शेष रहे हुए घृत को प्रोक्षणीपात्र में डाल देवे। फिर वेदी के उत्तर की ओर लीपकर उत्तर उत्तर को सात मण्डल बनावे और उन सातों में एक एक बार वर वधू का चरण स्पर्श करता हुआ आगे लिखे हुए मंत्रों को उच्चारण करे (प्रथम मंडल में चरण स्पर्श करनेका मंत्र) 'एकमिषे विष्णुस्त्वां नयतु' (दूसरे मंडल का) 'द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वां नयतु' (तीसरे मंडल का मंत्र) त्रीणि

चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वां नयतु । पंचमे-पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु । षष्ठे-षड्तुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु । सप्तमे-सखे सप्तपदा भव सा माम-नुव्रता भव विष्णुस्त्वां नयतु ॥ ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुषस्य स्कंधे स्थितकुंभादाम्रपल्लवेन जलमानीय तेन च वरो वधूमेनां मूर्द्धन्यभिषिंचति-ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शांततमास्तास्ते ण्वंतु भेषजमिति । पुनस्तथैवानीत जलेनात्मानमभिषिं-चतिआपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे । यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ इति तिसृभिः ।

रायस्पोषाय विष्णुस्त्वां नयतु' (चौथे मंडल का मंत्र) 'चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वां नयतु' (पांचवें मंडल का मंत्र) 'पश्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु' (छठे मंडल का मंत्र) षड्तुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु' (सातवें मंडलका मंत्र) सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वां नयतु' फिर अग्निके पश्चिमकी तरफ बैठकर पूर्व स्थापित पुरुषके कंधेपर रखे हुए कलशमें से आमके पत्ते द्वारा जल लेकर वर वधू के शिर में आगे लिखे 'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्, इस मंत्र से सेचन करे। तत्पश्चात् उसी प्रकार और उसी कलश से आम के पत्ते द्वारा जल लेकर आगे लिखे 'ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। यो वः शिव-तमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।। तस्मा अरं

अथैनां सूर्यमुदीक्षस्वेति ॐ तच्चक्षुरित्यनेन मंत्रेण वधूः सूर्यं पश्यति । अस्तमिते सूर्ये ध्रुवमुदीक्षस्वेति पतिप्रैषानंतरं ध्रुवं पश्यति ।तत्र पठनीयो मंत्रः-ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वापश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयिमह्यं त्वाऽदाद्बृहस्पतिः। मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतमिति पृष्टा सा यदि न पश्यति तथापि पश्यामीति ब्रूयात् ।ततो वरो वधूदक्षिणांसोपरि हस्तं नीत्वा तस्या हृदयमालभेत् । मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु।मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यमिति

गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः' इस मंत्र से अपने मस्तकमें सेचन करे। तदनंतर वर के 'सूर्यमुदीक्षस्व' ऐसा कहनेपर 'ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्' इस मंत्रको पढ़ती हुई वधू सूर्यनारायणका दर्शन करे।यदि रात्रिकाल में विवाह हो तो वर के 'ध्रुवमुदीक्षस्व' ऐसा कहने पर ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयि अहं त्वाऽदा बृहस्पतिः। मया पत्या प्रजावती संजीव शरदःशतम्' इतना मंत्र पढ़ती हुई वधू ध्रुवतारेका दर्शन करे। यदि ध्रुव न दिखाई देवे तो भी वर के पूछने पर 'देखती हूँ' ऐसा ही वधू कहे। तंदनन्तर वर वधू के दाहिने कांधे पर से हाथ लेजाकर आगे लिखे 'ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम' इस मंत्र को पढ़कर वधूके हृदयको स्पर्श करे। फिर वधू की ओर देखता

मंत्रेण।अथैनामभिमंत्रयति वरः-सुमङ्गलीरियं वधूरिमाँ् समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्तं विपरेतन ॥ इति मंत्रेण। अथ वधूं बलवान् कश्चिद्ब्राह्मण उत्थाय प्रागुदग् वाऽनुगुप्तागारे लोहितानडुहचर्मणि प्रतिलोमास्तीर्णे उपवेशयेत् वरो वा-ॐ इह गावो निषीदंत्विहाश्वा इह पुरुषाः इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु ॥ इति मंत्रेण अथ स्विष्टकृद्धोमः। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृते०।स्रुवावशिष्टाज्यस्यप्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। अयं च होमो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृकः तत

हुआ वर 'ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमाँ् समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्तं विपरेतन' इस मंत्र से इसको अभिमन्त्रण करे। तत्पश्चात् कोई एक बलवान् ब्राह्मण अथवा वर वधू को उठाकर पूर्व तथा उत्तरकी ओर से आच्छादित गुप्त घर में लाल रँगके बैल का 'चर्म'[१] उल्टा बिछाकर उस पर वधू के आगे लिखा 'ॐ इह गावो निषीदत्विहाश्वा इह पुरुषाः। इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु' यह मंत्र पढ़कर बैठा देवे इसके उपरांत स्विष्टकृत् होम करना चाहिये। होम करने का मंत्र यथा-ॐअग्नये स्विष्टकृते स्वाहाइदमग्नये स्विष्टकृते न मम' यहां स्रुवेमें बचे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें गिरावे। यह आहुति भी ब्रह्मासे मिलकरही दी जाती है।फिर आचमन करके संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रके जलका प्राशन करना चाहिये। अनंतर दूसरी बार फिर आचमन करे और फिर आगे लिखे

---

१ लाल रँग के वृषभचर्म के स्थान में प्रायः लाल टूल बिछा दी जाती है।

आचम्य संस्रवप्राशनम् । अथाचम्य ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति ब्रह्मणे दक्षिणां दद्यात् । स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मणि आचार्यकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतद्रव्यं यथानामगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः।ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति पवित्रं गृहीत्वा प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतुयोऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात् । तत आस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्ये-

---

'ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्मा को दक्षिणा देवे तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर उसको ले लेवे। पश्चात् आगे लिखे 'ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मणि आचार्यकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतं द्रव्यं यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्प के द्वारा आचार्यको भी सुवर्णमयी दक्षिणा देवे और फिर ब्रह्मगांठको खोल देना चाहिये। तदुपरांत आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मंत्र द्वारा पवित्रों से प्रणीतापात्र का जल लेकर अपने शिर में मार्जन करे और फिर आगे लिखे 'ॐ दुर्भित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यश्च वयं द्विष्मः' इस मंत्र से प्रणीतापात्र को ईशानकोन में उलट देवे। अनन्तर

नाभिघार्य हस्तेनैव बर्हिर्होमः । तत्र मंत्रः-ॐ देवा गातु-विदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा । तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तेन स्रुवस्पृष्टघृतपुष्पफलैः पूर्णाहुतिः । तत्र मंत्रः-ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा । ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिका-ग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणांसे । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । एवं

आस्तरण के क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रम से बिछाये थे, उसी क्रमसे कुशाओंको उठाकर और घीमें बोरकर आगे लिखे ॐ देवा गातुविदो मातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत देव यज्ञ ँस्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मंत्र से होम कर देवे। इसके पीछे वर उठे और वधूका दाहिना हाथ स्रुवेमें स्पर्श करावे और फिर स्रुवेको पुष्प फल घृतसे परिपूर्ण कर आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धान दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्र जनयन्त देवाःस्वाहा' इस मंत्रसे पूर्णाहुति करे। फिर स्रुवे से होम की भस्म लेकर अनामिका अंगुली के अग्रभाग द्वारा त्र्यायुष करे। उसका क्रम यथा 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इस मंत्रको उच्चारण करके ललाटमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इस मंत्र को बोलकर गले में, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' पढ़कर दक्षिण बाहुमूल में और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' इस मंत्र का पाठ करके उस

वध्वा अपि कुर्यात्।तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः। तत आचारात् शणशङ्खशमीसुवर्णप्रेरितसिंदूरकरणंवर-कर्तृकम्। ततोऽन्यैरपि प्रतिष्ठितस्त्रीपुरुषैः सिंदूरकरणं ग्राम्यवचनं वरः कुर्यात् ग्राम्याः स्त्रियः। अथ वेदीतो मंडपमागत्य दुर्वाक्षतादिग्रहणं ततस्त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौ अधःशायिनौ निवृत्तमैथुनौ भवतः। प्राङ्मुखौ वधूवरौस्थितौ भवतः।इति विवाहकर्मपद्धतिः समाप्ता१३।।

भस्म को हृदय में लगाना चाहिये। फिर इसी प्रकार वधू के भी त्र्यायुष करे किंतु वधू के त्र्यायुष करते समय 'तन्नोअस्तु' के स्थान में 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करना चाहिये, यह विशेष है। अनंतर देशाचारानुसार सन, शंख, शमी, सुवर्णप्रेरित सिंदूर का लगाना वर करे। फिर अन्यान्य प्रतिष्ठित स्त्री पुरुष भी सिन्दूर को लगावें पश्चात् वर ग्राम्यवचन उच्चारण करे और ग्राम्यकी स्त्रियां भी ऐसा ही करें। फिर वेदीके निकटसे मण्डपमें आनकर दूर्वाक्षतादि (रूप आशीर्वाद) ग्रहण करे तत्पश्चात् तीन रात तक वर वधू खारी लवण इत्यादि को नहीं खाय पृथ्वी पर शयन करें, परस्पर मैथुन (संभोग) न करें और वर वधू दोनों जने ही पूर्व को मुख करके अवस्थित रहें।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंस पण्डित कन्हैयालालमिश्रकृता विवाहकर्मपद्धति हिन्दीटीका समाप्ता।।१३।।

अथ चतुर्थीकर्म ॥१४॥

ततश्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थीकर्म । तच्च गृहाभ्यन्तर एव कार्यम् । तत उद्वर्तनादि कृत्वा युगकाष्ठमुपविश्य स्नात्वा शुद्धवस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधूवरो प्राङ्मुखौ भवतः । गणपत्यादिदेवतापूजनं ततः कुशकंडिकारंभः । तत्र क्रमः-जामातृहस्तपरिमितां वेदिं कुशैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रागग्रप्रादेशमात्रत्रिरुत्तरोत्तरक्रमेणोल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वा-

---

अब चतुर्थी (चौथी) कर्म का विषय लिखा जाता है-विवाहकी चौथी रातके पिछले पहर में घर के भीतर ही चतुर्थी कर्म करना चाहिये। उस दिन रात के पिछले समयमें उठकर दो पटले बिछावे और उनपर बैठकर वर वधू उबटन के सहित स्नान करें फिर शुद्ध वस्त्र धारणपूर्वक घरमें प्रविष्ट हो पूर्वकी ओर को मुख करके बैठे। तदुपरांत गणेशादि देवताओं की पूजा करके कुशकण्डिका का आरंभ करना चाहिये। उसका क्रम यथा-वरके एक हाथ प्रमाण वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओं से शुद्धकर उन कुशाओं को ईशानकोन में फेंक देवे। फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्फ्यनामक यज्ञपात्र वा स्रुवे के द्वारा पूर्वको अग्रभागवाली प्रादेशमात्र दक्षिणसे उत्तर वृद्धि अर्थात् उत्तर उत्तर को तीन रेखा खैंचे। पश्चात् रेखा खैंचनेके क्रमानुसार दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोन में फेंक देवे।फिर उन रेखाओं

भिमुखं निदध्यात् । ततः पुष्पचंदनतांबूलवस्त्राण्यादाय ॐ अस्यां रात्रौ कर्त्तव्यचतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृकर्म्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात् । वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनम् । यथाविहितं कर्म्म कुर्विति वरेणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय ॐ अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति ब्राह्मणेनोक्ते कल्पितासने उदङ्मुखं ब्राह्मणमुपवेशयेत् । ततः पृथूदकपात्रमग्नेरुत्तरतः प्रति-

---

को जलसे सेचनपूर्वक काँसीके पात्रमें अग्निको लाकर चुपचाप अपने सामने वेदीमें स्थापन करे। अनन्तर पुष्प चन्दन ताम्बूल वस्त्र ग्रहणपूर्वक आगे लिखे 'ॐ अस्यां रात्रौ कर्तव्यचतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे' इस वाक्यसे ब्रह्माका वरण करना चाहिये तब ब्रह्मा 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा कहे। अनंतर 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा वर के कहने पर ब्राह्मण 'ॐ करवाणि' कहे। फिर अग्नि के दक्षिण की ओर शुद्ध आसन प्रदान पूर्वक उसके ऊपर पूर्व को अग्रभाग करके कुशाओं को बिछावे और ब्रह्मा को अग्निकी प्रदक्षिणा के क्रम से निकट बुलाय 'अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कहे, तब 'ॐ भवानि' ऐसा ब्रह्मा के कहने पर उस बिछाये हुए आसन पर उत्तरको मुख करके ब्रह्माको बैठा देवे

ष्ठाप्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूय कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशत्रयं उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयं समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नामतंडुलपूर्णपात्रं एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासा-

---

तत्पश्चात् एक बड़े पात्रमें जल भरकर अग्निके उत्तरकी ओर रख देवे।फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर उसको जलसे परिपूर्ण कर तथा कुशाओं से ब्रह्मा का मुख देख अग्नि के उत्तर की ओर कुशाओं पर रख देवे। इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये। अर्थात् एक मुट्ठी कुश लेकर उसके चार भाग करे। पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोन तक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नितक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोन तक और चौथा भाग अग्नि (वेदी) से प्रणीतापात्र तक बिछा देना चाहिये। फिर अग्निसे उत्तरकी तरफ पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रखे तथा पवित्र बनाने के लिये अग्रभागसहित और जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हों ऐसे दो कुशपत्र रखे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, तीन संमार्जनकुशा, वेणीरूप तीन उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब चीजों को पवित्र

दनीयानि ।ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेश-मितपवित्रकरणं ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे धृत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्तेकरणं पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनम् । ततोऽग्नि-प्रणीतयोर्मध्ये प्रणीतापात्रं निधाय आज्यस्थाल्यामाज्य-निर्वापः । ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्ट-यित्वा प्रदक्षिणक्रमेण पर्यग्निकरणं ततः स्रुवं प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवसंमार्जनं

छेदन की कुशासे आगे पूर्वपूर्व की ओर रखता जावे। फिर पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्रोंको छेदनकर प्रादेश प्रमाण (बिलस्त भरकी) पवित्र बनावे। तत्पश्चात् पवित्रों के सहित प्रणीताका जल हाथमें लेकर तीन बार प्रोक्षणीपात्रमें डाले फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण कर प्रोक्षणीके जल को तीन बार उछाले। अनन्तर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में रख दाहिने हाथ से पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणीका जल तीन बार ऊपर को सेचन करे। फिर प्रणीता के जलसे प्रोक्षणी को सेचन करना चाहिये। पश्चात् प्रोक्षणी के जलसे पूर्वस्थापन करी हुई वस्तुओं को सेचन करे। पीछे प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीता के बीच में रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर उसको वेदीकी अग्नि पर रख देवे पश्चात् एक कुश बालकर उसे घृत के चारों ओर घुमाता हुआ अग्नि में डाल देवे। इसके उपरांत स्रुवे को अग्नि में तपावे

प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् ।ततःआज्यस्याग्नेरवतारणम् ।तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम् अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः पूर्ववत् प्रोक्षण्युत्पवनम् उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् । ततः उपविश्य प्रोक्षणीजलेनाग्निं प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य पवित्रं प्रोक्षणीपात्रे धृत्वा ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुर्जुहुयात् । तत्राघारादारभ्याहुतिचतुष्टये तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थिताज्यं प्रोक्षण्यां क्षिपेत् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये । इति

और संमार्जन कुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभाग से बाहर शुद्ध करे। फिर उसके प्रणीताके जलसे सेचनपूर्वक दूसरी वार तपाकर दक्षिणकी ओर में रख देवे। फिर घृतको अग्निपर से उतार लेवे और प्रोक्षणीपात्रकी नाईं पवित्रोंसे उस घृतको उछाल कर देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पड़ी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे फिर पहले की तरह प्रोक्षणी के जल को उछाले पश्चात् उपयमन कुशाओं को बाँये हाथमें ग्रहणपूर्वक खड़ा होकर पूर्व स्थापित तीन समिधाओंको घृतसे भिजोवे और मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ स्वाहा शब्द के साथ चुपचाप अग्नि में होम कर देवे फिर आसन पर बैठकर पवित्रों सहित प्रोक्षणी का जल हाथ में ले अग्नि के चारों तरफ सेचन करे पीछे उन पवित्रों को प्रणीतामें रख देवे तदुपरांत जानुको नवाय ब्रह्मासे मिलकर होम करना चाहिये। पहली चार आहुतियों के अनंतर स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणी

मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । तत आज्याहुतिपंचतये स्थालीपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुत-शेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ततो ब्रह्मणाऽन्वारम्भं विना ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनू-स्तामस्यै नाशय स्वाहा इदमग्नये० । ॐ वायो प्राय-श्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यैः प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं वायवे० । ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ति-

---

पात्रमें डालता जाय। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। फिर घृत की पाँच आहुति आगे लिखे मंत्रों से देवे और इन आहुतियों के अनन्तर स्रुवे में शेष रहा हुआ घृत प्रोक्षणीपात्र में डालता जावे। पाँच आहुतियों के पीछे जो स्थालीपाक की आहुतियाँ दी जायँगी उनमें भी शेष रहे घृत को प्रोक्षणीपात्र में डालना चाहिये। यह हवन ब्रह्मासे विना ही मिले किया जाता है। मंत्र यथा-ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवा-ना प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै: पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदमग्नये न मम। ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ-काम उपधावामि यास्यै: प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा

रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यैः पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं सूर्याय न० । ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यैः गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं चन्द्राय० । ॐ गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चितिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं गन्धर्वाय० । चरुमभिघार्य ततः स्थालीपाकेन जुहुयात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । अग्न्याहुतिनवके हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । अयं च होमो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृकः ॥ ततः आज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा

इदं वायवे न मम। ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं सूर्याय न मम। ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यैः गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं चन्द्राय न मम। ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपडावामि यास्यैः यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं गन्धर्वाय न मम। फिर चरु (हलुए) में घृत डालकर उस स्थालीपाकसे होम करना चाहिये यह होम ब्रह्मासे मिलकर किया जाता है। 'ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०।' इति मनसा। फिर घृत और हलुए को मिलाकर स्विष्टकृत् होम करना चाहिये। 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्ट-

इदमग्नये स्विष्टकृते०। ततः आज्येन ॐ भूः स्वाहा इद-मग्नये०।ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं मग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वःस्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ्सि प्रमुमुग्ध्यस्म-त्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम। ॐ स त्वन्नो अग्ने-ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँ्रराणो व्वीहि मृडीक ँ्सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि-शस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं व्रहास्य-यानो धेहि भेषज ँ्स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं

कृते न मम।' तत्पश्चात् घृत की आहुति देवे और स्रुवे के शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्र में गिरावे। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नि-तमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ँ्सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नी-वरुणाभ्यां न मम। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ँ्रराणो व्वीहि मृडीक ँ्सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ्स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः तेभिर्नो

वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमँ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इदं प्राजापत्यम् । ततः संस्रवप्राशनम् । ततः आचम्य ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् ।स्वस्तीति प्रतिवचनम्।

अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमँ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय न मम। एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम इति मनसा। इदं प्राजापत्यम्। इसके अनंतर प्रोक्षणीपात्र के जल का प्राशन करने पर आचमन करे। फिर आगे लिखे "ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे" इस संकल्प द्वारा पूर्णपात्र का दान करके ब्रह्मा को देवे और उसको ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर ग्रहण कर लेवे। फिर

ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ततः सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। इत्यैशान्यां दिशि प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात्। ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य घृताक्तं हस्तेनैव जुहुयात्–ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा। तत आम्रपल्लवेन जलमानीय मूर्ध्नि वरो वधूमभिषिंचति–ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निंदिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सह श्रीअमुकदेवी इति

ब्रह्मगाँठ को खोल देवे। तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मंत्रसे पवित्रों के द्वारा प्रणीतापात्र का जल लेकर अपने शिर में मार्जन करे और फिर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यश्च वयं द्विष्मः' इस मंत्र को उच्चारण करके प्रणीतापात्र को ईशानकोन में उलट देना चाहिये। फिर जिस क्रमसे बिछाये थे उसी क्रम से कुशाओं को उठाकर और उनको घी में भिगोकर हाथ से ही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मंत्र को उच्चारण करके अग्निमें होम कर देवे। अनन्तर आम के पत्ते द्वारा जल लेकर वर आगे लिखे "ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सह श्रीअमुकदेवी[1]" इस मन्त्र से वधू के

१ श्रीअमुक देवी के स्थान में स्त्री का नाम उच्चारण करना चाहिये।

मंत्रेण । ततो वधूं स्थालीपाकं प्राशयति वरः-ॐ प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि । अस्थिमिस्तेऽस्थीनि संदधामि । मांसैस्ते मांसानि संदधामि ।ॐ त्वचा ते त्वचं संदधामि। इति मंत्रचतुष्टयेन प्रतिमंत्रांतेऽन्नं प्राशयेत् । ततो वधू-हृदयं स्पृष्ट्वा वरः पठेत्- ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरदः शतमिति । अथ कङ्कणमोक्षणादीनि युतग्रन्थिविमोकादीनि आचारप्राप्तानि । कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन । मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण ।। तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तस्पृष्टस्रुवेण घृतफलपुष्पपूर्णेन पूर्णाहुतिं

शिर में अभिषेक करे। फिर वर वधू को आगे लिखे 'ॐ प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि। ॐ अस्थिमिस्तेऽस्थीनि संदधामि। ॐ मांसैस्ते मांसानि संदधामि। ॐ त्वचा ते त्वचँ संद-धामि।' इन मन्त्रों से स्थाली पाक (हलुए) का प्राशन करावे। अनन्तर वर वधू के हृदय को स्पर्श कर आगे लिखे 'ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतम्' इस मन्त्र को उच्चारण करे इसके उपरान्त आगे लिखे 'कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन। मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण।।' इस मन्त्रसे कंकणमोचन (कंगना खोलना) और ग्रंथिमोचन (पटके की गाँठ खोलना) पश्चात् वर खड़ा होकर स्रुवे को घृत फल पुष्प से परिपूर्ण कर और उस स्रुवे में वधू का हाथ लगवाय आगे लिखे 'ॐ

कुर्यात् । ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्-कवि ँ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इति मन्त्रेण पूर्णाहुतिः । ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ।ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदये । एवं वध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्यात्।तत्रतन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः। तत आचार्याय दक्षिणां दद्यात् होत्रे च दक्षिणां दद्यात् भूयसीं दद्यात् ।। इति चतुर्थीकर्म समाप्तम् ।।१४।।

इति श्रीमहामत्तकमहासामंताधिपतिश्रीरामदत्त-
विरचिता दशकर्मपद्धतिः समाप्ता ।।

मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ँसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा' इस मन्त्र से वर पूर्णाहुति देवे। फिर स्रुवे से होम की भस्म लेकर अनामिका अंगुली द्वारा त्र्यायुष करे-ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह कहकर माथे में, ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह मन्त्र उच्चारण करके गलेमें 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' कहकर दक्षिण बाहुमूलमें और 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' इस मंत्रको उच्चारण करके वह भस्म हृदय में लगानी चाहिये। फिर इस प्रकार वधू के भी त्र्यायुष करे किन्तु वधू के त्र्यायुष करते समय 'तन्नो अस्तु' के स्थान में 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे। इसके उपरांत आचार्य को दक्षिणा देवे। होता को दक्षिणा देवे और भूयसी दक्षिणा (भूरि दक्षिणा) देनी चाहिये।।

दोहा- श्रीव्रजचन्द मुकुन्दको, ध्यान हृदयमहँ धार।
वरनी पद्धति कर्मकी, निज मतिके अनुसार ।।
भूल चूक जो दाससे, रही होय या मांहि ।
क्षमा करैं लखि विज्ञजन, रोष करैं मन नाहिं ।
मैं अजान जानत नहीं, गद्य पद्यकी सार
सेवक अपनो जानिकै, लीजिय आप सुधार ।।
वसत रामगंगा निकट, नगर मुरादाबाद ।
भजन करत हरिको तहां, बुध ज्वालापरसाद ।।
तिनको मैं लघुभ्रात हूँ, नाम कन्हैयालाल ।
प्रति पदको टीका लिख्यौ, भाषा मंजु रसाल ।
जगत् विदित महिमा अमित,अवनि अखण्ड प्रताप।
खेमराज छाप्यो मुदित, ग्रंथ बम्बई छाप ।।

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासी-भुवनविख्यात
स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनुपण्डित–ज्वालाप्रसादमिश्र-
कनिष्ठसोदरपण्डित–कन्हैयालालमिश्रविरचितो
दशकर्मपद्धतिहिन्दीअनुवादः समाप्तः ।

समाप्तोयं ग्रन्थः ।।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS